

बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य-चेतना

राजस्थान विश्वविद्यालय की एम ए (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत

बनवारी रान सहू

भूमिका लेखक—

डॉ० कन्हैया लाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना
लेखक बनवारी लाल सहू

प्रकाशक—

कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
₹ १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक

राजश्री प्रिंटर्स
के ई एम रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLĒ MEN SWATANTRYOTTAR
HINDĪ KĀVYĀ'CHĒTNA
BANWĀRĪ LAL SAHU

शुद्धेय गुरुवर
डॉ० कन्हैया लाल शर्मा को
सादर, सविनय
समर्पित ।

भूमिका

स्वतंत्रता प्राप्ति, जो परतंत्रता काल में साध्य होती है स्वतंत्रता काल में साधन बन जाती है। दीना बालो की चिन्तन-धारा व भाव धारा में ऐसा अंतर दिखाई देता है, जो अन्तःचल और उदयाचल से प्राप्त प्रकाश में होता है। प्रथम की लालिमा में राष्ट्र के अकार की आशका निहित रहती है और द्वितीय की अरुणाभा मालोक्रमय भविष्य का सकेन लिए रहती है। प्रबुद्ध द्रष्टा अपने काल से सुदूर तक भाककर देख लेते हैं और अपना पय मुनिश्चित कर लेते हैं। महात्मा गांधी ने जो मार्ग अपनाया था उस पर चलकर हम १५ अगस्त १९४७ को गतव्य तक पहुँचे और स्वतंत्र हुए।

परतंत्रता काल में शासक-त्रय का प्रभुत्व देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक उन्नति को अवरुद्ध कर देता है। परतंत्र देश के व्यक्ति धीरे धीरे निराशा और हीनता का अनुभव करने लगते हैं। उनका आत्म सम्मान लुप्तप्राय हो जाता है और वे मृत का जीवन जीने लगते हैं। उनका हौसला पस्त हो जाता है और वे स्व रूप को पहचानने में अक्षम हो जाते हैं। सन १९४७ के पूर्व के भारतीय साहित्य में निराशा, व्यथा, हीनता आदि की अभिव्यक्ति अनेक वादगत कथियों में मिलती है और वही इसकी प्रतिक्रिया भी देखने में आती है। पलायन अथवा अदृश्य शक्ति पर आस्था भी ऐसे काल के साहित्य में मिलती है। संक्षेप में, ऐसे काल का साहित्य अस्वस्थ मस्तिष्क की उपज होता है।

१५ अगस्त, ४७ देश की राजनैतिक स्वतंत्रता का दिन था, पर उससे बाद देश में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई हैं, जिन्होंने राष्ट्र मन को प्रभावित किया है। देश का विभाजन और रक्तपात, गांधीजी की हत्या, संविधान की स्वीकृति, एक एक करके चार पंचवर्षीय योजनाओं का क्रिया बमन ऋण रूप में विदेशी धन का विपुल मात्रा में आगमन, देशी राज्यों का विलीनीकरण और चीन और पाकिस्तान का आक्रमण, भाषावार प्रांतों का निर्माण, प्रांताधिकारों के शीकरण, अवमूल्यन, वीको का राष्ट्रीयकरण, चुनाव तथा राजनैतिक अस्थिरता बांधों और नहरों का निर्माण आदि ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं जो देशवासियों को अप्रभावित नहीं रख सकी हैं। संचार व्यवस्था के विकास से देश के विभिन्न भागों की दूरी कम हुई है और उस विशाल देश के एक क्षेत्र में घटित घटना इसके दूसरे छोर को प्रभावित करने लगी है। अतः साहित्य सजना चाहे बगल

म हो अथवा राजस्थान में, गुजरात में हो अथवा पंजाब में, देशव्यापी समान धर्मिता अपनाये हुए है। अतः बीकानेरी 'काव्य' का अध्ययन वित्तन की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर समग्र हिन्दी काव्य के अंश की समझने का प्रयास है। अंश से अंशों की और खड से पूरा की बहपना समझ है और यह सोपान भी है।

राजनैतिक स्वतंत्रता के पश्चात् परमुखापेक्षी पंचवर्षीय योजनाओं के कारण देश को शृंगी होकर जीना पड रहा है—प्राथमिक गुनामी में जीना पड रहा है। परतंत्रता स्वरूप बलकर आज भी देश में बनी हुई है। हा, स्वामित्व इग्लैंड से बल कर अमेरिका और रुम पहुच गया है। देश का मस्ति क 'बोहरे,' के सकेत पर अमेरिका को बेचा या भेजा जा रहा है या उसे लाल टोपी' पहनायी जा रही है ! राजनैतिक दोडो धूप ने देग की पाटियों के ध्रुवीकरण के साथ साथ जनता को भी दो खेमा में से किमी एक में घकेल दिया है। इससे हीनता की भावना और अधानुकरण की बल मिला है तथा चितन के नाम पर अनुकरण उभरा है। हिन्दी साहित्य को भी अनुवाद और अनुकरण के रूप में बहुत सी सामग्री इस काल में प्राप्त हुई है।

देश का प्राथमिक विकास योजनाबद्ध हो रहा है पर आलोच्य काल में जिस विपुल साहित्य की सजना हुई है वह आबद्ध होकर भी अनाबद्ध है। सन् १९४३ से आरम्भ प्रयोगवाद और १९५३ से आरम्भ नयी कविता' के धेरो में दधकर चलनेवालो से बाहर भी पर्याप्त काव्य लिखा जा रहा है।

बीकानेर जिले में स्वतंत्रता में पूव तत्कालीन नरेशों की सकीण स्वाय प्रेरित विचारधारा के कारण शिक्षा का प्रचार अत्यंत मद गति से हुआ। उ-ह जो अमर्यादित अधिकार परम्परा से प्राप्त थे उनके अतक से राजनैतिक चेतना राज के नीचे सुलगती धाग क समान धुआ ही दे पा रही थी, प्रकाश नहीं। स्वतंत्र चेतना अनुभूतिशील मनुष्यों की अभिव्यक्त वाणी-स्वातंत्र्य के अभाव में कुठित होकर रह जाती थी। एक खास डरों की चारणी अभिव्यक्ति की धारा तब भी प्रवाहित थी। स्वतंत्रता के एक अंशों ने वाणी स्वातंत्र्य के स्फुर्निग को प्रज्वलित कर दिया और वाग्धार अनेक ज्योतों में बह निकली।

कालक्रम से दृष्टिपात करने पर हिन्दी की सहीबोली काव्यरचना की सक्षिप्त उदरणी बीकानेर के साहित्य में मिलती है। गत दो दशकों में देश प्रेम उपदेशात्मकता अथि-कूपक वग के प्रति सहानुभूति, प्रयोगों का आधिक्य, बौद्धि कता का आग्रह आदि कालक्रम से आते से दिगाई देते हैं और फिर सब अपनी अपनी टफली और अपनी अपनी राग अलापने लगते हैं पर उदयकालीन स्वर मद

है। बीकानेर में साहित्य क्षितिज पर अब नयी पीढी छापी हुई है, जो 'नयी कविता' के स्वरो में स्वानुभूतियाँ को व्यक्त करती है। अपने मुक्त क्षणों का, जो यथाय से प्रेरित होते हैं वह व्यक्त करती है। उसके द्वारा आस्था मनास्था की अभिव्यक्ति हुई है और उसकी व्यक्तिकता तथा यह उसके काव्य में स्थान बना सके हैं। उसकी कविता बौद्धिकता से ग्रस्त है। इन्हीं कुछ स्थापनाओं का प्रस्तुत प्रबंध में लेखक ने चौथे अध्याय में व्यक्त किया है। इसमें पूर्व दूसरे अध्याय में उसने बीकानेर जिले के कवियों की काव्य रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया है। 'अहिंसे चेतना' शीर्षक से कलापक्ष के विचार को सर्वांगीण बनाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अंतिम अध्याय सध्वाकारों है पर महत्वपूर्ण है। लेखक ने कुछ शब्दों तथा भावों को चुनकर उनके द्वारा यह दिखाया है कि प्रत्येक क्षेत्र के साहित्य की निजी शब्द संपत्ति व भाव संपत्ति होती है, जो अपना राष्ट्रीय महत्त्व रखती है।

'बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना, लघु शोध प्रबंध श्री बनवारी लाल सहू के जो मेरे निधु हैं मनोयोग से किये गये परिश्रम का सफल परिणाम है। विद्यार्थी सामग्री को संकलित करने से लेकर उसका विश्लेषण, वर्गीकरण प्रस्तुतीकरण आदि की जटिलताओं में से निकालते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध का जो सुव्यवस्थित रूपाकार दिया है उसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है।

सहू का यह प्रथम प्रयास बीकानेर के शोध छात्रों को विश्वास और प्रेरणा दे रहा है और मेरा विश्वास है कि भविष्य में भी देता रहेगा। मैं इसका स्वागत करता हूँ।

—
 डॉ० क हैयालाल शर्मा
 अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
 दूधर महा विद्यालय, बीकानेर

दो शब्द

पिछले दो दशका में हिंदी साहित्य का पर्याप्त विकास और विस्तार हुआ और इसमें उत्तरी भारत ने पर्याप्त योग दिया है। स्वतंत्रता के पश्चात् तो सम्पूर्ण उत्तरी भारत में साहित्य-चेतना अपने अदभ्य उत्साह से अग्रसर हो रही है। इस चेतना में राजस्थान ने भी योग दिया है। हिंदी के क्षेत्र में प्रगत आने-वाले यह क्षेत्र देश के अग्र भागों के साहित्यकारों के साथ कदम में कदम मिला कर बढ़ रहा है, पर भारतीय स्तर पर मूल्यांकन की दृष्टि से इसकी उपेक्षा हुई है। कारण यह रहा है कि हिंदी साहित्य के इस व्यापक प्रचार प्रसार के माध्यम आलोचकों का ध्यान इस क्षेत्र की ओर नहीं गया, क्योंकि इस से पूर्व यहाँ पर साहित्य-मजदूरी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ था और न ही तत्कालीन इतिहास लेखकों ने इस पर ध्यान दिया था।

प्रस्तुत लघुग्रंथ प्रबंध किसी क्षेत्र या भावना से प्रेरित होकर नहीं लिखा गया है। इसका उद्देश्य तो हिंदी साहित्य के इस व्यापक विस्तार के विभिन्न क्षेत्रों को प्रस्तुत करने की दिशा में एक प्रयास-मात्र है। 'प्रे' के अनुसार कभी कभी "सुन्दर सुन्दर बुसुम भी वन में अनाचोचित रह जाते हैं और उनकी सुरभि मरुभूमि में खो जाती है।" यह प्रयास उस कवि की आशंका से प्रेरणा लेकर किया गया है। क्षेत्रीय आधार पर यदि इसी प्रकार काय हुआ तो देश में व्याप्त साहित्यिक चेतना का सही मूल्यांकन होने में सहायता मिल सकेगी। इस प्रकार यह अपने ढंग का पहला प्रयत्न है और मौलिक भी है। मौलिक इस अर्थ में कि बीकानेर जिले के कवियों पर अब तक छुट पुट प्रकार से यदाकदा ही पत्र पत्रिकाओं में लिखा गया है। प्रकाशित और अप्रकाशित काव्य के विस्तार रचना को एकत्र करने और तत्पश्चात् उनका विश्लेषण सश्लेषण करने का यह प्रथम प्रयास है।

प्रथम अध्याय बीकानेर जिले और उसके काव्य परिवेश का है, जिसमें जिले की उन सभी परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है जो यहाँ की काव्य चेतना से प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध रखती है। यह क्षेत्र सरस्वती के लुप्त हो जाने का क्षेत्र माना जाता है, जैसा कि यहाँ के विशाल साहित्य भण्डारों से स्पष्ट होता है। अतः आलोचकाल की काव्य चेतना को समझने के लिए एक बिहगम दृष्टि प्राचीन सस्कृत और डिगल साहित्य पर भी डाली गई है और इस क्षेत्र

राजाशा ने साहित्य-रचनाशा म जो योग दिया है, उसकी भी चर्चा हुई है। द्वितीय अध्याय में इस जिले के कवियों की प्रनाशित और अग्रकाशित रचनाओं का संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय दिया गया है और प्रयास यह किया गया है कि कोई महत्त्वपूर्ण रचना अनालोचित न रह जाये। वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से इस अध्याय में आलोच्यकाल के पूर्व के हिन्दी कवियों पर तनिक विस्तार से विचार इसलिए किया है कि उ ही कवियों की रचनाएँ हमारी गवेषणा के आधार शेष अध्यायों में बनी है। तृतीय अध्याय काव्य-रूप विषयक है। इस क्षेत्र में केवल गीत और मुक्तक आलोच्यकाल में मिलते हैं। विविध गीत रूपों और मुक्तक प्रकारों के आधार पर यहां के काव्य का रूप निर्धारण किया गया है। चतुर्थ अध्याय का शीपक जिले के काव्य की अतश्चेतना है। इस अध्याय में इस क्षेत्र में जो बहुमुगरी विषय वस्तु सामने आयी उसका गहराई से अध्ययन किया गया है। पाचवा अध्याय बहिर्चेतना का है जिसमें काव्य के बाह्य पक्ष, भाषा, छंद, अक्षर और आदि पर विचार हुआ है, जिसमें यह ध्यान रखा गया है कि इन क्षेत्रों के काव्य में लघु कृत शीपकों के अतगत विचारित विषयों में क्या मौलिकताएँ और विशिष्टताएँ हैं। वैशिष्ट्य और योगदान इस लघुसोष प्रबंध का अंतिम और महत्त्वपूर्ण अध्याय है जिसमें मैंने यह दिखाया है कि भाव पक्ष और कला की दृष्टि से यहाँ के काव्य ने शेष हिंदी काव्य को क्या दिया है और निष्कर्ष रूप में यह बताया है कि यहां का काव्य हिंदी काव्य की सही प्रतिलिपि नहीं है अपितु उसमें मौलिक क्षमताएँ हैं।

विषय की क्षेत्रीयता मेरे लिए अग्रवश्यक ही समस्या बनकर आयी है। साधन और समय के अभाव ने इस अध्ययन को जटिल बनाया है। पत्र-व्यवहार मित्रवग और अध्यापक मेरे इस अध्ययन में सहायक बने हैं। लेखक का प्रयास सदा यह रहा है कि इस काल की कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री छूट न जाये, फिर भी किसी कवि विशेष के अग्रहणों या मेरी असमर्थता से कुछ सूँ है तो इसमें लेखक की विवशता ही समझनी चाहिए।

प्रस्तुत लघु साधन प्रबंध डा० क. हैयासाल जी शर्मा के निर्देशन में पूरा हुआ है। गुफर के पाण्डित्यपूर्ण निर्देशन एवं असीम स्नेह के लिए मैं उनका अत्यंत ही अनुशुकीत हूँ। आदरणीय श्री हरिराम जी तिवारी का मैं अत्यंत आभारी हूँ जिनका 'गुमानोर्वा' ही इस प्रबंध में फलित हुआ है। महाविद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती डा० स्वणलता जी अग्रवाल ने विभिन्न सस्थाशा से मेरा सम्पर्क स्थापित कराने में सहायता की है इसके लिए मैं उनका प्रति कृतज्ञ हूँ। विद्या-

वाचस्पति श्री विलापर जी शास्त्री एवं स्वर्गीय श्री नाथूराम जी सहायत ने बीकानेर के प्राचीन साहित्य के संवन्ध में मेरी तत्सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान किया है। इसके लिए मैं इन विद्वानों का अत्यन्त आभारी हूँ। हजरत महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ० मदन केवलिया जी० ब्रजनाथयण पुरोहित, श्री राम देव आचार्य वातायन क सम्पादक श्री हरीश भादानी सादर स्कूल के अध्यापक प्राध्याय चन्द्रमौलि जी आदि सभी गुरुजनों एवं विद्वानों के प्रति मैं अपना हादिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर इस प्रबंध में सम्बन्धित मेरी कठिनाइयों का निवारण किया है। मैं उन सभी कविता का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपनी अप्रवाशित रचनाओं का उपयोग करने दिया है। सेनानी, लोचन वातायन, मन्ताहात आदि पत्र पत्रिकाओं के सम्पादकों का आभार मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ, जो मुझे आवश्यकतानुसार पत्र एवं पत्रिकाएँ देते रहे हैं। मरे द्र बुमार, कृष्णचंद्र शर्मा, 'सरल' क हेमा शोभा, रामस्वरूप विश्वाजी कृष्ण लाल भाराणिया आदि मित्र भी प्रबन्ध के पात्र हैं, जिन्होंने इस प्रबंध में सम्बन्धित सामग्री एकत्र करने में मेरी सहायता की है। डॉ० पूनम देवीया एव 'सरल' में यदि इससे मुद्रण की व्यवस्था नहीं होती तो सायद मैं इसे आप तक पहुँचाने में असमर्थ ही रहता, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

भादरणीय डॉ० कहेयाल जी शर्मा ने अपने व्यस्त समय में इस प्रबंध की भूमिका लिख कर मुझे सहृदय दिवाया है। श्रद्धय गुणवर के प्रति मैं श्रद्धांत है।

अंत में, मैं यही निवेदन करना चाहूँगा कि यह प्रबंध जहाँ भी पाया है उस ही नीचे दी गयी सरकारी पुस्तक संस्थानों में समक्ष प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय का अनुभव कर रहा हूँ।

बनवारी लाल राह

रचना प्रकाशक १९७०

वीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर
हिन्दी काव्य-चेतना

बनवारी लाल सहू

विषयानुक्रमिका

बीकानेर जिले का काव्य परिवेश

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप बीकानेर की स्थापना, बीकानेर जिले का विस्तार और सीमा, बीकानेर जिले का इतिहास बीकानेर जिले की भौगोलिक विशेषताएँ, बीकानेर की परिस्थितियाँ, राव बीका से लेकर दादू लसिंह के पूर्व तक का इतिहास पर एक दृष्टि, राष्ट्रीय प्रान्तीय और बीकानेर, दादू लसिंह से लेकर भारत का पुनगठन तक बीकानेर की राजनैतिक स्थिति, बीकानेर राज्य में शरणार्थी और दादू लसिंह, दादू लसिंह और एकीकरण १९५७ से आज तक की राजनैतिक स्थिति, सामाजिक परिस्थिति धार्मिक परिस्थिति बीकानेर जिले की साहित्यिक परिस्थिति ।

बीकानेर जिले में हिन्दी काव्य सजना

स्वातन्त्र्य पूर्व काव्य स्वातन्त्र्य के बाद काव्य

बीकानेर जिले के काव्य रूप

८६

काव्य के तत्व, काव्य का वर्गीकरण बीकानेर के काव्य के रूप, गीति काव्य, मुक्तक काव्य

बीकानेर काव्य की अन्तर्दृष्टि (कथ्य)

१०१

बीकानेर के काव्य में प्रकृति चित्रण, नारी एवं प्रेम का चित्रण, राष्ट्रीय भावना का चित्रण शोषक शोषितों के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि रुढ़िया

एव परम्पराओं का खंडा तथा सामाजिक क्रान्ति की भावना, मम-
सामयिक वस्तुओं का चित्रण, अति यथाय और बोद्धिबद्धता का चित्रण,
वैयक्तिकता एव ग्रह की भावना, अनास्था और आस्था का स्वर

बोकानेर काव्य की वहिर्चेतना

१२७

रस, अलंकार, उपमानों की नवीनता, प्रतीक विम्व शैली भाषा
शब्द समूह मुहावरे, शब्द शक्तियाँ, काव्य गुण, छंद ।

हिन्दी साहित्य में बोकानेर काव्य का वैशिष्ट्य और योगदान

१५३

भाव-वैशिष्ट्य और योगदान, शिल्प वैशिष्ट्य और योगदान

पुस्तकों की सूची

१५८

बीकानेर जिले का काव्य परिवेश

भारतवप सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन काल में इस देश में बहुत सी जातियाँ का उत्थान और पतन हुआ, किंतु इतना-कुछ होने पर भी इसकी सभ्यता एवं संस्कृति को आंच नहीं आयी वह ज्यों की त्यों बनी रही। अपनी समय की विशेषता के फल-स्वरूप इसमें अनेक जातियों का सम्मेलन हुआ है। बाहर से आने वाली जातियों ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से बहुत कुछ सीखा है।

बीकानेर का प्रागतिहासिक स्वरूप

भारतवप कई प्रांतों में विभक्त है जिसमें एक राजस्थान है। यही राजस्थान पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। इस प्रदेश को हम भारतवप की धीरे भूमि कह सकते हैं। बीकानेर इसी प्रदेश का एक भाग है, जो कि राजस्थान का उत्तर पश्चिम में है। बीकानेर जिले में दूर-दूर मँकड़ा मीलों तक बालू के टीले ही टीले दृष्टिगत होते हैं। पौराणिक मतों के अनुसार बीकानेर का प्राचीन नाम जामल देश था।¹ जामल देश से अभिप्राय खेजडा, कौर और भाक के कुछ प्रदेश का भी है।² दूसरा कारण यह भी है कि बीकानेर ने राजा जामल देश के स्वामी होने का कारण आज भी जगलधर बादशाह कहलाते हैं। इसकी पुष्टि बीकानेर राज्य-विह के लेख से होती है।³ परन्तु भूगोल शास्त्रियों के अनुसार यह प्रदेश प्रारंभ में रेगिस्तान नहीं था, अपितु जूरेसिक, कीटेशियम और इसीसीन के युगों में बीकानेर और जैसलमेर का भाग समुद्र से घिरा हुआ था।

१— गौरीशंकर हीराचंद्र भोभा — बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग)

पृ० १

२— गौरीशंकर आचार्य बीकानेर परिचय

पृ० ५

३— गौरीशंकर हीराचंद्र भोभा — बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग)

पृ० ३

जो समुद्र टथिस के नाम से था ।^१ टेरंगरी युग में इस स्थिति में परिवर्तन हुआ और वह भाग पृथ्वी की अतिरिक्त शक्तियाँ के परिवर्तन के कारण ऊपर उठने लगा । इस युग में अमेरिका का बहुत सा भाग ग्लेशियरों से ढका हुआ था । धीरे-धीरे इस भू परिवर्तन से भूमि ऊपर उठती गई और समुद्र समाप्त हो गया तथा रेतीला भाग निकल गया । इस प्रकार इस प्रदेश का जागल नाम वाद का प्रतीत होता है । इसने अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण में इसने मरुस्थल में परिणत होने की एक मुन्दर गाथा मिलती है ।^२

इन सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि यह भाग पहले समुद्र से ढका हुआ था और धीरे-धीरे पृथ्वी की अतिरिक्त शक्तियों के परिवर्तन से समुद्र में विलीन हो गया तथा इस भूभाग की सृष्टि हुई । यही कारण है कि इस प्रदेश में आज भी शूल, मीप कोड़ी, गोल पत्थर (Round-Stone) आदि मिलते हैं जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि इन विनाश रेतीले भू-भाग पर अभी समुद्र लहराता था ।

बीकानेर के इस रेतीले भाग पर आज कोई भी नदी नहीं बह रही है । लेकिन पुरातत्व की खोज के आधार पर यह कहा जाता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर पहले सरस्वती नदी बहा करती थी जो आज त्रिनकुन सूख गई है ।^३ इसका अतिरिक्त सिंधु नदी की सहायक नदी घग्गर थी, जो पठन हाकड के नाम से प्रसिद्ध

१— गौरीशंकर आचार्य

— बीकानेर परिचय

पृ० ५

२— वाल्मीकि रामायण के युद्ध कांड के बाइसवें सर्ग में लिखा है कि त्रिम समय रामचंद्र जी ने लका पर चढ़ाई की और उन समय जब समुद्र ने रामचंद्र जी को मांग देने से इंकार कर दिया तो रामचंद्र ने समुद्र से मांग के लिए प्रार्थना की लेकिन उस प्रार्थना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा । आखिर रामचंद्र ने क्रोधित होकर अपना तीर सम्भाला । इस पर समुद्र स्वयं रामचंद्र जी के सामने उपस्थित हुआ और प्राण रक्षा की भीख मांगी । समुद्र ने रामचंद्र के इस बाण को उत्तर में स्थित द्रुमकल्प भाग पर चलवाकर अपने प्राण बचाए । ऐसा कहा जाता है कि उसी दिन से वहाँ से जल सूख गया और इस मरुस्थल की उत्पत्ति हुई ।

३— गौरी शंकर आचार्य

— बीकानेर एक परिचय

पृष्ठ ७

थी, इसके उत्तरी भाग में बढ़ती हुई सिन्धु में जाकर मिलती थी।^१ भूमितल के ऊपर उठ जाने से आज वह बंद हो गई है, किंतु उसके सूखे मार्ग का तो पता अब भी चलता है। वर्षा ऋतु में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़ सूरतगढ़ होता हुआ, अनूपगढ़ पहुँच जाता है जिसे आजकल 'नाली' कहा जाता है।

बीकानेर की स्थापना

जहाँ सोने की चिड़िया भारतवर्ष में विदेशी आक्रमणकारियों को घाता-ब्दियों से ललचाया है वहाँ उसका यह भूभाग राजस्थान अपने कुशल और प्रतापी शासकों की वीरता और भौगोलिक कारणों से जनित दुर्ममता के फलस्वरूप अपनी स्वाधीनता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रहा है। इसके भी एक खड बीकानेर जिसे ने अपनी रेतिली प्रकृति और जनसंख्या की स्वल्पता के कारण आक्रमकों को अपनी ओर तनिक भी आकर्षित नहीं किया है। राठीडों का बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह राज्य बहुत से भागों में विभक्त था। इनके पूर्व यहाँ बहुत सी जातियाँ ने राज्य किया।^२ इन जातियों का काम किम किस प्रकार से रहा इसका बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। हा, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि राव बीका से पहले इस क्षेत्र पर जाटों का अधिकार था।^३

बीकानेर के राजा जोधपुर के राव जोधा के पुत्र बीका के ही वंशधर हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन राव जोधा अपना दरबार लगाये बैठे थे और बीकाजी दरबार में कुछ देर से आये और आते ही अपने चाचा (काँयल) के कान में धीरे-धीरे कुछ कहने लगे। इस पर राव जोधाजी ने मजाक करते हुए कहा कि आज चाचा भतीजे में क्या कानापूसी (Whisper) हो रही है क्या कोई नये राज्य की स्थापना करने की योजना है ? कहते हैं कि इस ताने को सुन कर उसी

१— गीरीशकर आचार्य बीकानेर एक परिचय

२— गीरीशकर हीराचंद शोभा — बीकानेर का इतिहास (पहला भाग)

३— बनल टाड — राजस्थान का इतिहास

१२ अप्रैल सन् १८८८ (स० १५४५) का अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया।^१
 बीकानेर की स्थापना क सम्बन्ध में यह दोहा भी प्रसिद्ध है —

पनर मैं पैतालवे मुद वैशाल्य मुमेर
 थावर बीज धरपियो, बीवे बीकानेर^२

Bisakh, the month, the day, the second, fifteen four five
 the year And sixth day of the week when Bika founded
 Bikaner^३

बीकानेर जिले का विस्तार और सीमा

वर्तमान बीकानेर जिला २७ १५ से २६ १५ अक्षांश उत्तर में तथा
 ७२ २० से ७४ ४० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल १०,१५०
 बर्ग मील है। प्रशासन की सुविधानुसार यह जिला दो उप खंडों में विभाजित है।
 बीकानेर तथा लूनकरनगर उत्तरी खंड में तथा नोखा और कोलायत दक्षिणी उप-
 खंड में है। यही इस जिले की चार महसीलों हैं। इन जिले में १२३ ग्राम पंचायतें
 तथा २६ पाय पंचायतें, चार पंचायत समितियाँ और ६६० ग्राम हैं। इसके उत्तर
 पूर्व में गगानगर और चूरू, पूर्व में चूरू दक्षिण पूर्व में नागौर और चूरू, दक्षिण
 में जोधपुर और नागौर दक्षिण पश्चिम में जैमलमेर और जोधपुर तथा पश्चिम

१— बीकानेर की राजधानी के निर्माण के लिए उमने जो म्यान पसद किया
 था उसका अधिकारी एक जाट था। उस जाट से बीका ने उस स्थान की माग
 की और कहा — राजधानी बनाने के लिए यदि आप यह स्थान हम दे देंगे तो
 अपने और आपके नाम को जोड़कर मैं इस राज्य का नाम रखूंगा। उस जाट ने
 हथ पूरक बीका की इस माग को स्वीकार कर लिया। इसके बाद राजधानी का
 निर्माण हुआ और मरुभूमि में बीका ने जिस राज्य की प्रतिष्ठा की, उसका नाम
 बीकानेर रखा गया। उस जाट का नाम मरा था।

कनक टांड — राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१५

२— गीरीशकर हीराच = आम्ना — बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग)

पृष्ठ ६३

३— Captain P W Powlett — Gazetteer of the Bikaner State P 3

म पाकिस्तान है। और उत्तर पश्चिम म गगानगर जिला है।

बीकानेर जिले का इतिहास

बीकानेर जिले का इतिहास राव बीका से प्रारंभ होता है। १२ अप्रैल, १४८८ से लेकर २० मार्च १९४६ तक बीकानेर एक राज्य के रूप में रहा है, जिसमें वर्तमान बीकानेर, चुरू और गगानगर जिला या क्षेत्र जाना जा सकता है।^१ जबकि बीकानेर, चुरू और गगानगर जिले का सम्मिलित रूप ही सन् १९४६ से पहले बीकानेर राज्य के नाम में जाना जाता था। लगभग ५०० वर्षों तक बीकानेर राज्य पर एक वंश (राठौड) का अधिकार रहा है। सन् १९४६ को बीकानेर राज्य का विलीनीकरण हो गया और राजस्थान का निर्माण हुआ। उस समय बीकानेर राज्य तीन जिलों^२ में बांट दिया गया।

बीकानेर जिले की भौगोलिक विशेषताएं

बीकानेर जिले का अधिकांश भाग रेतीला है जिसमें २७ से १०० फीट की ऊंचाई तक रेतीले टीले पाए जाते हैं। बीकानेर में कुछ बड़ी भूमि है जो 'मगरा' कहलाती है। समुद्र तल से बीकानेर जिले की ऊंचाई लगभग ७०० से १२०० फीट है। बीकानेर स्वयं घामपास के घातल से ७३६ फीट ऊंचे चट्टान पर बसा हुआ है। जिले में कोई स्थायी नदी नहीं है। नाले हैं जो वर्षा ऋतु में पानी में भर जाते हैं।

यहां की जलवायु शुष्क एवं गरम है। वर्षा के अभाव में इस जिले में जंगल का अभाव है। यहां खेजड़ा नीम तथा बबूल के पेड़ प्रायः मिलते हैं। रेत के टीलों पर भी सेवान चना फोंग भुरट करील तथा गाठिया घास मिलता है। यहां की मुख्य उपज बाजरा मोठ गवार है। व्याधान की दृष्टि से यह जिला आत्मनिर्भर नहीं है। बीकानेर जिले का मतीरा प्रसिद्ध है।

इस जिले का मुख्य उद्योग पशु पालन है। बीकानेर का ऊट काफी प्रसिद्ध है। राजस्थान भर में अछड़ी नस्ल के ऊट यहीं से भेजे जाते हैं। यहां का

१— डॉ० करणसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध पृ० १

२— बीकानेर, गगानगर, चुरू।

दूमरा प्रमुख पशु श्रेष्ठ है । राजस्थान में सबसे अधिक उन बीकानेर जिले में ही होती है । यह जिला ऊन उद्योग के लिए भारत में प्रसिद्ध है । प्रति वर्ष लगभग बीस लाख पौंड अच्छे किस्म की ऊन बीकानेर में उत्पन्न होती है ।

भूगर्भ की दृष्टि से यह जिला बहुत ही सौभाग्यवादी है । यह जिला जिप्सम के लिए प्रसिद्ध है । भारत में पाये जाने वाले जिप्सम की सबसे अधिक ६० प्रतिशत मात्रा राजस्थान तथा राजस्थान में सबसे अधिक मात्रा जामसर में उपलब्ध होती है । बीकानेर जिले में कोयले और लान पत्थर की भी खानें हैं ।

बीकानेर की परिस्थितियाँ

साहित्य और जीवन का गहरा सम्बन्ध है । जीवन की प्रतिच्छाया साहित्य में झनझनी है । एक घोर माहिष जीवन का अनुकरण करना है और दूसरी ओर वह जीवन का मार्ग प्रशस्त भी करता है । मानव जीवन पर कई शक्तों का गहरा प्रभाव पड़ता है जैसे उसका राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक जीवन । राजनैतिक वातावरण मानव के जीवन में गहरे परिवर्तन ला देता है । यही राजनैतिक परिवर्तन साहित्य को भी प्रभावित करता है । विश्व का इतिहास को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ पर भी क्रांति हुई उसको साहित्य से बहुत अधिक प्रेरणा प्राप्त हुई ।

अतः बीकानेर में काव्य चेतना का समझना से पूर्व यहाँ की परिस्थितियों को समझना उचित ही होगा ।

राजनैतिक परिस्थिति (स्वतन्त्रता से पूर्व)

राज बीका में लेकर शाहू लसिंह के पूर्व तक के इतिहास पर एक दृष्टि —

बीकानेर की स्थापना से लेकर स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक यहाँ पर एक ही चक्र (चक्रेण) का राज्य रहा है । इसका कारण यह था कि यहाँ के नरेशों ने अपने राज्य रक्षा के लिए कभी भी अपने प्राणों का मोह नहीं किया । ऐसे बहुत से अवसर आये जब इन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया । राजनैतिक दृष्टिकोण से इस काल को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम वह जब भारत पर मुगलाने राज्य किया और दूसरा वह जब यहाँ पर गजपतों ने राज्य किया बीकानेर राज्य की यह विक्षपता रही है कि इसका सम्बन्ध मुगलाने साथ

मित्रता का रहा है, किंतु यह मित्रता किसी दुःखता के कारण नहीं थी। अबसर आने पर इन्होंने मुगला से युद्ध भी किया। बाबर की मृत्यु के बाद जब कामरा ने सेना सहित भटनेर (हनुमानगढ) पर चढ़ाई कर दी और उस समय यह बिना खेतजी (काधल के पौत्र) के अधिकार में था। इस समय खेतजी इस युद्ध में वीर-मति को प्राप्त हुए और यहाँ मुगला का अधिकार हो गया। इसके बाद कामरा की सेना बीकानेर की ओर बढ़ी। जब जतसी को इस बात का पता चला तो वह भी अपनी सेना लेकर चला और उपयुक्त अवसर देख कर एक रात को वह अपनी सेना सहित मुगला की सेना पर दूट पड़ा जिससे कामरा को युद्ध में भागना पड़ा। जतसी की यह उल्लेखनीय विजय है।¹ जैतपी जोरपुर के राजा मालदेव से युद्ध करता हुआ मारा गया। इसमें बीकानेर का बहुत सा भाग जोरपुर के अधिकार में चला गया। लेकिन कल्याण मल ने अपनी चतुरता से मुसलमानों से मित्रता स्थापित करके तथा शेरशाह की सहायता से यह भाग फिर अपने अधिकार में कर लिया। शेरशाह के पश्चात् देश में मुगला का बोनवापा हुआ और हुमायूँ ने पुनः शासन हस्तगत किया पर हुमायूँ का जीवन भटकते ही बीना। अकबर के समय बीकानेर के महाराजा कल्याणमल ने जो मित्रता मुगला के साथ की वह मुगला के पतन तक बनी रही। बीकानेर के नरेशों में से महाराजा अनूपसिंह, महाराजा गजसिंह तथा महाराजा रत्नसिंह को मुगल बादशाहों की ओर से विभिन्न अवसरों पर 'महीमरातिव' का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ, जो इस बात का सूचक है कि मुगला के दरबार में बीकानेर का स्थान बड़ा ऊँचा रहा।²

बालातर में औरंगजेब की घामिक कट्टरता और असहिष्णुता के कारण राज्य के क्षेत्रों से सम्बंध दूट गये। ज्यों ज्यों मुगल साम्राज्य पतन की ओर जान लगा तथा-तथा बीकानेर के नरेशों ने अपनी मित्रता में भी कमी कर दी। उस समय जोधपुर ने कई बार बीकानेर को हथपने का असफल प्रयत्न किया। यह समय बहुत ही सकट का था। दश में कई स्थानों पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिकार हो गया। मरहठों की शक्ति छिन-भि न हो गई। राजपूत आपस में लड़ रहे थे। इतनी अव्यवस्था में भी महाराजा गजसिंह ने अपने राज्य की रक्षा

१— डॉ० गौरीशंकर हीराचंद घोषा — बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ १३०-१३२

२— गौरीशंकर आचार्य — बीकानेर एक परिचय पृष्ठ ४२

बड़ी कुशलता पूर्वक की। अंग्रेजों के साथ बीकानेर के प्रारम्भ से ही अच्छे सम्बन्ध रहे, जिससे बीकानेर में हर तरफ से सुधार हुए। आवश्यकता पड़ने पर बीकानेर नरेशों ने अंग्रेजों की धन और जन से सहायता भी की। बीकानेर में डूंगरसिंह ने सुधार के कार्य किये। डूंगरसिंह के कोई सत्तान न होने के कारण उन्हें अपने भाई गंगासिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया,¹ जो सात वष की आयु (अगस्त ३१, १८८७) में बीकानेर के स्वामी बने।² गंगासिंह का शासन-काल बीकानेर राज्य के इतिहास में स्वर्णयुग माना जाता है। गगनहर के निर्माण का कार्य उनका बहुत ही प्रशंसनीय है। गंगासिंह ने कई बार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।³

राष्ट्रीय आन्दोलन और बीकानेर —

अंग्रेजों के पुंगुल स देश को निकालने का प्रयत्न कांग्रेस की स्थापना के साथ ही हो गया था परन्तु महात्मा गांधी के राजनैतिक क्षेत्र में आने से पहले यह आन्दोलन कुछ सीमित था। गांधी-युग के साथ सावजनिक जीवन में एक नया अध्याय का श्री गणेश हुआ। इस समय राष्ट्र ने पराबलम्बी बृत्ति को त्याग कर स्वावलम्बन, असहयोग और सत्याग्रह के मार्ग को अपनाया। एक वष में (सन् १९२१-२०) स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा इतनी तेजी से फैली कि देशी राज्यों की जनता जो अब तक सो रही थी वह भी जाग उठी।

बीकानेर की जनता में भी इन्हीं दिनों में जागृति का श्रीगणेश हुआ। इस समय में यहाँ पर अफसरों की रिश्त खोरी और अत्याय के विरुध आवाज उठायी गई। इसी समय में "सद् विद्याचारिणी" सभा की स्थापना हुई जिसके प्रधान श्री मुक्ता प्रसाद बकौल और मंत्री श्री बालूराम बरडिया बने।⁴ इस सभा ने जन जागृति के लिए 'सत्य विजय' और 'धर्म विजय' दो नाटक खेले। इन्हीं दिनों बीकानेर में विदेशी कपड़ों की होसी जलाई गई। यह पहला सावजनिक राजनैतिक आयोजन था।

१— गौरीशंकर होराचंद आभा — बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग)

पृष्ठ ४८६

२— " " " " " " " " ४६२

३— " " " " " " " " ५४०

४— सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालकार — बीकानेर का राजनैतिक विकास और

पंडित मधाराम वैद्य

पृष्ठ १७

बीकानेर राज्य और अंग्रेजों के आपसी सम्बन्ध मित्रता के रहे हैं । अतः तत्कालीन महाराजा गंगासिंह इस प्रकार के आन्दोलनों को कैसे पनपने देते ? इसलिए उनसे जहाँ तक हुआ वे किसी बाहर के राष्ट्रीय नेता को राज्य में प्रवेश नहीं करने देते थे । यही कारण था कि जब सन् १९२७-२८ में स्वर्गीय देश भक्त सेठ जमनालाल बजाज रतनगढ़ में ब्रह्मचर्याश्रम के उत्सव पर आये तो उन्हें गाड़ी से उतरने का भी अवसर नहीं दिया ।^१

जितनी तन्त्री से बीकानेर राज्य में जागृति प्रारम्भ हुई शासन की ओर से उतना ही दमन चक्र तेज चला । सन् १९३२ में दमन-चक्र प्रारम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप कुछ नताओं पर मुकदमा चलाया गया । वास्तव में राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए दमन उत्पीड़न और निर्वासन उनकी (महाराजा) शासन नीति के मूलमंत्र बन गये थे ।^२ सेवा समितियों वाचनालयों पुस्तकालयों और शिक्षा संस्थानों के रूप में किंचित हलचल भी राज्य को उस समय सह्य नहीं थी । यहाँ तक कि खादी भंडार को भी ये राष्ट्रीय आन्दोलन का एक प्रड्डा मानत थे । प्रजामंडल नाम की मस्या से तो महाराजा बहुत भय खात थे । अतः प्रजामंडल की हत्या ता गभकाल में करत रहे । निष्कण रूप में यह कहा जा सकता है कि न ता प्रजामंडल जसी किसी संस्था को और न ही इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ रखने वाले किसी नेता को पनपने दिया ।^३

परंतु राष्ट्रीय भावना को दबाना बहुत कठिन होता है । जब प्रजामंडल की स्थापना करना बीकानेर में सम्भव न हुआ तो सन् १९३५ में स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्या की अध्यक्षता में बीकानेर राज्य प्रजामंडल की स्थापना कलकत्ता में की गई । ४ अक्टूबर १९३६ को रात्रि के ८ बजे प्रजामंडल के सदस्या की प्रथम बैठक रतन बाई ट्रस्ट के मकान (बीकानेर) में हुई जिममें श्री मधाराम इसके प्रधान चुने गये परंतु सन् १९३७ में इसके अध्यक्ष और मंत्री में भी बना लिया गया । इसमें प्रजामंडल समाप्त प्राय हो गया । अथ जनता ने नई युक्ति खोज निकाली और प्रजामंडल के स्थान पर श्री रघुबरदयाल गोयल

१— स० श्री सत्यदेव विद्यानकार — बीकानेर का राजनैतिक विकास और पंडित मधाराम बघा पृष्ठ १९

२— , , , , २५

३— , , , , २५

आदि ने २२ जुलाई १९४२ को 'प्रजा परिषद्' नामक राजनैतिक सत्या की स्थापना की इसका जीवन काल भी ५-७ दिनों से अधिक न रहा ।

६ दिसम्बर, १९४२ को बीकानेर में ऋडा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और पहली बार उसी दिन दो बजे वैद्यो के चौक में श्री मधाराम वैद्य के पुत्र श्री नारायण ने तिरगा ऋडा फहराया । २६ जनवरी १९४३ को स्वतंत्रता दिवस भी मनाया गया ।^१ श्री शादू लसिंह ने प्रारम्भ में तो गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया, परन्तु इन सत्याग्रहियों ने मुक्त होते ही अपना वही काम प्रारम्भ कर दिया । इसके कुछ दिन पश्चात् तत्कालीन गृहमंत्री महाराज नारायणसिंह भाटी के विरुद्ध एक परचा छापा उसके लिए श्री मधाराम वैद्य को दोषी समझ कर बन्दी बना लिया गया ।^२ सन् १९४५ को फिर २६ जनवरी गुप्त रूप से मनाई ।

बीकानेर राज्य में प्रथम राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन ३० जून व १ जुलाई १९४६ को रायसिंहनगर में करने का निश्चय हुआ । इस आयोजन के सभापति थे श्री सत्य नारायण वकील । राज्य की ओर से ऋडा न फहराने का आदेश पहले से ही था । जनता ऋडा सहित पडाल में पहुँची ।

इसमें श्री गगनगर के श्री बीरबलसिंह सहोदर हुए । इस घटना को सुन कर जब बीकानेर के गृह मंत्री २ जुलाई को इनुमानगढ़ पहुँचे तो जनता ने उनसे हाथ में ही ऋडा द दिया और उस गाड़ी पर भी ऊँचे लगा दिये ।

स्वतंत्रता प्राप्ति पर १५ अगस्त १९४७ को बीकानेर में भी खुशिया मनाई गई । स्टेटिडियम में ऋडारोहण स्वयं महाराजा शादू लसिंह ने किया । राजि के सयम समारोह मनाने के लिए लालगढ़ पैलेस में एक राजकीय भोज दिया गया ।^३

शादू लसिंह से लेकर भारत के पुनर्गठन तक बीकानेर की राजनैतिक स्थिति —

माघ १९४३ को महाराजा गंगासिंह का देहांत बम्बई में हो गया और

१— सम्पादक श्री सत्येव विद्यालंकार — बीकानेर का राजनैतिक विकास और

पंडित मधाराम वैद्य पृष्ठ १३६

२—, " " " " " " " " १४१-१४२

३— डॉ० वरणी सिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ३८२

उनके उपरांत राज्य का भार उनके सुपुत्र श्री शादू लसिंह ने सभाला । गद्दी पर बैठते ही श्री शादू लसिंह ने राजनैतिक बर्तियों को मुक्त कर दिया । इसी समय श्री शादू लसिंह ने पानी की ट्यूबों का उपयोग ग्राम जनता के लिए मुफ्त कर दिया । नौकरी के क्षेत्र में भी जनसाधारण को पहले से अधिक लिया जाने लगा । बीकानेर में जिस धारा सभा की स्थापना सन् १९१२ में हुई, उसके अधिकारों में सन् १९४६ में वृद्धि कर दी । इस सभा को व्यापक और जन-प्रतिनिधि बनाने का प्रयत्न किया गया जिसके लिए एक विधान समिति की भी नियुक्ति की गई । श्री शादू लसिंह की बहुत सी घोषणाएँ कार्यान्वित नहीं हो पायी थी । विनियोग (बजट) की कुछ मदों पर राय देने का अधिकार धारा सभा को दिया गया । पर चुनाव प्रणाली तत्कालीन सद्योपेक्षित थी कि उसमें ग्राम जनता के किसी भी प्रतिनिधि का चुनाव सम्भव नहीं था ।

बीकानेर राज्य में शरणार्थी और शादू लसिंह —

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत स्वतंत्र अवश्य हुआ लेकिन साथ ही देश के दो टुकड़े हो गये । पाकिस्तान से हिन्दू भारतवर्ष में और भारतवर्ष में मुसलमान पाकिस्तान में जान लगे । पाकिस्तान के साथ लगभग २०० मील तक बीकानेर राज्य की सीमा लगी हुई थी । इस समय में तत्कालीन महाराजा जाति धर्म से ऊपर उठ कर मनुष्य मात्र की रक्षा में तत्परता दिखाई और उदारता की नीति का परिचय दिया । पाकिस्तान से आये हुए बहुत से शरणार्थियों के पास कुछ नहीं था, उनके भोजन और आवास की व्यवस्था भी महाराजा ने की यहाँ तक कि मुजानगढ़ में महाराजा शादू लसिंह ने निजी भवन को भी शरणार्थियों को सौंप दिया ।^१ इसी समय शरणार्थियों के लिए स्थान स्थान पर शिविर खोल गये । कोलायत में बहुत सी धर्मशालाएँ होने के कारण यह शरणार्थियों का केंद्र सा बन गया था ।

शादू लसिंह और एकीकरण —

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारतवर्ष में स्वतंत्रता का सूत्र उदय हुआ । इस समय भारत स्वतंत्र अवश्य हो गया था परन्तु हमारे देश में इस समय भी बहुत सी समस्याएँ थी, जैसे— वकालत, भूखमरी और इससे भी बढ़ कर थी रियासतों के एकीकरण की । इस समस्या में राजाशा के सहयोग की बहुत

१— डॉ० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केंद्रीय सत्ता से सम्बंध

प्रावश्यता थी। ब्रिटिश सरकार की ओर से इन्हें पूर्ण स्वतंत्रता थी पर रियासतों का इस प्रकार में घलघ-घल रहना देश की एकता के लिए हानिकारक था। राष्ट्रीय एकता के लिए इनका एकीकरण बहुत ही आवश्यक था। राजपूताने का एकीकरण चार सापानों में पूरा हुआ। सब प्रथम संयुक्त राजस्थान राज्य में दक्षिण पूर्व की ओर रियासतों का एकीकरण हुआ। थोड़े समय बाद मवाड को भी इसमें मिला लिया गया। इसी काल में अजमेर भरतपुर घोलपुर और बरोली इन चारों को मिलाकर मत्स्य नाम का एक नया मघ बनाया गया। परन्तु थोड़े समय बाद इस मत्स्य मघ का भी वृहद् राजस्थान में मिला लिया गया। कतना कुछ होने पर भी अजमेर का एकीकरण अचूरा ही था। जैसलमेर, जयपुर जोधपुर और बीकानेर की रिगामतें इस मघ में घल गयी थी। अथक परिश्रम के बाद ३० मार्च १९४६ को सरदार पटेल द्वारा वृहद् राजस्थान मघ का उद्घाटन किया गया और जयपुर इसकी राजधानी निश्चित हुई।^१ इस एकीकरण में बीकानेर के महाराजा शादूलसिंह का त्याग और देश प्रेम प्रशस्तनीय है। तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा ५ मितम्बर १९५४ को बीकानेर में दिया गया भाषण में उनके देश प्रेम व त्याग की भावनाओं का पता चलता है। उन्होंने अपने भाषण में कहा है जो लोग उस समय (बिनीनीकरण में पहले) का इतिहास जानते हैं और जिनमें लोग उस समय जो कुछ हो रहा था, जानकारी रखते हैं उनको यह बात शक्य तरह मालूम है कि महाराजा शादूलसिंह जी ने भारत देश की कितनी बड़ी सेवा की — — — उन्होंने समझौता करके दूसरे नरेशों को शास्ता दिखाना कर केवल बीकानेर को ही नहीं बल्कि और राज्या का भी भारत के साथ मिलाए का प्रस्ताव दे दिया और मदद की। इसलिए भारतवर्ष उनका बड़ा ऋणी है और रहेगा।^२

१९४७ से लेकर आज तक की राजनैतिक स्थिति —

१५ अगस्त १९४७ को भारत वर्षों की परत प्रता के बाद स्वतंत्र हुआ। इस स्वतंत्रता का कारण जनता में राष्ट्रीय भाव की जागृति थी।

१—बामवाडा वृदी, झुगरपुर, भालावाड, विशनगढ कोटा, प्रतापगढ शाहपुरा और टो क।

२—डा० करणसिंह — बीकानेर के राजघराने का वंशीय सत्ता से सम्बन्ध
पृष्ठ ४००

३—गौरीशंकर आचार्य — बीकानेर परिचय

राष्ट्रीय आन्दोलन की जा सहस्वत प्रता से पूव दग म धारम्भ हुई यह स्वतंत्रता प्राप्ति तक देस के कोने कोने म फन गई । बीकानेर म भी राष्ट्रीय भावना क कारण स्वतंत्रता के लिए काफी आन्दोलन चले, जिनम कांग्रेस का यहा पर मुख्य हाथ रहा है ।

स्वतंत्रता से पूव का इतिहास राजाशाही और उनके पार्श्व का इतिहास है पर स्वतंत्रता के पश्चात् का इतिहास जनता की पार्टियों का इतिहास है । देस म १८५२ म प्रथम ग्राम चुनाव हुए जिनम बीकानेर जिला भी प्रचुरता नही रहा । उस समय बीकानेर जिले म कांग्रेस जन मध समाजवादी आदि पार्टियां ने चुनाव में भाग लिया । इस समय प्राय सभी पार्टियां की बुरी स्थिति रही और जीत बनन स्वतंत्र उम्मीदवारों की ही हुई । नोखा क्षेत्र म कांग्रेस की विजय हुई । साम्यवादी (Communist) पार्टी का इस समय यहाँ कोई स्थान नहीं था अतः उसने इस चुनाव मे भाग भी नहीं लिया ।

सन् १९५७ मे बीकानेर म राजस्थान की विधान सभा के लिए एक पंच हरिजनो के लिए सुरक्षित कर दिया गया था । इस समय कांग्रेस ने अपनी स्थिति पहले से सुदृढ बनाली थी । अतः बीकानेर को छोडकर अन्य सभी तहसीला म कांग्रेस की ही विजय हुई और बीकानेर मे समाजवादी पार्टी की विजय हुई । भारतीय लोक सभा के लिए इस समय मे फिर स्वतंत्र उम्मीदवार की ही विजय हुई । इस चुनाव मे साम्यवादी पार्टी ने भी भाग लिया परन्तु विजय कहीं भी नहीं हुई । सन १९६२ म भी यहा पर समाजवादी और वामपन्थ ने ही सब स्थान प्राप्त किये परन्तु भारतीय ससद के लिए स्वतंत्र उम्मीदवार ही जीता । इस समय मे कांग्रेस की विजय बीकानेर से बाहर ही हुई पर शहर मे उसक पर इस समय मे भी नहीं लगे । सन् १९६७ मे कांग्रेस की अद्भुत विजय हुई और वह यह कि इस समय उसने बीकानेर शहर मे भी अपना स्थान बना लिया और अन्य क्षेत्रो म भी विजय प्राप्त की । सन १९५२ से लेकर भारतीय लोकसभा के लिए स्वतंत्र उम्मीदवार की ही विजय हाती रही है । इसका कारण बहुत कुछ महाराजा करणोसिंह का व्यक्तित्व ही है ।

बीकानेर जिले को सामाजिक परिस्थिति —

आज बीकानेर जिले में प्रायः सभी जातियों के लोग निवास करते हैं। हिन्दुओं में ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, क्षत्री, वायस्य, जाट, विद्दोई, चारण, मुनार, सुधार, टजी, कुम्हार, तनी, सुनार, माली, नाई, धोबी, गुजर, वंरामी, गोसाई, स्वामी, छोपा, बडभूजा, रंगर, मोची, चमार आदि कई जातियाँ हैं। इन जातियों में आज कई ऐसी उपजातियाँ बन गईं जिनमें आपस में विवाह भी नहीं होता। जगती जातियों में मीठी, वाकरी, घोर, थोरी आदि हैं। मुसलमानों में सैयद, शेख, मुगल, घोर, पठान आदि कई जातियाँ हैं।^१ यहाँ के लोगों में अधिकांश वेतनी करते हैं। राजपूत लोग प्रमुख रूप से सैनिक सेवामें नियुक्त हैं। वैश्य लोग का प्रमुख व्यवसाय व्यापार करना है। यहाँ के मोहता डाला मूषडा, रामपुरिया, सठिया आदि वैश्य लोग भारत के प्रमुख व्यापारियों में गिने जाते हैं। अन्य जातियों के लोग प्रधान रूप से नौकरी, दस्तकारी और अन्य प्रकार की मजदूरी का काम करते हैं।

गावों के लोगों का मुख्य खाद्यान्न बाजरा व मोठ है। आजकल गेहूँ और चावल का भी बहुत प्रचलन हो गया है। चावल किसी विशेष लोहदार पर ही प्रयोग में लिये जाते हैं। गावों में प्रायः दूध, दही व सूखी सब्जियाँ काम में ली जाती हैं, जिनमें सागरी, फली, काचर, खैलरी, केर आदि प्रमुख हैं। शहर में लोग गेहूँ और हरी सब्जी का प्रयोग करते हैं। मूँग और मोठ को विभिन्न प्रकार में प्रयोग में लाते हैं। भुजिया और रसगुल्ला तथा बीकानेर का भारत प्रसिद्ध है।

आज शिक्षा के प्रसार से स्त्रियों की दशा में काफी सुधार हो गया है और इनका अपने समाज में पुरुषों के समान ही स्थान है। गावों में पढ़ी लिखी स्त्रियों की संख्या अवश्य ही कम है। शिक्षा के कारण बाल विवाह भी कम हो

गय है, पर तु कुछ जातियो म अब भी यह प्रथा प्रचलित है, पर है बहुत कम । शिक्षा से आज समाज मे छूपाछूत भी बहुत कम हो गई है । इससे समाज म पहले की तरह किसी प्रकार की ऊच नीच की भावना नहीं है । यहाँ की शिक्षण संस्थाओ म गरीब छात्रा की निशुल्क शिक्षा दी जाती है । बीकानेर जिले के प्रत्येक गाव म आज स्कूल अवश्य है तथा सभी गांव सड़कों द्वारा शहर से जुड़े हुए है । यातायात मे सब प्रकार की सुविधाए उपलब्ध है । पहले जैसा गात्रा म किसी भी प्रकार का भय नहीं है । इस जिले म घोटो और कुर्ता पुरपो की तथा लहगा और सोली भित्रयो की मुख्य पागाक है । नगर मे पुरप व स्त्रिया अधिक्तर आधुनिक ढग से वस्त्रो का प्रयोग करत है । वहाँ प्रथा प्राय समाप्त सी हो गई है । यहा तक कि मुसलमानो मे भी बुकें की प्रथा कम हो गयी है पर तु पुरातया समाप्त नहीं हुई है । विवाह म दहेज आदि की प्रथा भी प्रचलित है, पर उसकी अधिक्ता नहीं है । मुर्षो को यहाँ पर जलाया एव जमीन मे गाडा जाता है । मुसलमान मुर्षो को जमीन मे ही गाडन है ।

बीकानेर जिले की धार्मिक परिस्थिति —

बीकानेर जिले मे मुख्यत वैदिक (ब्राह्मण) जैन सिक्ख और इस्लाम धम के मानने वालों की संख्या अधिक है । ईसाई प्राय समाजी और पारसी धम के अनुयायी भी यहा थोड़े बहुत हैं । वैदिक धम मानने वालो मे शव, वैशाख शाक्त आदि अनेक भेद हैं, जिनमे यहा वैष्णवो की संख्या अधिक है । इस्लाम धम के अनुयायिया के दो भेद-शिया और सुनी हैं । इनम स इस जिले मे सुन्नियो की संख्या अधिक है । इनके अतिरिक्त यहाँ अलखगिरि नाम का नयीन मत भी प्रचलित है तथा विशनोई नाम का दूसरा मत भी हिंदुओ म विद्यमान है ।

बीकानेर जिले मे त्योहारो का बहुत महत्व है त्योहारो मे नाल सप्तमी अक्षय तृतीया रक्षा बंधन दशहरा दिवाली हाली आदि मुख्य त्योहार है । तीज और मनगौर स्त्रियो क मुख्य त्योहार हैं । इन त्योहारो क दिन गूर म बहुत ही चहल पहल रहती है । इस दिन स्त्रिया लोक गीत गाया करती हैं । त्योहारो क अतिरिक्त यहा मेल भी बहुत लगते हैं । प्रतिबंध कानिक पूणिमा को कोलायत ॥ बड़ा मेला लगता है, जिनम ऊट वन आदि का व्यापार भी हाता है । बीकानेर म ३० भाग दक्षिण पश्चिम म यह स्थित है । यहाँ एक

विशाल जलाशय है जिसके किनारे कपिलमुनि का मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ कपिलमुनि का आश्रम था जहाँ उन्होंने अपनी माता को साख्य और योग का उपदेश दिया।^१ मुख्य मंदिर के अतिरिक्त अन्य भी छोटे-छोटे मंदिर हैं। गजनेर बोकानेर से २० मील दक्षिण पश्चिम में बसा हुआ है। यहाँ पर मुसलमानों का मेला लगता है जिसे 'भुट्टो का मेला' कहते हैं। थावण के महीने में शिवरात्री और भाद्र पद देवीकुंड सागर में भी मेले लगते हैं, जिनमें बहुत से लोग इकट्ठे होते हैं।^२ देशनोक ■ जो कि शहर से २० मील दक्षिण में है, करणी जी का विशाल मंदिर है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ चूहे बहुत संख्या में हैं। वष में दो बार चैत्र और आसोज के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तक भारी मेले लगते हैं। मुकाम जो बोकानेर से लगभग ५० मील है, वहाँ प्रतिवर्ष आसोज और फाल्गुन में मेले लगते हैं। यहाँ पर भारतवर्ष के प्रत्येक कोने कोने से विश्वोई लोग आते हैं और हवन आदि करते हैं। यहाँ पर एक रेत के धोरे का बहुत अधिक महत्व है।^३ इन मंदिरों के अतिरिक्त बोकानेर में मंदिरों की संख्या इतनी अधिक है कि नगर का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जहाँ मंदिर न हो। चित्तामणि का मंदिर, भाडासरजी का मंदिर धूनीनाथजी का मंदिर रतन बिहारी जी का मंदिर श्री लक्ष्मीनाथजी का मंदिर नागलेश्वरी जी का मंदिर आदि शहर के मुख्य मंदिर हैं।^४ चाहे कितने भी मंदिर आज हैं पर एक बात स्पष्ट है कि घम पर लोगों का पहन जमा विश्वास नहीं रहा है पर फिर भी मंदिरों पर भीड़ बहून रहती है। यहाँ पर बहुत से देशी देवताओं की पूजा की जाती है। मूर्तिपूजा की प्रधानता है। इसमें अतिरिक्त स्थियाँ यहाँ पर पीपल आर पेजड़ी की भी पूजा करती हैं।

१ (क) गौरीशंकर आचार्य - बोकानेर परिचय १८९ ६५

(ख) य करणाकर कृपालु भगवा कपिल स्वकीये

अत्यल्पे वयसि स्वमात्रे देव हृत्य जग दुद्धरकारक माग्य योग च
मविस्तर प्रोवाच उपदिष्टवान्

पण्डित विष्णुचन्द्र शर्मा— श्री कपिनाथतन तौर माहात्म्यम् १८९ ३५

- गौरीशंकर हीराचंद आभा बोकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) १८९ २६

३— ऐसा माना जाता है कि विश्वोई सम्प्रदाय के प्रवक्ता श्री जम्भेश्वर वृषी धोर पर रहा करन थे। इसी धोरे पर उनकी मृत्यु हुई थी परंतु उनके शव को मुकाम में दफनाया गया था जहाँ पर आज भी मंदिर बना हुआ है।

४-गौरीशंकर हीराचंद आभा बोकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) १८९ २६

५ कर्णस तोप (कवि मुदल शृत)

६ बत सारावली ।

यह तो स्पष्ट है कि अनूपसिंह से पहले बहुत से ग्रंथ बीकानेर में लिखे गये थे, परन्तु साहित्य का विकास अनूपसिंह के समय में सबसे अधिक हुआ । वह स्वयं भी विद्वान् था और उसने बहुत से विद्वानों को आश्रय भी दे रखा था । अनूपसिंह के समय में सबसे अधिक ग्रंथों की रचना हुई । उसने स्वयं ने "अनूप विवेक" (सत्र शास्त्र) "काम प्रबोध (काम शास्त्र)" श्रद्धा प्रयोग चिन्तामणि और गीत गाविन्द की अनुपोदय नाम की टीका आदि ग्रंथ लिखे ।^१ अनूपसिंह के दरबार में संस्कृत के अनेक विद्वान् रहते थे जिन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे । इन विद्वानों द्वारा लिखे ग्रंथ निम्नलिखित हैं ।^२

१— ज्योत्स्निसार (वैद्यनाथ कृत)

२— अनूप व्यवहार सागर (मणिराम दोसित)

३— अनूप विलास (मणिराम दोसित)

४— अयुतलक्ष होम कोटि प्रयोग (भद्र राम)

५— तीर्थ रत्नाकर (अनन्त भट्ट)

६— पाण्डित्य टपण (श्वेताम्बर उदयचन्द्र कृत)

संस्कृत के अतिरिक्त अनूपसिंह को राजस्थानी में भी बहुत प्रेम था । उसने शुक्र सारिका की कथाभाषा का अनुवाद भी कराया तथा कुछ और भी राजस्थानी ग्रंथ लिखे गये । अनूपसिंह को मगीत में भी बहुत प्रेम था । अतः इसके समय में चाव भट्ट ने संगीत अनुपाकुल अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर, नब्बो ह्रिष्ट प्रबोधक, धीपण टीका आदि ग्रंथों की रचना की ।^३

महाराजा जोरावरसिंह संस्कृत और भाषा का अच्युत विद्वान् था । उसके बनाये हुए दो ग्रंथ 'व्यसागर और पूजा पद्धति' बीकानेर के पुस्तकालय में हैं । भाषा में उसने रसिक-प्रिया और कवि प्रिया की टीकाएँ बनायी थी ।^४

१ गौरीशंकर हीराचन्द श्रोत्र-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग)	पृष्ठ
	२८०
२—	२८१, २८२
३—	२८७
४—	३२२

महाराजा गजसिंह के समय में (सन १७८५-१७८७) गोपीनाथ और सिंहायच फतेराय ने क्रमशः 'ग्रन्थराज' श्रवण महाराजा गजसिंह जी की रूपक तथा महाराजा गजसिंह जी की रागोत्तम कविता दुहा नामक ग्रन्थ लिखे।^१ इसी प्रकार महाराजा रत्नसिंह के समय में रत्न विनास, रत्न रूपक और जस रत्नाकर प्रादि काव्य ग्रन्थ मिलते हैं।^२ इन सभी ग्रन्थों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बीकानेर में जितने राजा हुए वे सभी साहित्यिक प्रेमियों अवश्य रहे हैं। उनमें से बहुतों ने तो स्वयं ही बहुत कुछ लिखा है। साहित्यिक दृष्टि में अनूपसिंह के शासन काल को 'स्वर्णयुग' कहा जा सकता है। आज भी पृथ्वीराज कृत 'वैलि क्रिसन कर्मणी री' का महत्व बना हुआ है। डूंगरसिंह ने शिक्षा के लिए बहुत सी पाठशालाएँ खुलवायीं। सन १९१२ में अपनी रजत जयन्तीक अवसर पर महाराजा गजसिंह ने डूंगर मेमोरियल कालेज का उद्घाटन किया और इसी समय कचहरिया की भाषा हिंदी घोषित की।^३

बीकानेर में साहित्य की उन्नति में चारणा, जना एव भाटों का भी विशेष योगदान रहा है जिसके परिणाम स्वरूप आज भी बीकानेर में विविध रंग सभासालों में लगभग पचास हजार हस्तलिखित प्रतियाँ विद्यमान हैं।^४

==

१— गौरीशंकर हीराचंद जोषा — बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग)		
	पृष्ठ	३५९
२—	,	५२५
३—	"	५२५
४— गौरीशंकर झावाय — बीकानेर परिचय	पृष्ठ	२२

बीकानेर में हिंदी काव्य सर्जना

स्वातंत्र्यपूर्व काव्य —

यो तो डिगल, ब्रज भाषा एवं उर्दू के माध्यम से बीकानेर का कवि-समाज अपनी अभिव्यक्ति पहले से करता आया है किन्तु इस काव्य चेतना का प्रकटीकरण हिन्दी के माध्यम से सब प्रथम ई० सन् १९१९ से माना जा सकता है। इस समय के प्रारम्भिक कवियों में श्री नरोत्तम दास स्वामी का नाम सब प्रमुख आता है। स्वामी जी ने भक्ति सम्बन्धी कुछ पदावलियाँ लिखीं। छायावादी काव्य प्रवर्तियों से इतर बीकानेर काव्याकाश के अन्य सितारे रामनिवास हरित, रावतमल सारस्वत, भूयकरण पारीक, रामसिंह, वामुदेव गोस्वामी, रत्नलाल गोस्वामी मास्टर बालाप्रसाद और नरपतसिंह आदि थे। इस समय गम्भूदराल सक्सेना ने बीकानेर के काव्य क्षेत्र में अपने प्रथम काव्य संग्रह "म-व-तर" द्वारा पदापण किया। इस संग्रह में कवि ने प्राचीन आम सस्कृति के उत्कृष्ट और आदर्शों को बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। कवि अपने देशवासियों को प्राचीनता का धाँधल बताना चाहता है। इसलिए कविता के लिए प्राचीन विषय चुने हैं। कवि ने फिर से प्राचीन गौरव को जगाने की चेष्टा की है। इसमें 'सती', नवयुग के मानव से, 'विश्व भारती' आदि कविताएँ विशेषतः पठनीय हैं। 'म-व-तर' में भाषा और भाव दोनों का सुन्दर समन्वय है। सारांश रूप में यही कहा जा सकता है कि 'म-व-तर' में भारतीय सस्कृति की आत्मा का अठूठा चित्र है।

इसके प्रतिष्ठित सन् १९७७ में सक्सेना ने 'उत्सव' और सन १९३३ में अमरलता दो खण्ड काव्य लिखे। उत्सव में चूडावत और हाडा रानी की कथा के साथ साथ मेराड के राणा और रूपनगर की राजकुमारी चारुमती की कथा को भी प्रस्तुत किया है। ऐसा करने से इस खण्ड काव्य में विसी घटना और पात्र का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है। यद्यपि शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार खण्ड काव्य में कोई उपकथा नहीं होनी चाहिये और यदि हो तो वह प्रधान कथा के

सहायक रूप में होनी चाहिये, पर 'उत्सव' में ऐसा नहीं हो पाया है। दोना बयाए एक दूसरे से दबी हुई हैं।

सक्सेना का 'अमरलता' वास्तव में एक सफल खूब काव्य है, जिसमें राजस्थान के मोहिल पति माणिकराज की कथा कोडमदे की कथा है। कोडमदे मंडोरपति अडकमन से विवाह न कर, सादूल के साथ विवाह करती है। जाते समय माणिकराज सादूल को अडकमल से सावधान, रहने की बात कहता है पर सादूल कोई परवाह नहीं करता। रास्ते में युद्ध होता है और सादूल मारा जाता है। कोडमदे अपना एक हाथ समुराल और दूसरा हाथ अपने नैहर भेज कर सती हो जाती है।

इस खण्ड काव्य का कथा प्रवाह स्वाभाविक गति से हुआ है। कोडमदे और सादूल के चरित्र का विकास भी पूरा हुआ है। कोडमदे का चरित्र शीघ्र एवं कठोरता का संगम है। कवि ने मध्ययुगीन राजपूती शीघ्र और वीरता को एक सुन्दर भूलक प्रस्तुत की है। परन्तु उसमें कठोरता और अवसाद की भी छाया पड़ी हुई है। '— और तब तक हम पत्तन के गर्त से कदापि नहीं निकल सकेगे जब तक अपने पूरे कृत्यों का अच्छी तरह प्रायश्चित्त नहीं करते।¹ भाषा शैली की दृष्टि से इसमें सहजता देखी जा सकती है।

स्वतंत्रता से पूर्व बीकानेर में राजस्थानी और हिंदी कविता के क्षेत्र में भरत व्यास का योगदान रहा है। कवि ने अपनी कविताओं के विषय अपने प्रचल से चुने हैं। इनकी प्रत्येक कविता में मरदेश प्रेम भक्तता है। स्वतंत्रता से पूर्व इनकी अधिकतर कविताएँ वर्णनात्मक हैं। कवि कभी तो इस मरुधरा की महिमा बताता है —

‘मरुधरा सरस मनहर, मधुरा
मा का आचल है प्यार भर, ^१
+ + +
काचर ककड़ी और रुधिर देर
पसे-पसे के सवा सेर’ ^२

१—शम्भूदयाल सक्सेना

— अमरलता

मुख पृष्ठ

२—भरत व्यास

—मरुधरा

' १

३—भरत व्यास

—मरुधरा

पृष्ठ २

मरुधरा अपनी अनुवर्ता के लिए ख्यात है। जब देश के अन्य कवि वहाँ की सरस भूमि की उर्वरता पर मुग्ध होकर गीतों में बरस पड़ते हैं उस समय यह कवि भी इसकी उर्वरता के गीत गाने लगता है, पर इसकी उर्वरता भिन्न प्रकार की है— इसमें धीर उपजते हैं।

‘वीरों की फसल यहा होती
रहता नित भ्रांणन हरा भरा
इसने उपजाया सुकवि चट’^१

+ + +

कविया की फसल यहा होती
हे नाव्यमयी यह वसु धरा !’^२

12386

10/01/2002

स्वतंत्रता से पूर्व की कविताओं में कवि की ‘केसरिया पगड़ी’ बहुत ही प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने केसरिया पगड़ी का महत्व बताया है और अपने प्रदेश के वीरों को ललकारा है कि इस केसरिया पगड़ी को धारण करने वीरों ने सदैव अपनी मातृभूमि की भावना को रखा है। अतः इस समय में इसको बाधने वालों को भी पीछे नहीं हटना चाहिये —

“कितनों के सर कुर्बान हुए
कितना के महल मसान हुए
इस पगड़ी की ली मैं कितने
परवाने के बलिदान हुए।”^३

अतः मैं कवि यही आशा रखता है कि यह केसरिया पगड़ी बनी रहे —

‘इससे भी अभिमानी मुख की
भीह भरास हो तनी रहे
यह मयन-ग्रहों में गंगा सी
मरु के कण कण में सनी रहे

१— भरतव्यास

२— ”

३— ’

श्री सुबल्लो नागर्षी ७२०७

— पुस्तकालय एवं वाचनालय

स्टेशन रोड, बीकानेर

स्वतंत्रता से पूर्व की सभी कविताओं में कवि ने कहीं 'चित्तौड़' का महत्व बताया है तो कहीं मरुधरा के 'चौमासे' (वर्षाकाल) का वर्णन किया है तो कहीं इस प्रदेश की हरियाली का वर्णन किया है। निष्कण रूप में यही कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के पूर्व कवि मरुधारा में वही बाहर निकलता है जहाँ उसने बीरता की ज्योति जलती देखी है, अथवा उसने विषय चयन में अपने घासपास को ही देखा है। इसलिए इनकी कविताओं में स्थानीय रंग (Local Colour) अधिक है। इसके अतिरिक्त भी कवि ने देश प्रेम की भावना का फूटने का प्रयास भी किया है और सोई हुई जनता को जगाने का प्रयत्न भी किया है —

'उठी राष्ट्र के सजग सिपाही
मा के घन, गोदी के लाल
विजय बुलाती तुम्ह खड़ी
उस पार लिये पूजा का याल ।'

स्वतंत्रता से पूर्व कवि की कविताओं की भाषा बहुत ही सरल है परंतु उस पर राजस्थानी का प्रभाव भी कम नहीं है। पर इससे कविता में प्रभावोत्पादकता ही प्रायी है।

आचार्य चंद्रदेव शर्मा ने अपनी कविता का प्रारम्भ हास्य और व्यंग्य की कविताओं से किया। परन्तु हास्य की अपेक्षा व्यंग्य का पुट अधिक है। कवि अपने समाज से अविश्व ही प्रभावित होता है। स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य की भावना व्याप्त थी उसका वर्णन भी उन्होंने अपने एक कविता में किया है। इनकी ऐसी कविता में उनका मानवतावादी स्वर मुख है जो जाति व वर्ग भेद का ऊपर उठकर इन्सानियत की प्रतिष्ठा करना चाहता है। प्रत्येक मनुष्य हिन्दू और मुसलमान आदि होने से पहले मानव होता है कि कुछ और जैस —

“हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले मजदूर यहाँ
हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले इसान यहाँ ।
फिर कैसा यह दगा फिसाद है भगडा हम म कीन कहाँ ।”¹

इस स्वर के साथ-साथ इनकी प्रारम्भिक कवितायाँ म आशावादी स्वर
भी स्पष्ट रूप से झलकती हैं जैसे —

“हम नवयुग की भावी आशा हम सोत भाग्य जगा दे ग
काटा का फूल बना देंगे रोडो को घूल बना देंगे ।”²

इस प्रकार चन्द्रदेव शर्मा की कविता में व्यंग्य के साथ-साथ मानवता
वादी दृष्टिकोण भी मिलता है । कवि समाज की विद्रूपता से दुःख है और इसी
ने उन्हें व्यंग्य का माध्यम लेने के लिए प्रारम्भ में ही विवश किया है । ज्यों
ज्यों ये विद्रूपताएँ बढ़ती गईं कवि का व्यंग्य भी तीव्र होता गया । इसको
हम उनकी स्वातन्त्र्योत्तर रचनाओं में देख सकते हैं । पर आशावादी स्वर जो
इस समय की कविताओं में मिलता, वह स्वातन्त्र्योत्तर कविताओं में नहीं दिखाई
देता है ।

मेघराज मुकुल ने स्वतन्त्रता से पूर्व अधिकतर राजस्थानी में ही कविताएँ
लिखी हैं, जो किसी न किसी ऐतिहासिक कथा पर आधारित हैं । मुकुल की
‘सनाणी’ कविता उस समय में बहुत ही प्रसिद्ध हो गई थी पर राजस्थानी के
अतिशक्ति कवि ने हिन्दी कविता की ओर भी अपना ध्यान नयाया और स्वतन्त्रता
में पूर्व कुछ छन्द पद्य कविताएँ लिखी भी ।

मेघराज मुकुल की राजस्थानी कविता और हिन्दी कविता के विषयों में
अत्यधिक अंतर है । राजस्थानी कविता में जहाँ एक ओर भारतीय गौरव गाथा
सुनाई पड़ती है, वहाँ हिन्दी कविता में इनका स्वर प्रगतिवादी बन गया है । भार
तीय गरीबी और इस गरीबी पर होने वाले अत्याचार के चित्रण में कवि पूर्ण
सफल हुआ है —

१—आचार्य चन्द्रदेव शर्मा

—सुदागम’ कविता से

२—” ’ ’

—भावी आशा’ कविता से

‘मचा हुआ कुहराम देस म,
 आज अचेरी रात न बीते ।
 भूखो की आसा के सम्पुट
 ज्योति बिना दिसते हैं रीते ।’¹

शोपको का भयावह और स्वार्थी जीवन का यह चित्रण भी कितना सुन्दर बन
 पडा है —

कीए और चील ॥ शोपक
 भूखो का ले मास उठ रहे ।
 + + +
 मुदों की दाबत मे देखी
 पापी साहूकार मिले है ।
 हैमा-हैमा करते नगे
 भूखा पर इनके दाब खले हैं ।’²

गरीबी और अत्याचार के आगे जनता विवश हो जाती है । ऐसे समय में किसी
 पर भी किसी का विश्वास नहीं रहता —

चिन लिखी सी खडी आज
 जनता अपना परिहास लेखती ।
 अपनी पर स अपना ही वह
 उठा हैमा विश्वास देखती ।’³

एक बात जो मुकुल की कविता में विशेष रूप से देखी जा सकती है वह यह है कि
 इस प्रकार की गरीबी और अत्याचारा से पीड़ित मानव का जैसी दशा में है वही
 दशा में नहीं छोड़ा है अपितु उसे एक माग दिखाया है जने —

नए दौर की नई जिदपी
 की बुलन्द करने अब आओ ।
 गड हुए मुदों की थोडा
 और अधिन गहरा दफनाओ ।

१—मेघराज मुकुल

—उमग

पृष्ठ २७

२— ' ' '

—

२८

३— ' ' '

—'

” ३१

रोम रोम की वाणी देकर
आज नया स्वर पुन उठामो ।
काले और कलकित शोषण की
छाती पर बच्च गिराया ।”¹

इस प्रकार से मुकुल की प्रारम्भिक हिन्दी कविता का स्वर प्रगतिवादी था और वही धागे चल कर परिपक्वता को प्राप्त हुआ है ।

इनके अतिरिक्त आचार्य चन्द्रमौलि और मासदान मनुज का स्वतंत्रता से पूव की काव्य सजना में योगदान रहा है । यह काल बीकानेर जिले की हिन्दी कविता का शैशव काल कहा जा सकता है । इस काल की कविता में अपरिपक्व कल्पना, अस्पष्ट अभिव्यक्ति और अप्राञ्जल भाषा उस लडखडाहट की बोधक है जो प्रत्येक शैशव काल के कवियों में देखी जा सकती है । स्वतंत्रता से पूव इन कवियों में जो कुछ कहा वह एक दबी जवान से कहा । इसी कारण इस समय के काव्य में गाम्भीर्य नहीं आ पाया था जो स्वातंत्र्योत्तर काव्य में बन पडा है ।

स्वातंत्र्योत्तर काव्य —

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बीकानेर में काव्य के क्षेत्र में छट पुट प्रयास तो हो रहे थे पर काव्य की धीरे गम्भीर धारा उसमें नहीं प्रवाहित हो पायी थी । कवियों की मर्यादा भी स्वल्प थी और उनके द्वारा लिखा गया काव्य आकार और गुण दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण नहीं था । जब शेष हिन्दी काव्य जगत में काव्य के विविध प्रयाग स्वतंत्र और वादवाच्य अनुकरण पर कर चुका था तब तक यहाँ का कवि देश से कटा हुआ अपनी प्राचीन डिगल परम्परा या ब्रज काव्य की विषय वस्तु को लेकर हिन्दी में उह व्यक्त कर रहा था । न उसके पास विषय की विविधता थी और न नवीनता । भाषा शैली में अभिव्यक्ति का वह सामर्थ्य नहीं दिखाई देता है जो १९४७ तक हिन्दी के काव्य में भ्रजन कर लिया था । इस प्रकार उसमें प्राचीनता थी और मौलिक उद्भावनाओं का अभाव था । शिल्प की दृष्टि से उसका स्वरूप अत्रिकसित और पिछडा हुआ था ।

ऐसे काव्य के ही पश्चात् आलोच्यकाल में काव्य-सजना की अनेक दिशाएँ मिली । यहाँ का कवि कवि-सम्मेलनों और कवि गोष्ठियों, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं साहित्यिक संस्थाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सहसा उठ खडा हुआ और

एक के बाद अनेक कवियों का उदय हुआ और उन्होंने काव्य लिखना प्रारम्भ कर दिया यह भिन्न बात है कि इस आलोच्यकाल में भी किसी महाकाव्य या प्रबंध काव्य की सृष्टि बीकानेर जिले में नहीं हुई क्योंकि शेष हिंदी जगत में विद्वानों के क्षेत्र में जब प्रथम बार स्वस्थ काव्य चेतना का उदय हुआ तब उसमें अस्तित्व और जीवन को सायक बनाने के लिए अनेक रूपों का स्थान पर कुछ रूपों में स्वयं की अनुभूतियाँ का व्यक्त करने के लिए चुना गया । इसमें गीता और मुक्तका में ही प्रायः अनुभूतियाँ व्यक्त हुईं और शिल्प की अनेक रूपों में हिंदी में विकसित हो गई थी उसे यहाँ के कवियों ने सहज ही में अपना लिया । इस प्रकार वे शेष के काव्य में साथ जुड़ गये ।

फिर भी बीकानेर में आलोच्यकाल में काव्य की चेतना जो प्रस्तुत हुई उसमें हिंदी के सभी वादों और प्रवृत्तियों का स्वरूप देखा जा सकता है । इस प्रकार यहाँ के कवियों में हिंदी का काव्य की शीघ्र समय तक नकल की जो अधिक वर्षों तक नहीं चली ।

सन १७८७ से पूर्व जो कवि काव्य सजना में उत्पन्न थे उन्होंने तो अपनी सजतशीलता को बचाये रखा । अनेक और नये कवि जो इस काल के काव्य क्षेत्र में आये उनका भी आग का पछा में कालक्रम की दृष्टि से परिचय दिया जा रहा है इस परिचय में उनकी रचना और प्रवृत्तियों पर ध्यान रखने से विचार किया गया है । उनके जन्म और शिक्षा दिक्षा आदि के सम्बन्ध में परिशिष्ट में उल्लेख किया गया है ।

शम्भूदयाल भवमेना —

शम्भूदयाल सक्सेना का साहित्य के क्षेत्र में बहुत सा योगदान रहा है । उन्होंने कहानी, उपन्यास नाटक और कविता आदि किसी भी क्षेत्र को अज्ञात नहीं रहने दिया है । पर हम यहाँ उनके काव्य की ही चर्चा करना है ।

'मिखारिन' उनका, तम्बी एवं करण रस प्रधान कविताओं का संग्रह है । इसमें कवि मिखारिन और उसके बच्चे की दयनीय दशा का चित्रण करने में पूरा सफल हुआ है । मिखारिन की बेगमूपा एवं उसके बच्चे की दशा के साथ ही साथ उसके मनोभावों का बड़ा ही मार्मिक चित्र कवि ने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है । मिखारिन के धूलि भरे कौनों अचल से युक्त चित्र में करणों को सज उद्वेग करने की क्षमता है ।

“भीना अचल घूलि भरा ।”^१

उसके जीवन का ताना बाना दुखमय है, जिसे वह दिन-रात बुनती है ।

‘दुख का ताना, दुःख का बाना
बुन बुन कर दिन रात बिताना ।’^२

बच्चे को कष्ट से बचाने का हर सफल प्रयत्न करती है । बच्चे की दशा दशनीय है ।

‘मा की गोदी बनी हिंडोला
अचल ही है जिसका बोला ।’^३

भिक्षारिण की याचना के स्वर तो पाठक को द्रवीभूत ही कर देते हैं । इस पर भी दशक दाता नहीं बन पाते उनक पेटपर से हृदय नहीं पिघलते इसलिए तो भिक्षा-रिण कहती है —

‘यह निष्कुर जग है दुर्वासा
समझेगा क्या मा की भाषा’^४

इस पर कुछ उदार और दयालु मनुष्य भिक्षा टाल ही देते हैं उनक लिए भिक्षा-रिण आदिप के अतिरिक्त और क्या दे सकती है —

भला करे भगवान तुम्हारा
चिरजीवी हो दान तुम्हारा ।^५

इस प्रकार कवि अपने भावों को व्यक्त करने में पूर्ण सफल हुआ है और करण-रस के बहाव में कवि स्वयं भी बहा है तथा साथ में पाठक को भी बहा ले गया है । भाषा बहुत ही सरल है तथा उसने भावों का पूर्णतया साथ दिया है ।

‘रैन बसेरा’ कवि की ६८ कविताओं का संग्रह है । इस संग्रह की अधिकतर कविताएँ छायावादी प्रवृत्तियों को लिए हुए हैं । उसी प्रकार के इसमें विषय हैं जस तारे, बादल प्रात सध्या, नदी आदि । इस संग्रह की कुछ कवि

१— दाम्भूदमात सक्नेना	—भिक्षारिण	पृ८५	१२
२—	,	,	१३
३—	,	,	१५
४—	,	,	२५
५—	,	,	७२

साथ प्रकृति विपण की है। कुछ राष्ट्र प्रेम की है। इस सभ्यता की पड़ने से ऐसा लगता है कि सायद कवि नागरिक जीवन में ऊब गया है। इसलिए वह गांव की ओर जाने की बात कहता है —

‘मब बसो गांव की ओर चनें
नगरा में जाता सोट चनें।’^१

यही वही कवि न गरीबी का भी विषय था। पर कवि का मन यहाँ पर रमा नहीं है। वेदना माँग में जहाँ कविता में कवि अपने प्राचीन गौरव का स्मरण कर रहे होते हैं। ‘महायुद्ध कविता में कवि ने युद्ध का दुष्परिणाम एवं प्रलयकारी विनाश को प्रस्तुत किया है। प्रकृति का विनाश भी कवि ने किया है पर जहाँ प्रकृति चित्रण हुआ है यहाँ उगम वृक्षा, प्यास आदि का वर्णन उसका द्वारा कर दिया है। फिर भी कवि की कुछ कविताएँ वास्तव में गुरू बन पड़ी हैं। ‘मिलमिलाता सभ्या तारा’ क्या रोता है शूगल बन में’ वृक्षा मानस में जहाँ ‘गावा की ओर आदि कविताएँ विशेष रूप में पठनीय हैं।

कवि अपने युग के साथ चलता है। समाज मदेव एक जैसा नहीं रहता है, समय के साथ-साथ समाज बनल जाता है और समाज के साथ साहित्य भी। कवि अपनी साध सामग्री समाज से ग्रहण करता है इसलिए जैसा उस कवि का समाज होगा उसका साहित्य भी निश्चित रूप में बसा ही होगा। यदि ऐसा नहीं होता तो वह कवि अपने उद्देश्य में सफल नहीं माना जा सकता है। कवि अपने समय और समाज के साथ चलता है यदि वह इनका साथ छोड़ देता है तो वह बात भी निश्चित है कि समय और समाज भी उसे छोड़ लेते हैं। श्री गम्भूदयाल ने भी युग के बढ़ते चरणों के अनुरूप अपने चरण बढ़ाये हैं। इंग्लिश के जो बल थे वे आज नहीं हैं —

‘बल था जो अब न रहा हू
कह दे वह कोई जाकर।’^२

लेकिन कवि नीहारिका की भूमिका में लिखता है काव्य की पिछली धारा के साथ उसका सम्पर्क सूत्र स्थापित है। वास्तव में देखा जाय तो यह बात कवि के लिए अचिन्त थी जान पड़ती है। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह

१ गम्भूदयाल मन्सना —रन बसेरा पृष्ठ २६

२ गम्भूदयाल सवना नीहारिका पृष्ठ ३५

“नीहारिका” में पछनी काव्य धारा से अपना पिंड नहीं छुड़ा पाया है, और वही पुराना राग झलापने लगा है। वही विषय, वही शैली और वही अत्यानुप्रास का मोह यहाँ भी मिलता है। कवि को छायावादी काव्य धारा से अत्याधिक प्रेम है। कहने को चाहे वह यह कहे कि “कल या जो अब न रहा हूँ” पर ऐसा हुआ नहीं। राष्ट्र प्रेम की कविताएँ इस संग्रह की वास्तव में कुछ सफल कविताएँ कही जा सकती हैं जैम-भारत गीत, विजय का मूल्य शेष अभिनाया आदि। इसके प्रकृति वर्णन में कोई नवीनता नहीं है। कुछ वियोग की कविताएँ भी लिखी हैं। ऐसी कविता में कवि का ध्यान श्यामू बहाना, रोना सिसका आदि अत्युक्ति पूर्ण वर्णन करने में रहा है।

‘मोचा था रो रा कर जलमय एक समुद्र ही बना दूंगा।’^१ कवि तुलसीदास की कविता में अधिक सजग रहा है। शब्द कविता के आदि से लेकर घट तक प्रयोग किया है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इस संग्रह की कविताएँ कल की हैं, उसके युग के साथ चल नहीं पाईं।

“प्रतिवेदन के स्वर” नई कविताओं का संग्रह है। इस समय कवि सक्सेना ने अपना पुराना ढोला बदल कर नवीन धारण किया है। कवि के शब्दों में ‘पुरातन ने नूतन के लिए भाग छोड़ा है।’^२ इस संग्रह की कविताओं के सभी विषय नवीन हैं और अभिव्यक्ति भी नवीन है। ‘दो बहने कविता के द्वारा कवि ने घड़ी की दाता सुइयों का वर्णन किया है। नया कवि अपने दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं का वर्णन करता है। इस संग्रह में भी कुछ इसी प्रकार की वस्तुओं का वर्णन हुआ है। यहाँ कवि राष्ट्रीय भावना से भ्रंत प्रोत है। इसमें लगभग सात-आठ कविताएँ इसी भावना का लेकर लिखी हैं जिसमें चीन को मोचा दिखाया है और राष्ट्रीय अखण्डता का आदेश भारतवासियों के सामने रखा है। कवि ने स्थानिक बर्चन हमर शौल्ड गुटर ब्रुगू आदि महान पुरुषों की भी अपनी कविता का विषय बनाया है। इस संग्रह में माया विवाद, ये उल्लू, यह चादनी रात भारत एक परिचय आदि कविताएँ विशेष पठनीय हैं।

श्री रामभूदयाल के शब्दों में ‘समय के साथ उसकी रचनाओं में नई दृष्टियाँ सामने आती ही रहती हैं।’^३ कवि अपने अधुनातन काव्य संग्रह ‘रत्न

१	रामभूदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृष्ठ २०
२	“	प्रतिवेदन के स्वर	—आमुख
३	“	रत्न रंगु	—प्रवेशक

रेगु' में अपने आपको और अधिक गंभीर बनाने के प्रयत्न में है। वह नर पीढ़ी के साथ चलना चाहता है। पर कवि ऐसा कर नहीं पाया है। कई कविता के विषय हैं—होटल काय गिगरेट आदि और कवि ने पुराने सामाजिक विषय ग्रहण किये हैं जैसे आत्म, चीन, प्रभाव आदि। कवि यहाँ भी छन्द का माह नहीं छाड़ पाया है। उसने एक ही अवयव तोटा मरोटा है। इन कविताओं में वह गहराई नहीं जो कि वास्तव में कविता में आनी चाहिए। एक हल्का स्पर्श है और सग्रह की बोई भी कविता पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ती। कवि ने केवल विषय का ऊपरी स्तर को छुआ है। उसने कई कविता लिखने के लिए नवीन उपमान अवयव नहीं कविता में ग्रहण किये हैं।

इसलिये कि भी इन कविताओं में आकर एक साधारण का अर्थ देख मीन हो जाते हैं। कहने का अर्थ यह है कि इनमें कवि का अर्थ कुछ दुबल ही है। पर इसमें कवि का अधिक दोष नहीं है। शीघ्र कवि के महारों का है जो उसने रम-रम में व्याप्त है और उसने लिये महारों से पोछा छुड़ाना भी सरल नहीं है उसने सस्कारों को छानने का प्रयत्न अवश्य किया है। कवि की सफलता ही इसी प्रयत्न में है। इतना कुछ हान पर भी हम काव्य सग्रह की कुछ कविताएँ अवश्य सुन्दर हैं, जैसे युद्ध का अर्थ दीर्घ रेखा अन्वि स आदि। इन कविताओं के विषय भी गंभीर हैं अर्थ भी गति गाली है और गीतों में भी गीत है।

आचार्य चंद्रमौलि —

स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर आज तक बीकानेर में काव्य साधना करने वाले शम्भूदास सक्सेना के बाद दूसरा स्थान आचार्य चंद्रमौलि का है। इनकी प्रारम्भ से लेकर आज तक जितनी कविताएँ हैं उन कविताओं का आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि का इन सब कविताओं में एक रूप नहीं रहा है। कवि बीकानेर की काव्य धारा का साथ परिवर्तित होता रहा है। इनके मुख्य रूप से दो काव्य सग्रह हैं—वैजयंती और बीधिका। इनके अतिरिक्त कवि ने दो छोटी-छोटी पुस्तकें—पाक की चुनौती और चीन की चुनौती करके भी निकाली हैं। इन दोनों ही में दश भक्ति की कविताएँ हैं और प्रकाशन काल में इनका प्रचार भी बीकानेर में बहुत हुआ। इनके द्वारा कवि ने समय की भांग को पूरा किया है। यह समय ही ऐसा था जब दश का समस्त कवि वगैरे अपनी स्थायी साहित्य साधना छोड़कर देश में स्फूर्ति और

इनके अतिरिक्त 'वैजयंती' में कुछ प्रकृति सम्बन्धी और रस सम्बन्धी कविताएँ भी हैं, पर कवि का अधिक ध्यान तो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् के समय को चित्रण करने में ही रहा है।

इनका दूसरा काव्य सप्ताह 'वीथिका' है इसमें भी अधिकतर गणपति और प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ हैं और कुछ शृंगार रस की कविताएँ हैं। कवि का प्रकृति वर्णन अधिकशः म आलम्बन रूप में हुआ है या उसका मानवीकरण किया गया है।

धूम चली जाती है तहरें
तपित कून का धानन प्यारा' 1
+ + +
इठनाती आई उषा है । 2

पर फिर भी इनके प्रकृति-चित्रण में कहीं भी विशेष आश्चर्यपूर्ण दृष्टिगत नहीं होता।

राष्ट्रीय कविताओं में कवि ने अपने देश का गौरव गाया है। इनमें इतने जा कुछ कहा है उसमें सजना का स्वर अधिक प्रमुख है। वीथिका में अपेक्षा 'वैजयंती' की राष्ट्रीय कविताएँ थोड़ेतर हैं। 'वीथिका' की अनेक कविताओं में गाम्भीर्य का अभाव है। ऐसी कविताओं में कभी तो कवि कहता है

निशा शेष है अभी न जाओ
हुआ नहीं अभिसार है पूरा
रह न जाय वह कही अचूग' 3

और कहीं कहता है

'प्रेम प्रेम के लिए है मेरा, नहीं प्रेम में मैं वहमी हूँ
सुन्दरता का मैं प्रेमी हूँ । 4

इसी प्रकार कभी कवि प्रियतमा को मनाने में लग जाता है । 5

१—	आचार्य चन्द्रमौलि	—वीथिका	पृष्ठ	४८
२—	'			८४
३—	'			३८
४—	'			७४
५—	"	—वीथिका		३७

इस सप्रहा की अनेक कविताएँ कवि सम्मेलना की कविताओं के स्तर से अधिक नहीं बन पाई हैं। कवि का कृतृत्व पद्य इनमें अधिक प्रबल है। कुछ कविताएँ रहस्यवाद की कोटि में भी आती हैं। छन्दनामय, रहस्यमय, प्रियतम, मनचाही मुक्ति, प्रियका-भवगुठन आदि इसी प्रकार की कविताएँ हैं। इनमें कवि की व्यक्तिगत साधना का अभाव है और इसलिये इनमें अनुभूति का छिछनापन दिखाई देता है। आचार्य चन्द्रमौलि की "वैजयन्ती" और 'धोषिका' दोनों काव्य सग्रहों की कविताओं के आचार पर यह कहा जा सकता है कि इनकी कविताओं में भाषा की पुनरावृत्ति अधिक है। वे एक ही बात को कई कविताओं में कह जाते हैं। इसका अतिरिक्त इनकी कविताओं में हृदय स्पष्ट करने की क्षमता कम दृष्टिगत होती है। कवि भाषा का धनी है और छन्द योजना भी अच्छी बन पड़ी है।

आचार्य चन्द्रमौलि ने हास्य और व्यंग्य की कविताएँ भी लिखी हैं। 'कम्पोजीटर' इनकी हास्य रस की कविता है। इसके अतिरिक्त 'पत्नीव्रत ऐलान करा' 'क्यू और ये बालक के स्टूडेन्ट' आदि इनकी हास्य और व्यंग्य की कविताएँ हैं। यह ठीक है कि आज स्त्री और पुरुष को हर क्षेत्र में समान अधिकार हैं पर इन अधिकार में स्त्रियों ने आज घर का काम छोड़कर अपने पतियों को सौंप दिया है इस तथ्य को उन्होंने 'पत्नी व्रत ऐलान करो' कविता में सुन्दर व्यंग्यात्मक ढंग में प्रकट किया है —

'साली घड़ा पड़ा है बब से
जल लाकर जलदान करो
मुनी के बालों में कधी
करके छोटी गूँथ देना —
साथी जम्फर मिले प्रियतम
घोकर हिम्मत दान करो ।'²

इससे और अधिक क्या ही सकता है कि पत्नी पति से अपने कपड़े धुलवाये। इसी प्रकार का करारा व्यंग्य आज की इस क्यू' व्यवस्था पर कवि ने किया है —

‘लेते टिकट वहा लाइन है
 घुमने में लाइन है
 जीने में प्यारे लाइन है
 मरने में लाइन है।’^१

इसी प्रकार इनकी ‘ये कालेज के स्टूडेंट’ कविता में भी अच्छा हास्य और व्यंग्य है।

पिछले दो तीन वर्षों से आचार्य चन्द्रमौलि कुछ नई कविताएँ भी लिख रहे हैं। इन्होंने नई कविताएँ लिखी हैं पर इनकी ये कविताएँ इतनी सफल नहीं हैं जितनी कि इनकी हास्य और ‘यश तथा अय पहल की कविताएँ। हा इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कवि में क्रम बढ विकास होता रहा है और कवि ने समय के साथ कदम बढाने का प्रयास किया है। कहीं कहीं तो ये कविताएँ बिलकुल गद्य ही बन गई हैं जैसे —

गाउ की हुरी भडो
 दिख।ई देती है
 ग्राइन क्लियर है
 तूफान मेल घा रही है।’^२

पर कुछ नई कविताएँ अवश्य ही सफल नहीं जा सकती हैं। जैसे — जीना चाहते हैं —

जीना ता सभी
 जीत हैं।
 हमे सभी का—
 जीना तो
 नहीं जीना है।
 हम तो वही
 जीना है

जिस हम

जीना चाहते हैं।”

१—आचार्य चन्द्रमौलि

२— ‘ ‘

३—आचार्य चन्द्रमौलि

—क्यू कविता से।

—तूफान मेल कविता से

—‘जीना चाहते हैं’ कविता से।

इस कवि की एक बहुत बड़ी विशेषता यह रही है कि कवि अपने समय की काव्य प्रवृत्तियों से पिछड़ा नहीं है, उसने बीकानेर में आगत समस्त साहित्यिक प्रवृत्तियों के स्वर में स्वर मिलाया है और कवि सम्मेलनों में पहुँच कर अपना मवीनतर रूप प्रस्तुत किया है।

चन्द्रदेव शर्मा

१५ अगस्त सन १९४७ से एक नया युग आरम्भ हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही कवियों की जवान पर जो पाब दी थी वह पूरतया हट गई और कवि राजनैतिक सामाजिक सभी बातों को स्पष्ट रूप से कहने लगा। इस प्रभाव से बीकानेर भी अछूता नहीं रहा। चन्द्रदेव शर्मा मनुज, मेघराज मुकुल और गगन-राम पद्यिक उन कवियों में हैं जिन्होंने इस स्वतंत्रता का खुल कर उपयोग किया। ये सब कवि प्रगतिशील थे। इन्होंने अपनी रचनाओं को जन साधारण तक पहुँचाने के लिए 'नई चेतना' पत्रिका भी निरानी।

चन्द्रदेव शर्मा प्रगतिशील कवियों में आये हैं। इनका मुख्य स्वर विद्रोह का है। इनकी कविताएँ व्यंग्य और हास्य से ओत-प्रोत हैं। चन्द्रदेव शर्मा ने हिन्दी आगत को बहुत कुछ दिया और बीकानेर की काव्य धारा में एक तीव्र गति ला दी। उन्होंने कम समय में बहुत अधिक लिखा है। उनकी मृत्यु के उपरान्त उनका एक काव्य संग्रह 'पंडित जी गजब हो रहा है' निकला है, जिसमें उनकी हास्य और व्यंग्यपूर्ण कविताएँ हैं।

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। चन्द्रदेव ने अपने समाज को खुली आँखों से बहुत समीप से देखा। इससे समाज की अच्छाईयाँ और बुराईयाँ छुप न सकीं। रूढ़िवादी समाज उसकी बोधी परम्पराएँ खोजनी आस्थाएँ हल्ला विश्वास और अजरित कुरीतियों आदि ने कवि को विवश कर दिया कि उसने जैसा उन्हें देखा है, उनका वंसा ही चित्रण कर दे, जिससे भावी पीढ़ी सचेत हो जाय। कवि के अपने शब्दों में वर्तमान समाज में मजान पैदा हो गई है कवि का उसी व्यवस्था से विरोध है। वह देखना चाहता है हल्ला समाज के स्थान पर स्वस्थ समाज का निर्माण, तभी वह विद्रोह करता है।¹

'पंडित जी गजब हो रहा है' कविता पुराण पथ पर करारी चोट है।

"सर पिघल गया है ईश्वर का

उसका मस्तक उसका सलाह
 सड़ गया आज,
 कर रहे वहाँ बीड़े बिनबिन ।”¹

इस कविता का अर्थ यह नहीं है कि कवि नास्तिक है । कवि आस्तिक है परन्तु वह पत्थर का पुजारी नहीं है —

मरिचक जो बसता ईन्दवर
 यह तो पत्थर है पत्थर”²

“मुनीम श्यामनाल कवि की प्रथम कृति है जो बंगाल के बाह्य से सम्बन्धित है । किस प्रकार में मुनाफा खोरो ने हजारों को पलम मार डाला, किस प्रकार से भोनी बंगाल की नारिया की इज्जत छीनी आदि का इसमें सजाव विवरण है —

‘उनम थी कुछ जोड़न वाली’
 + + +
 नित नई परी ले आते थे
 रोटी का फग डाल डाल”³

‘विवाह की बात’ में कवि ने समाज पर करारी चोट ली है । उसने दिखाया है कि सामाजिक बंधन के आगे मानव हार मान लेना है —

‘पर दयाराम मत रोघो तुम । हम हिंदू हैं— यह भारत है ।’

+ + +
 चुप रहो पाछनो तुम आँसू नष गया गले जो यहा डोन,
 बस उस बजा ही सुन पाओ, भारत मा की जय डाल ।⁴

रामचन्द्र कह गए सिया से ऐसा कलियुग आयगा उनकी प्रसिद्ध रचना है जिसमें उन्होंने अति आधुनिकता के कृतप्रभाव का बहुत सुन्दर विवरण किया है ।

कवि की लेखनी से समाज का कोई भी दोष अज्ञात नहीं रहा है । राजा

१— स्व० चन्द्रदेव शर्मा	—पण्डित जी गजब हो रहा है	पृष्ठ	८
२—	,	,	६६
३—	,	,	५४
४—	”	”	१२

महाराजा को, नेता, मन्दिर के पंडित आदि सभी की कवि ने आड़े हाथ लिया है और इन सब को जैसे थे हैं वैसे ही इनकी चित्रित किया है —

‘साजमहल होटल में बैठे सब राजा महाराजा
सोच रहे सामंती युग का उठता देख जनाजा —
इस जीवित रहने में अच्छा दारू पी मर जाना ।’¹

‘घेटी तेरे घेटा होगा’, घद्भुत भोपा, रूप का बाजार आदि अनेक व्यापारिक कविताएँ उहाने लिखी है जो आज पत्रिकाओं में बिकरी पडी है या अप्रकाशित है ।

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ कुछ हास्य रस की भी कविताएँ लिख कर हिंदी साहित्य की कमी को पूरा किया है । मालिन, साजन का भ्रम आदि उनकी इसी प्रकार की रचनाएँ हैं । रोमांटिक कविताएँ कवि ने कम लिखी हैं, जितनी लिखी है उनमें ‘पनिहारिन’ उनकी श्रेष्ठ सुन्दर रचना है । पर कवि का मन ऐसी रचना में अधिक नहीं रमा है । यिनीने समाज की नयी दुनिया में उस कभी प्यार नहीं करने दिया ।

सरकारी पद पर अघिष्ठित होने के कारण यह राजनैतिक विषयों पर रूल कर नहीं लिख सकता था । अतः उसे छद्म नाम का आश्रय लेना पडा । इनके जितने छद्म नाम हैं उतने हिंदी साहित्य में किसी भी साहित्यकार के नहीं हैं । चन्द्रदेव शर्मा ने जो कुछ लिखा निर्भोक्ता से लिखा । नई और अनोखी सुभ-तुभ, अछूती कल्पना, सीधी सीधी भाषा में करारी चोट, विनाश में नभ सृजन की प्रेरणा उनके काव्य की विशेषता है । वीकानेर के काव्य जगत में इनका अपना एक युग रहा है और अपने समय में वे वीकानेर काव्य जगत पर छाये रहे । चन्द्रदेव शर्मा ने बहुत से कवियों का निर्माण किया और व्यंग्य की शैली का नया रूप दिया । वे किसी भी वाद से सम्बन्धित नहीं रहे अपितु स्वतंत्र चेतना रहे । आज भी वीकानेर और हिंदी साहित्य उनका ऋणी है ।

पर वीकानेर और हिंदी काव्य-जगत का यह दुर्भाग्य हुआ कि १६ जनवरी, १९५९ को चन्द्रदेव शर्मा का अकस्मात् निधन हुआ गया । फिर यह भी समाचार मिले कि उनके हृदय में गति आ गई है । लोगो ने यही समझा कि चन्द्रदेव यमराज से मजाब करने गया होगा और लौट आया है ।

' ठहरा ठहरा मैं चीख उठा

मैं नरक भला चला क्यों जाऊंगा'¹

शायद उनके इस विद्रोह से घबरा कर यमदूत ने उन्हें छोड़ दिया हो। चारों ओर राशिया के बादल छाये पर कुछ देर बाद हिंदी जगत शोक सागर में डूब गया।

मेघराज मुकुल'

'कविता और संगीत मेरे जन्म के साथी रहे हैं।'² कवि की इस उक्ति से यह स्पष्ट है कि मेघराज 'मुकुल' कवि और गीतकार दोनों हैं। कविता लिखना कोई आसान बात नहीं है और उसे लिख कर गाना तो और भी अधिक कठिन है। पर मुकुल इन दोनों कार्यों को ही बड़ी मफलता के साथ निभाये जा रहे हैं। ये हिंदी और राजस्थानी दोनों में ही लिखते हैं। राजस्थानी की 'सनाली' इनकी बहुत प्रसिद्ध कविता है। इनकी राजस्थानी कविताओं की यह विशेषता है कि वे सभी किसी न किसी ऐतिहासिक वृत्त पर आधारित होती हैं।

मेघराज मुकुल का प्रथम काव्य संग्रह उमंग है। जिसमें हिंदी और राजस्थानी दोनों प्रकार की कविताएँ हैं। हिंदी कविताओं में कुछ राष्ट्रीय प्रेम की कविताएँ हैं, जैसे भारत-वन्दना जन जन जाग रहा है आदि। कुछ कविताएँ प्रगतिवादी काव्य धारा के समीप की हैं। कवि का मुख्य स्वर विद्रोह का है। यह विद्रोह ईश्वर से धर्म और अ-पवित्रता से तथा समाज के शोषक वर्ग आदि से है। इन सब को कवि समाप्त करना चाहता है। इसलिए उसकी सहायु भूति शोषितों की ओर है। वह एक कविता में उनका चित्र इस प्रकार से प्रस्तुत करता है —

नगो पड़ो घरा यो पहले, भूख स्वयं अब नया है।

माँ की छाती से चिपटे शिशु की जीन की तगो है ॥³

इसी प्रकार कवि मायताओं के बारे में कहता है

शक्ति छो बँठी पुरानी मायताएँ,⁴

+ + +

१— चन्द्रदेव शर्मा	—नरक विद्रोह कविता से		
२— मेघराज मुकुल	—उमंग	पृष्ठ	५
३—	"	,	२०
४—	"	,	५३

‘जीएँ पुरातन परम्परा से पलना छूटा ।’^१

कवि देव भनुज्य को अधिक थोँठ समझता है । इसलिए कहता है —

‘आज कितने देव जिनको मनुजता स्वीकार है ?

मैं नया मानव जिस देवत्व में झन्कार है ॥’^२

इस सग्रह में अधिकतर लय युक्त कविताएँ हैं । वषय विषय को चित्रित करने में कवि सफल हुआ है । कवि की भाषा में राजस्थानी शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

मेघराज मुकुल का दूसरा काव्य सग्रह ‘मनुजुज’ सन् १९६७ में प्रकाशित हुआ जिसमें उसकी ४१ कविताएँ हैं । इस सग्रह की अधिकतर कविताएँ उस समय की लिखी हुई हैं जब चीन ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था । स्वयं कवि ने इस बात को स्वीकार किया है ‘मनुजुज’ कविता सग्रह शक्ति के क्षणों का मृजन है, जिसमें देव की भावनाएँ एक रस होकर व्यक्त हुई हैं । अधिकतर कविताएँ सन् १९६३ की हैं जब आततायी ने हम पावन भूमि पर अपनी कुदृष्टि डाली थी।’^३

कवि अपने समय से बहुत अधिक प्रभावित होता है । समय की माँग को वह ठुकरा नहीं सकता है । कवि ने इसमें जिस प्रकार की कविताएँ लिखी उनकी उस समय वास्तव में आवश्यकता थी । क्योंकि इस सग्रह की अधिकतर कविताएँ सन् १९६३ में लिखी हुई हैं । इन कविताओं के आधार पर एक बात यह भी कही जा सकती है कि इनमें कवि का आशावादी स्वर बहुत प्रबल होकर उभरा है ।

राजस्थान में चारण परम्परा बहुत समय तक रही है । यद्यपि मुकुल का यह काव्य चारण परम्परा में नहीं आता । फिर आक्रमण के सदम में उनका यह रूप उभरा ही जिसमें त्याग और शौर्य की प्रमुखता रही है । माता, बहन, पत्नी आदि सभी अपने देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को सदैव तैयार रहो हैं । युद्ध के समय में किसी भी वीर के रास्त में पारिवारिक बंधन नहीं

१—मेघराज मुकुल	—उमर	पृष्ठ ६
२— , ,	,	२३
३— , ,	—मनुजुज—‘शक्ति के क्षणों का मृजन’ शीर्षक में	

है अपितु उसकी मां, बहन और पत्नी उसे मातभूमि की रक्षा के प्रति उसी
उसका कतव्य समझती है, जैसे वीर की जननी कहती है —

बेटा तरी कूख उजागर तब ही होगी
जब तू तरी मा पर मिट जाएगा ।¹

वार पत्नी की भावनाएँ भी वीर के उत्साह को ही बढ़ाती हैं —

‘घ य होऊँगा अगर तुम, घ व मे निजतन सजाये
ने विजय थी साथ अपन देहरी पर लौट आय ।
और यदि सयोग वस तुमको बहा मरना पडे तो,
घ य होऊँगी, यही मुन देश क तुम काम आए ।’²

एक तरफ सोमा का प्रहरी सिपाही है दूसरी ओर उसकी पत्नी है।
पत्नी विजय थी लाने को लिख कर भेजती है, मा का अनुरोध है कि वह भारत
माता का ही अपना असली मा माने । बाहन अपने घागे की याद लिखाती है —

‘भैया अपनी यह मजबूत कलाई देखो
इसमे मैंन दा घागे की राखी बाधी ।
ये दो घागे आन-वान के ही प्रतीक हैं ।’³

कवि अपने देश के सिपाहियों का अपनी इसी मातभूमि के लिये बौद्धाव
होने वाले शहीदा की याद दिलाता है —

यहा शिवाजी लक्ष्मी बाई, बलिदानो की कह कहानी ।
यह प्रताप की ज म-भूमि सघर्षों को द रही जवाग ।⁴

घात भी स्पष्ट है कि भारतवर्ष की प्राकृतिक शक्तियाँ भी भारतवर्ष की रक्षा
करती रही हैं । इन प्राकृतिक शक्तियों का इस दृष्टि से बहुत महत्व है —

‘दर्फीले हिमगिरी का अंतर घघक रहा है,
अब युग युग स सोया शोला भडक रहा है ।

१—मधराज मुकुल	— अनुगुज	पृष्ठ ४८
२—' "	—	" ४१
२—" "	—	" ४२
४— " ,	—,	६

घनु ! आग से खेल ,न कर हिम गल जायेगा
ज्वालामुखी रूप घर तुझे निगल जायेगा ।' १

क्याकि कविता चीन आक्रमण के समय की है। अत चीन को बहुत अधिक फटकारा है —

जाने कौसी माँ ने जन्म दिया था तुमको
जान किम धरती ने भार तुम्हारे कौने

+ + +

भूठा तुम्हारा जनक, मा तुम्हारी है छलना,
कपट जाल मे गम धारणा हुई तुम्हारी ।' २

सभी कविताया की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि मे बहुत ही अच्छी कविताएँ हैं। बोकानेर के कवियों मे इस प्रकार का यह एक ही सग्रह है। मेघराज मुकुल ने जयपुर रचे हुए 'पथ के पुनीत पाव' काव्य सग्रह और लिखा है।

मालदान देवावत 'मनुज'

मालदान देवावत मनुज देशनोक म पैदा हुए और इन्होंने अपनी शिक्षा देशनोक और बोकानेर मे प्राप्त की। साहित्य से इनको बचपन से ही रुचि थी इसलिये इ होने छोटी उम्र मे कविताएँ लिखना आरम्भ कर दिया था। कवि ने ज्यादातर कविताएँ सामाजिक रुद्धियो धार्मिक अंधविश्वासा के विरुद्ध ही लिखी पर बोकानेर काव्य जगत का दुर्भाग्य यह है कि 'मनुज सन् १९५३ मे रेल दुघटना क शिकार हो गये। कवि समय से ही पहले चल बसा। अभी तो उमम नही नही टड्डनिघा, नवीन नवीन कोपले और किसलय फूट रहे थे, कि अचानक वह क्रूर काल के द्वारा जला दिया गया। इस अभाव का पाव भर जाना कठिन है।

'मनुज' की मृत्यु के बाद इनकी कविताओ का 'विप्लवगान' के नाम से एक सग्रह छपा। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, कवि का मुख्य स्वर इसमे विप्लव का रहा है, जैसे —

'मेँ विप्लव का कवि हूँ मेरे गीत चिर तन' ३

१—मेघराज मुकुल	—मनुज	पृष्ठ ५९
२—	"	, ४५
३—मालदान देवावत 'मनुज'	—विप्लवगान	पृष्ठ २५

इस समय (सन् १९५०-५३) जो कविताएँ लिखी जा रही थी उनमें विद्रोह स्वर प्रमुख था। अतः मनुज का उससे विरक्त रहना कठिन था। इस स (विप्लवगान) की कुछ कविताएँ बर्णनात्मक हैं। कवि राजस्थान में पैदा हुए यही घटा हुआ। अतः मरुभूमि में उनका प्रेम होना स्वाभाविक ही था। कवि लिए मरुपर का गाव इन्द्रपुरी से भी बढकर है —

‘तुम इन्द्रपुरी से सुन्दर थे
मेरे मरुपर के सुगढ ग्राम,
तरे रेततीले घोरो पर
उत्लास बिछाती मुबह क्षाम।’^१

कवि अपनी कविताएँ में त्यौहारों और उनके गीतों का मोह भी नहीं छोड़ पा है —

फिर तीज्यों का त्यौहार सुन्दर
सदियों का मादक गीत मधुर
झूलो का मस्त ऊँचीरो पर
जात उर उर के अरमान बिलर।^२

कुछ कविताएँ उदबोधनात्मक हैं। ऐसी सभी कविताओं में कवि युग की पतनी-मृतता से पीड़ित है और उसे जगाना चाहता है। इसलिए वह के कवि की नवीन रूप में प्रस्तुत होने के लिए आह्वान करता है। वह चाहता है कि वह वसुधरा का उर के छासे भी देखे —

तुमने उस मादक मस्ती के
मधुमय गीत बहुत लिख डाल,
किन्तु कभी क्या देखे तुमने
वसुधरा का उर के छासे ?^३

कवि को इतने से ही सतोष नहीं होता वह तो युग कवि पर व्यथित है —

१—मालदान देपावत मनुज ^१	—विप्लवगान	पृष्ठ ३३-
३— , , ,		३३
४— , , ,		५५

काव्य संग्रह में डा० पुष्कर दत्त शर्मा की कुछ कविताएँ हैं। इस संग्रह की कविताएँ और उसके बाद की कविताओं से ऐसा लगता है कि बहुत ही प्रयास करके कविताएँ लिखी हैं। जिस प्रकार से कवि भाव मग्न हो कर कविता लिखता है वह बात इनकी कविताओं में नहीं है। इसलिए इनकी कविताएँ भावनाओं का स्पर्श कम करती हैं। कविताओं में बोद्धिकता की अधिकता है और अनुभूति की कमी पायी जाती है। 'सासो का चक्रव्यूह' और 'रात का टिनर' ऐसी ही कविताएँ हैं जिनमें अनुभूति की कमी है। इनकी कुछ एक कविताओं में रूपक काफ़ी लम्बे हैं। 'सवेदन इति' में एक इसी प्रकार की कविता है —

“मायूसिया की भेल ट्रेन पर

भागता सा जा चढा हूँ

बिना टिकट

बिना पूछे

+ + +

घ तश्चेतना का टी० टी० मामने खडा है

+ + +

टी० टी० चला गया है

प्रसादन की पनल्टी लगा कर १

डा० पुष्करदत्त शर्मा की कुछ एक कविताएँ काफ़ी सशक्त भी हैं। जिनमें अनुभूति की कमी नहीं खटकती। 'साइसक्रीम' इनकी इसी प्रकार की कविता है। निश्चित मायताओं और विचारों की पुष्टि में लिखी गई कविताएँ बोद्धिकता के घरातल पर बँठी प्रतीत होती हैं। जिनमें विषय की एकरूपता अधिक है।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय कविताएँ भी लिखी हैं। चीन के आक्रमण के समय में लिखी हुई इनकी यह कविता जिसमें इन्होंने अपने देश की एकता की ओर दुश्मन का ध्यान दिलाया है और साथ ही अपने सिपाहियों का भी प्रह्व बताना चाहा है कि दुश्मन के पास अपना कुछ भी नहीं है। सब पराया है और पराई वस्तु दूसरे देश की रक्षा नहीं कर सकती —

आज उसकी फौज में ताकत पराई

आज उसकी याज्ञानमें सब पराई

वह भुना बंटा

पराए दास्य से बच तब लडेगा

पराई युद्धि भी बच तब चलेगी ।"¹

उपर वह दुश्मन को ललकारता हुआ कहता है कि —

“याद रखे वह

कि भारत भूत नहीं गबता

कही फिर रच नहीं सबता

सहन वह कर नहीं सबता

बिसी का प्राक्रमण

बिसी का अतिक्रमण”²

कवि ने अपनी इस कविता में दुश्मन की कमजारी और भारत का गौरव दोनों को ही साध-साध चित्रित किया है। भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है। राष्ट्रीय कविताओं में तो कवि ने बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है। अन्य कविताओं में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया है।

राजानंद भटनागर —

बीकानेर के राज के कवियों में राजानंद भटनागर का भी अपना एक स्थान है। यहाँ की काव्य चेतना में इनका योगदान रहा है। इन्होंने जितनी भी कविताएँ लिखी हैं वे सब नई कविताएँ हैं। कवि ने समय की माँग को ध्यान ही समझा है। इनकी ऐसी अनेक कविताएँ हैं जो किसी प्रकार का विषय प्रस्तुत नहीं करती। ‘युग विवेक’, ‘ग्राम्य’ और ‘विश्वास’ आदि कविताओं में अति साधारण अभिव्यक्ति है। इनकी कुछ कविताएँ रूढिग्रस्त हैं और शिल्प की दृष्टि से भी प्राचीन सटहर जैसी लगती हैं। “शायद दयता” इसी प्रकार की कविता है। कवि ने कुछ अनास्था युक्त कविताएँ लिखी हैं। जिनको उन्होंने ‘घुटन न० १’, “घुटन न०-२” और ‘घुटन न० ३’ शीर्षकों में बाँधा है। ‘घुटन न०-१’ में सपाठ अभिव्यक्ति है। “घुटन न० २” में अवश्य ही कहने का ढग बहुत अच्छा है और बध्य रूप में समाज में प्रचलित और परिचित चित्र प्रस्तुत किये हैं।

१— स० सहिता

२— ”

विजय हमारी है

पृष्ठ २१

, , २२

कुछ कविताओं में कवि का चित्त तन बहुत गम्भीर है और अभिव्यक्ति में भी गाम्भीर्य बना हुआ है। "जिन्दगी" और 'वाट्टेज' इनकी ऐसी ही कविताएँ हैं। राजानन्द की कुछ कविताओं में व्यंग्य भी है। कवि का जीवन भीड़ से भावद्वेष है। वह भीड़ में एकाकीपन अनुभव करता है और अपने आप को छिपाना चाहता है जैसे—

“मेरा भीड़ में सिकुड़ा हुआ
व्यक्तित्व
+ + +
मेरा अकेलापन
स्वतंत्र नहीं, प्रतिबद्ध है
उनसे
जिनमें मैं भीड़ में
हमेशा अलग
तटस्थ
और अनमिला रहता हूँ।”^१

भाषा भावानुकूल है। कवि ने कहीं कहीं अश्रेणी शब्दों का भी प्रयोग किया है। परन्तु उससे भावाभिव्यक्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं आयी है।

काह महर्षि

काह महर्षि ने राष्ट्रीय, हास्य और प्रेम सम्बन्धी कुछ कविताएँ लिखी हैं। कवि की ये कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं तथा एक कविता 'विजय हमारी है'^२ में भी प्रकाशित हुई है। कवि जितना राष्ट्रीय कविता में सफल हुआ है उतना अन्य कविताओं में नहीं। इसलिए कवि ने इससे सम्बन्धित कविताएँ लिखी भी कुछ अधिक हैं। आजादी को बनाय रखने के लिये कवि आरम्भ बलिदान चाहता है—

‘कायम रहती है आजादी
बलिदानों से नये स
धीरे विमुक्त बच हुए

१— राजानन्द भटनागर की एक कविता से

कहा पर हार जीत के भय से
परवानो ने कब सीखा है
घुट-घुट कर मर घाना ।¹

एक हास्य रस की कविता में कवि दाढी का वर्णन करता हुआ लिखता

है —

“इस महा समस्या के कारण
माकों दम नित खटपट है
हम से लो महिलाएँ अच्छी
जिनका मदान सफाचट है ।”²

कवि का यह एक प्रयास मात्र है । कवि ने प्रेम का भी चित्रण किया है —

‘मचल जवानो वल खाती है
वहा कहानी बन जाती है ।’³

कवि की इन सभी रचनाओं को दलने से एक बात तो स्पष्ट है कि कवि अपने त्रिलो घोर समय से बहुत पीछे है । कवि आज भी छायावादी युग में बैठा प्रकृतिय पेम की रंगीनी दुनिया में विश्वरण कर रहा है ।

बल्लभेश दिवाकर —

कवि और गीतकार बल्लभेश दिवाकर का प्रथम काव्य संग्रह ‘नई वाणी’ सन १९५५ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । इसमें कवि की कबल सोलह रचनाएँ हैं । ‘नई वाणी’ का कवि पूरा रूप से चेतनाशील है । कवि ने इसमें भीतिकवादी युग की घोर दृशारा किया है । आज नगरों में मनुष्य से पैसे की कीमत कहीं अधिक है । इसी बात को कवि कहता है —

पूजो की महता बढी, विपमता छाई
मानव मान के बीच पड गई खाई ।”⁴

दिवाकर का दृष्टिकोण आशावादी है । उन्हें मनुष्य की अज्ञातियों से प्यार है । इस बात की डा० मत्सेन्द्र ने भी ‘नई वाणी’ के ‘दो शब्दा’ में लिखा है ।

- | | |
|-------------------|-------------------------------------|
| १— काहू महर्षि | बहुता लोहित तिलक लगाओ गाओ गीत तराना |
| २— “ ” | “दाढी” कविता से |
| ३— “ ” | “प्यार” कविता से |
| ४— बल्लभेश दिवाकर | ‘नई वाणी’ |

कवि आशावादी है और यह उसकी रचनाओं की एक बहुत बड़ी विशेषता है।^१ कवि के जीवन का यह प्रथम प्रयास है। पर इस आशावादी दृष्टिकोण के कारण आज इतना सफल हो पाया है।

“ओ समाज के कुण्ठित प्राणी” कविता विशेष रूप से भारतीय समाज को लक्ष्य करके लिखी गई है।

‘दिवारो म बंद नारिया

सिसक-सिसक दम तोड़ रही है।”^२

कवि की यह नई वाणी वास्तव में समाज के लिये एक नई वाणी है। मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने का कवि ने बहुत प्रयत्न किया है। आज व समाज की कुरीतियाँ पर भी कवि ने चोट की है। कवि स्वयं कमनीय है। इस बात को स्पष्ट व सरल शब्दों में व्यक्त करता है—

नाम जग दे या न दे मैं

काम निज करता रहूँगा।’

कवि को नाम की भूल नहीं है वह तो अपना काम करना चाहता है।

“मैं गीत सुनाता जाऊँगा कवि का दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें सन १९५५ से लेकर ६३ तक की रचनाएँ हैं। इसमें इनकी रचनाएँ आदर्शवाद व यथायथा के बीच क पथ से गुजरती हुई प्रगतिवादी मंदान में खड़ी होकर प्रयोगवाद की सम्बोधित जाती है। दिवाकर मूल रूप से गीतकार हैं। इस बात को कहोने स्वयं ने स्वीकारा है—

जि दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

इसलिये बस जी रहा हूँ गीत गाने के लिये।^४

इस संग्रह में कुछ तो राष्ट्रीय प्रेम की रचनाएँ हैं जैसे ‘मेरा हिन्दुस्तान,’ “देग निराला’ आदि। अन्य रचनाओं में जि दगी का दद मानव की पीड़ा और समाज के उन बंधनों को तोड़ने की दद भरी आवाज है जिनमें हमारा सामाजिक जीवन जकड़ा हुआ है। उन बंधनों को तोड़ने का कवि ने प्रयत्न किया है। दिवाकर के अनुसार हृदय का दापक जलाना चाहिये, मिट्टी के दीपक जलान पर तो आत्म

१	बल्लभेश दिवाकर	—नई वाणी	पृष्ठ ८
२	”	— ”	” ८६
३	”	— ”	पृष्ठ ३०
४	”	—मैं गीत सुनाता जाऊँगा	’ २२

प्रकाश नहीं होगा और इसलिए उससे बहू-बेटियों का अस्मत् बिकना नहीं खेगा ।

“क्या इसमें बहू बहू बेटों का अस्मत् बिकना रूका वही ।”¹

कवि में प्रेम अवश्य है पर दद भरा हुआ है । वह प्रेम भी करना चाहता है पर ठोक बजा कर —

“प्यार मुझ से है तो जसना सीखले

प्यार मुझ से है तो मरना सीखले ।”²

इस सग्रह की सभी रचनाओं के बारे में यही कहा जा सकता है सारे ससार का दुख दद अपने दामन में समेट कर इस ससार को भ्रमन, चैन राहत और खुशी के गीत बरफ देना इनका पूरा लक्ष्य है ।

रचना शिल्प पुराना है पर रोचक अवश्य है ।

‘मैं एकाकी नहीं चूंगा’ दिवाकर का तीसरा सग्रह है जो सन् १९६६ में प्रकाशित हुआ । इसमें ६३ से ६६ तक की कविताएँ हैं । समझ में नहीं आता कि किस कारण से कवि ने यह सग्रह निबाला है क्योंकि इसमें कुल ३१ कविताएँ और गीत हैं जिनमें से २३ ‘मैं गीत सुनाता जाऊंगा’ सग्रह में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी ।

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से जीवन चलाने पर हम सब कहीं न कहीं नोक-तान की हत्या के कारण न बन जायें इस वेदना में कवि पीड़ित है । कवि किसी भी प्रकार के वाद से बचा हुआ नहीं है । इसका प्रमाण है उसकी राष्ट्रीय कविताएँ विदवास गीत, ‘मैं’ आग बफ में लगी धून से मुक्तारोगे’ आदि कविताओं में जहाँ उसने हमारे राष्ट्रीय सकट के प्रति चुनौती पूरा आस्था प्रकट की है वहाँ भरा हिन्दुस्तान, ‘देश निराला ‘बोल जय भारती’ में राष्ट्रीय प्रेम भी प्रसर हुआ है । इन कविताओं से स्पष्ट हो जाता है कि कवि भारतीय आत्मा को समझा है —

‘हमने मानव की सासों को बख्शा शाश्वत प्यार है

हमें विश्व को कुछ कहने का इसीलिये अधिकार है ।”³

इनकी कुछ कविताओं में यौवन का उद्गम वेग है पर वह ज्वालामुखी

१	“	“	—मैं गीत सुनाता जाऊंगा	पृष्ठ ४७
२	“	“	— “ “	पृष्ठ ६
३	“	“	—मैं एकाकी नहीं चूंगा	पृष्ठ ४०

की विनाशकारी अग्नि नहीं है। वह सूर्य का प्रचण्ड ताप है जो जीवन को उष्णता और प्रकाश प्रदान करता है। कवि बिछड़ने का नहीं मिलाने का काम कर रहा है—

‘हर वियोगी को मिलन दे रहा हर प्रयोग को चरण दे रहा।’^१

इस सग्रह की कुछ कविताएँ भाव और कला दानो दृष्टियों से बहुत प्रौढ रूप में प्रस्तुत हुई हैं।

मोतीचन्द खजाची —

बीकानेर में छायावादी प्रवृत्ति की कविताएँ लिखने वाले कवियों में मोतीचन्द खजाची भी हैं। जैसे इन्होंने काफी कविताएँ लिख रखी हैं पर इन्होंने मन् १९५६ के बाद कोई कविता नहीं लिखी।

कवि ने अधिकतर कविताओं में मिलन विरह और प्रकृति का वर्णन किया है। कवि महादेवी के पदचिह्नो पर चल कर प्रेम भाग दर्शन और निर्वाण प्राप्ति का साधन मानता है —

चल अकेली दूर तट पर
प्रिय मिलन मत मोति भ्रम कर
रनेह का दीपक जला ले
राह बीहड़ तू अकेली
प्रेम में निर्वाण है री।’^२

उस पार चल सभे उस पार आदि कविताओं में भी इसी प्रकार से मिलन की बात है। वही इस प्रिय मिलन में कवि ने आध्यात्मिक मिलन की ओर भी संकेत किया है पर यह संकेत बहुत अस्पष्ट और कम है।

विरह की कविताओं में कवि ने अपने आप को सुमिश्रानदन पत की तरह स्था क रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे —

‘भ्रम बीणा के तारो पर सखी
मैं विरह के गीत गाती
+ + +
गायिका मैं हूँ अक्ली नीद कैसे।’^३

१—वल्गुभेग दिवाकर

२—मोती चन्द खजाची

३— ’ ’

— मैं एकाकी नहीं चलूँगा’ पृष्ठ ६७

— प्रेम में निर्वाण है री’ कविता में

— मैं विरह का गीत गाती कविता से

कही विरहिन को दीपक सी जलती रहती रूप म चित्रित किया है । मिलन और विरह दोनों प्रकार की कविताओं के आधार पर ऐसा लगता है कि मिलन की अपेक्षा विरह वर्णन म कवि का मन अधिक रमा है ।

कवि की भाषा म कही बिलप्टता नहीं है ।

रामदेव आचाय —

रामदेव आचाय का प्रथम काव्य संग्रह 'अक्षरा का विद्रोह' अगस्त १९५८ मे प्रकाशित हुआ । इसम इनकी नौ तरह की कविताएँ हैं, लघु कविताएँ और लम्बी कविताएँ । इस संग्रह क अतिरिक्त रामदेव आचाय की कुछ कविताएँ 'सर्वेभ्य इति' म भी प्रकाशित हुई हैं (जो इस संग्रह म आ गई हैं) तथा अन्य पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित होती रहती हैं ।

दोनों प्रकार की कविताओं मे कवि का मुख्य स्वर व्यंग्य का है । कवि ने बहुत ही तीव्र और गम्भीर व्यंग्य प्रस्तुत किये हैं । य व्यंग्य आज के मानव जाति के समाज आदि की व्यवस्था आदि सभी पर है । आज की शासन व्यवस्था पर यह एक करारी चोट है ।

ओ रे भौंरू जीव !

यह नहीं भाग्य का गान

कि छोटे ढोंग वाक्

औ' गये चबाये पान ।' १

इस प्रकार इनकी 'मसीहा' कविता आज की दलब धी पर व्यंग्य है । 'विद्रूपता', 'तीन समानताएँ' कौवे और आदमी आदि कविताओं म सामाजिक व्यंग्य अधिक सुलभित हुआ है । इन कविताओं मे रामदेव आचाय का कवि रूप निखरा है । जैसे इनकी 'विद्रूपता' कविता मे यह व्यंग्य का चित्र भी दृष्टव्य है —

'सभी राक्षस

राम-भक्त हो गये हैं,

सभी निकम्मे

व्यस्त हो गये हैं

कुसियो ॥ चिपक गये हैं,

सभी विभीषण
 नेता बन गये है
 सभी तोत और मँना
 'राम राम' रट कर
 गिदक हो गये है ।¹

आज के इस भौतिक युग में मनुष्य का अन्वमूल्यन हो रहा है और बर वस्तुस्तर पर धा रहा है इससे कवि को असंतोष है वह तो पुन आदमी को तलाश में है, और सामान्य वस्तु से अपना पथक अस्तित्व सिद्ध करना चाहता है —

मैं कोई वाहन तो नहीं हूँ
 कि जब चाहो तब सवारी करलो
 मैं कोई चादर तो नहीं हूँ
 कि जब चाहो तब बिछा लो
 जब चाहो तब झोठ लो

+ + +

मैं कुछ और हूँ
 मैं आदमी हूँ ।²

कवि की कुछ कविताओं में सरलता की अधिकता है और गम्भीरता की कमी है। कवि की कुछ कविताओं में रोमांटिक स्वर है। कुछ कविताओं में कहीं कहीं भावों की पुनरावृत्ति भी हो गई है जैसे इनकी 'माओ मेरे साथ माओ' कविता है। कवि ने बहुत सी कविताओं में कथोपकथन शैली को अपनाया है। कवि की भाषा में उसके भावों का साथ दिया है। भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार दृष्टिगोचर होता है।

भवानीशकर व्यास 'विनोद'

बीकानेर की नई पीढ़ी के कवियों में भवानी शकर व्यास 'विनोद' हास्य रस के प्रतिष्ठ कवि हैं। इनका काव्य संग्रह 'मुझे हसी आती है' में सन

१—रामदेव धाचाय

२— " "

—अक्षरा का विद्रोह

— " "

१९६६ तक की कविताएँ हैं। इस सग्रह में दो प्रकार की कविताएँ हैं—हास्य रस युक्त और राष्ट्रीय भावना युक्त। हास्य में वही पर भी भद्रापन नहीं पाया है। इनकी हास्य की कविताएँ अनेक विषयों पर हैं। आपकी लोकप्रिय रचनाएँ—रोनीला चदमा, इसलिए तो बड़े नमस्कार में गजा का लोहा मानूँ, चोटी दाढ़ी, मूँछे आदि हैं। चदमे के अभाव में किसी चदमे बाज पर क्या गुजरती है —

‘माता सीता को ये सज्जन मालासिंहा पढ़ जाए ॥

ये पढ़ते भरत को भात और हल्का को पढ़ जाए हल्का ।

+ + +

आ रहा सामने बैल उसी से मिनने भी जा सकते हैं ॥

हो भरत मिलाप उहाँ ऐसा फुटबाल आप बन जाएँगे ।’^१

इसी प्रकार तींद का घणन भी हुआ है —

‘इनका है मोटा पेट सब जगह इनको मिलती है ।

लेकिन ढाँगे में मुश्किल से ही इन्हें इजाजत मिलती है ।’^२

+ + +

सोए रहते हैं आप नाक से बाजा बजता जाता है ।’^३

व्यास की कविता में श्रोता एवं पाठक को हँसा कर लोट पोटा कर देने की शक्ति है।

इस सग्रह में व्यास की हास्येतर कविताओं में राष्ट्र प्रेम की झलक, शोषण, उत्पीड़न और सामाजिक कुस्ताओं के विरुद्ध प्रबल विद्रोह है। शोषकों का ताड़व नृत्य, भ्रष्टाचारी और उसके द्वारा जकड़े समाज का बरणाजक विचरण को अवश्य किया है पर कवि उसकी विभीषिका को देखकर भोग अयय हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का मन जितना हास्य रस की कविता में रमा है उतना अन्य कविताओं में नहीं।

१—मवानीसकर व्यास 'विनोद'	—गुंके हसी घासी है	पृष्ठ ६-७
२—"	" "	" १
३—"	" "	" ३

भवानीशंकर व्यास का दूसरा काव्य संग्रह 'हास्यमेव जयते' है। इस संग्रह में कुल बाइस कविताएँ हैं जिनमें से नौ कविताएँ तो वही हैं जो 'मुझ हूँ श्रांती है' में हैं बाकी सभी नवीन कविताएँ भी हास्य रस की ही हैं परन्तु पहले की हास्य रस की कविता और इन कविताओं में एक विशेष अंतर है। वह यह कि प्रथम संग्रह की हास्य रस की कविताओं में व्यंग्य नहीं है और इन की भाँसा में हास्य व्यंग्य से लिपटा हुआ। कहीं कहीं पर तो व्यंग्य बहुत ही प्रधान हो गया है। कवि को इन कविताओं में व्यंग्य एक विशेष ढंग से प्रस्तुत हुआ है। कविता का प्रारम्भ साधारण हास्य से है। खटमल का बणन करते हुए कवि कहता है —

साड़ी ब्लाउज, बुशट पट सब जगह आप घुसपैठ करें।

भूमि मारी गोपाल की है खटके आप चरें विचरें ॥¹

परन्तु यह शुद्ध हास्य खिसक कर सामाजिक व्यंग्य में परिणत हो जाता है और सामाजिक खटमलो की बात करना लगता है —

'रातो के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल है खटरनाक ॥

बहियो क खटमल अमर बेर ज्या खुद ही पात रहत हैं ॥'

आज भारतवर्ष में जनसंख्या की समस्या बहुत प्रबल होती जा रही है। और हर स्थान पर परिवार नियोजन का पखवाडे मनाये जात है। हर बड़े परिवार नियोजन की बात करता है। बेटी चाहे छूप लगाने पर मा ऐसा नहीं करती —

बेटियाँ छूप लगवाती है माताप जाती रहती है'²

+ + +

छ छ बच्चों के बाप लाभ बतनात लघु परिवारों का ॥³

इसी प्रकार कवि ने रिश्वत खोरा नेताओं बनियो और चला देने वालों पर व्यंग्य किया है।

य बसूल करके खा जात हैं गींगाला के भी चन्दे ॥

गामा का लेकर नाम आप चटा बडोरते फिरते हैं ॥

१—भवानी शंकर व्यास	—हास्यमेव जयते	पृष्ठ १
२— " "		३
३— " "		१३
४—		१४

गायें चरती है घास और गी सेवक चंगा चरते हैं" ॥^१

परन्तु ये सभी व्यंग्य हास्य में निहित हैं । कवि हसता भी है और तीखी मार भी करता जाता है । इस प्रकार की कविताआ क अतिरिक्त सग्रह म कुछ कुछ हास्य की कविताए हैं जिनमे किसी भी प्रकार का व्यंग्य नहीं है । व्यंग्य भ्रोग हास्य के लिए कवि ने प्रत्यक भाषा के शब्दा वा अंगना लिया है । ऐसा करने से कवि की कविता प्रभावदायी बन गई है ।

श्रीकानर म हास्य रस की बहुत कम कविताए लिखी गई है । व्यास स पहल च द्रदेव शर्मा ने अवश्य ही हास्य रस की कविताए लिखी थी उसी काय का इहाने धामे बढ़ाया है । कबल श्रीकानर ही नहीं यदि हम हि ती माहित्य के इतिहास पर भी एक दृष्टि डालें ता हम पता चलेगा कि हि दो म हास्य रस का अभाव सा है । वीरगाथा काल के कवियों का ध्यान अपने धायय दाताआ की प्रशंसा तक ही सीमित था । भक्तिकाल के कवियों का ध्यान अपने इष्ट देवता के सामने दोष गिनाने मे या भगवान की लीलाया म ही व्यनीत हुआ । रीतिकाल क कवियों की लेखनी नायिका क नख शिष्य से धामे न जा सकी । आधुनिक काल म अवश्य ही हास्य की कुछ कविताए लिखी गई हैं इस दृष्टि मे भवानीशकर व्यास का यह यागदान हिन्दी काव्य के लिए महत्वपूर्ण है ।

डॉ० मदन केवलिया—

श्रीकानर की नयी पीढी के कवियों म डॉ० मदन केवलिया का भी स्थान है । आप कहानिया और कविताए दोनो ही लिखते हैं । इनकी कविताए प्राय पत्रिकाया मे प्रकाशित होती रहती है । इनकी कविताए अधिक लम्बी नहीं है छोटी कविता मे भी य बहुत कुछ कह पाते हैं । इनकी बहुत सी कविताआ म मार्मिक व्यंग्य छिपा रहता है । लेकिन वह व्यंग्य कभी हास्य मे लिपट कर और कभी रोमा स मे लिपट कर पाठकों के सामने आता है । इनका व्यंग्य समाज है । एक अस्पताल पर कविता है —

“खून रहित चेहरा की सफेदी
चाक्षरा पर फैल जाती है
मौत के मडरात साया को देख कर
और इधर — कहकहे उठते हैं
ह्यूटी रूम मे इन्कार के

घोर फिर इतरार के ।”^१

आज की भौतिक सम्मता ने भारत को पंगन के नाम पर नग्नता (१) या अर्द्ध नग्नता दी है । कवि की दृष्टि उस पर पहुँचती है और भाव की नव युवती पर जो व्यंग्य कवि करता है वह बहो की शोरी में अधिक प्रसर और मुखर हो गया है ।

‘साज

लडकियाँ व बपटा म नही

पुरप की आसा म घर बना रही है ।”^२

इसी प्रकार स आज की तथाकथित प्रेमिका पर व्यंग्य है —

पर पायद तुमने मुझे परस लिया था
महगाई व साथ घटन वाली मरी पू जो
को निरख लिया था ।^३

इनके व्यंग्य बहुत ही स्पष्ट और सरल भाषा में व्यक्त हुए हैं । इनके प्रतिरिक्त इन्होंने भारत पाठ कार्यक्रम के समय में कुछ राष्ट्रीय कविताएँ भी लिखी हैं ।

आज की कविताओं में प्रत्येक सामाजिक असामाजिक बात का बहाना नि सकोच और बड़े ही चाव के साथ किया जा रहा है । डॉ० मदन केवलिया ने सुहागरात की तूफान में उपमा देकर कहा है कि सुहागरात भी तूफान की तरह गुजर जाती है । जैसे —

‘ज्यादा तर तूफान

जल्दी गुजर जाते हैं

और रह जाते हैं

खिंचे नुचे से

शामियाने और बनाते — तूफान की बातें ।”^४

ऐसी कविताओं में भी डा० गणपति चन्द्र गुप्त हिंदी के बड़े प्रभाव की पूर्ति की

१— डा० मदन केवलिया की अस्पताल कविता से ।

२— ” ” एक कविता से ।

३—

४— मधुमती - परबरी १९६६

प० ५०

दखत हैं ।¹

कवि अनुभव करता है कि आज का युग अधिकतर औपचारिकता का युग है। हम आज प्रत्येक बात में औपचारिकता निभाने पड़ती है। इसमें हम सदैव वास्तविकता से दूर रहते हैं। इसको कवि ने अपने 'सम्बन्ध' कविता में बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। जिसे कवि पत्नी तक के सम्बन्ध में पाता है —

"पत्नी अपना फिर्मी सम्बन्ध बढ़ाती है ।"²

यह औपचारिकता कवि के शब्दों में चमक है जिसकी उपस्थिति से कवि कुठन अनुभव करता है —

लगता है मेरे दास्त
कि हर चमकने वाली चीज
साना नहीं हाती ।"³

आज इस भौतिक युग में मनुष्य की कोई कीमत नहीं है उसकी तुलना में मशीने अधिक मूल्यवान हैं। इस बात को भी कवि ने अपनी कविता में कितने सुन्दर ढंग से कहा है —

'देहली
जहाँ जिंदगी मट्ठी नहीं
चीजें महंगी हैं ।'

संक्षेप में यह है कि कवि अपनी बात को बहुत ही सरल और स्पष्ट शब्दों में कह जाता है। भाषा की ओर उसने अधिक ध्यान नहीं दिया है। उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का उनकी कविता में काफी प्रयोग हुआ है। कवि ने अपनी सभी कविताओं के लिए नवीन विषयों को चुना है और समय के साथ चलने का प्रयास किया है।

हरीश भादानी—

बीकानेर के काव्य जगत में हरीश भादानी का विशेष स्थान है। आज की कविता और गीतों में इनका अछूता योगदान है। पर कवि आज हमारे सामने जिस रूप में है, उस रूप में प्रारम्भ में नहीं था। उसका स्वाभाविक ढंग से विकास

१— गणपति चंद्र गुप्त —साहित्यिक निबंध

२— डा० मदन केवलिया की एक कविता से।

३— " " " " ।

हुआ है। इस क्रमिक विकास द्वारा कवि आज की इस स्थिति पर पहुँचा है। यह बात भी ठीक है कोई भी व्यक्ति अज्ञानक किसी मजिद पर नहीं पहुँचता उसक लिए उस कई रास्ते पार करने पड़त हैं।

अधूरे गीत कवि का प्रथम काव्य संग्रह है। प्रारम्भ में जिस प्रकार किसी कवि में हल्की फुरकी भावुकता हाती है वह इनक इस संग्रह में स्पष्ट रूप में झलकती है। इस संग्रह की अनेक कविताएँ रोमांसयुक्त हैं। इनके अतिरिक्त 'मेरा देश' 'एशिया करवट बदल' आदि राष्ट्रीय कविताएँ भी हैं। कवि को अपने चारों ओर सामाजिक असमानताएँ दृष्टिगोचर हाती हैं उनका अनेक कवि ने अपनी कविता में किया है। छापीता की बार्हगिक स्थिति का चित्रण तथा शोषक समाज पर योग्य आदि कवि के काव्य में उभरे हैं। 'वपन की दुकान' 'लेफ्टींग ट चाहिए' आदि इसा प्रकार की कविताएँ हैं। 'तहजीब सीसता' कवि की श्रेष्ठ व्याख्यात्मक कविता है जिसमें कवि पर भी व्यंग्य मिलता है।

बढ़ती है भुखमरी गरीबी और पाखण्ड
पाप, ज माय अंगर बढ़ तो बढ़ने दा।
पर तेरा क्या उनस नाता जो मर
कर नी जीत हैं कई ठोकरें खाकर।
तुम तो नम मूँद कर लियो प्रीति
क गीत कल्पना क सागर में जाकर" १

व्यक्तिगत अभावों और पीडा का चित्रण भी कवि ने इस संग्रह में किया है। यह बात कवि ने स्वयं स्वीकार की है। "अधूरे गीत" में सामाजिक असमानताओं में उत्पन्न अभाव व्यक्तिगत पीडा और अभाव अधिक उतावले होकर चले हैं।" इस संग्रह के 'उत्तरार्द्ध' में कवि ने अपने प्यार का राग बलापा है।

निष्कण्ठ रूप में यही कहा जा सकता है कि यह कवि का हल्का संग्रह है। छायावादी प्रवृत्ति की अनेक इन कविताओं में स्पष्ट रूप से मिलती है। छायावादी विषय और उसकी ही कल्पना 'गलो का आश्रय लिया गया है। पर प्रथम काव्य संग्रह होने के कारण कवि की इसमें सफलता कही जा सकती है।

हरीश भादानो का दूसरा काव्य संग्रह 'सपन की गली' है। इसमें

१— हरीश भादानो

अधूर गीत

पृ० १६

२— " "

सपन की गली

" ७

हरीश भादानी नये कवि के रूप में सामने आते हैं। इसमें कुछ नयी कविताएँ हैं। इस संग्रह में कुछ गीत और कुछ मुक्तक भी हैं। इस संग्रह में कवि 'अधूर गीत' की रचनाओं से कहीं अधिक दूर दृष्टिगोचर नहीं होता। कविता का शिल्प तथा अन्वय बदना हुआ है। पर कवि ने अपनी रोमांच प्रवृत्ति को गीतों और मुक्तकों के माध्यम से व्यक्त किया है। इसमें कवि की सन १९६१ तक की कविताएँ हैं। इस संग्रह की कविताओं को देख कर ऐसा लगता है कि इस समय भी कवि पर प्रगतिवादी साहित्य की भावना हावी थी। यहाँ नवलक्षण की मात्र सम्भावन दृष्टिगोचर होती है। अभिव्यक्ति अनेक स्थानों पर दुबल और मपाट है। पर तु कुछ कविताएँ ऐसी हैं जिनमें नवीनता के साथ अनुभूतियाँ की प्रचरता भी है। जैसे 'मेरी कविता' 'अधेरा और किरण' 'अविश्राम की कूबट' 'घुगा की घास'।

हसिनी याद की हरीश भादानी का तीसरा संग्रह है जिसमें आदि सत तक मुक्तक ही हैं। इसमें कवि के सन १९६२ तक के मुक्तक हैं। 'हसिनी याद' का मतीन तरह का मुक्तक है। कुछ तो राष्ट्रीय मुक्तक हैं। कुछ रोमांटिक मुक्तक हैं और कुछ आत्मपरक मुक्तक हैं। राष्ट्रीय मुक्तक भी दो तरह के हैं। एक तो वे जिनमें अपना देश का गौरव बताया गया है और दूसरे वे जिनमें अपने देश का गौरव की प्रतिष्ठा की गई है तथा साथ में दुश्मना का ललकारा गया है। जैसे —

दुश्मनों में कहो हिमालय में बबल बरफ ही नहीं है
दुश्मनों से कहो दिल्ली में दोस्ती का हरफ ही नहीं है
चानिया। जग आजादी की पायी पहलूर उतरना
हमारे लिये जिन्दगी मौत में काँफूस ही नहीं है।”

पर इसमें भी प्रधानता रोमांच मुक्तकवा की है। जिनमें सयाग और वियोग दोनों ही स्थितियों का चित्रण है। आत्मपरक मुक्तकों में जिनमें स्वानुभूत प्रेम और वद की अभिव्यक्ति हुई है।

‘प्यार अपना न मुझे तो ता मेरा वद ही द दो मुझका,
शब जो किसी गैर की भूनी सो अमानत ही सही।”²

उनके अतिरिक्त कुछ अन्य मुक्तत ऐस भी है जो हृदय पर अधिक प्रभाव डालते हैं, पर कुछ का प्रभाव क्षणिक होता है।

‘सुलगते पिण्ड’ हरीश भादानी का चतुर्थ काव्य संग्रह है जिमें १९६१ स लकर सन ६६ तक की रचनाएँ हैं। इसमें कवि का परिवर्तित स्वरूप रूप से सामने आता है। गीतकार रूप हरीश का यहाँ भी चुप नहीं है। कवि ने कुछ क प्रति बगवत की है तथा दोमरू लगी घास्थाओं को भाव का फेंकने का संकल्प किया है। ऐसा लगता है कि कवि हरीश भावा की भाव में लगे गया है। इस संग्रह का मुख्य विषय भूख रहा है। उसने एक क वाद बने कविताएँ इसी विषय वस्तु को लेकर लिखी हैं। सुलगते पिण्ड की ये कविताएँ ‘एक जो चादर हमें दे दी गई है’ नींद आ जाती बुरा होता आज तक जितना जिय है कुछ विश्वकर्माशा ने दी ओ हमसे ही गभस्थ पिण्डों, ओ मादमी की सजा से आद कविताएँ विशेष रूप से पठनीय हैं। इनमें अनुभूति की गहराई के साथ-साथ अभिव्यक्ति की सहजता भी है। इस संग्रह में कवि ने नयी कविता की टेकनीक को समझा है इसलिए उसकी शिल्प में भी नवीनता है। शिल्प की दृष्टि से नयीन प्रयोग उनके उपमानों और लाक्षणिक प्रयोगों में देखे जा सकते हैं—

मेरा यानाओ का साक्षी

यह सजयी सूरज । १

× × ×

कुमारे बाप सा भीरू अघेर' २

× × ×

बड़े सूरज की सहचरी

नवली सध्या ने जाये

कुछ अवैध सपने । ३

‘सुलगते पिण्ड’ की रचनाएँ अवश्य कुछ बरली हुई हैं। कवि विषय शिल्प, भाषा व शैली की दृष्टि से प्राचीन को पीछे छोड़ आया है पर फिर भी उनके अतीत के संस्कार यहाँ बहा उनको कविताओं में बिखरे पड़े हैं। कवि क

१	हरीश भादानी	— एक उजली नजर की सुई	पृष्ठ ११
२	"	— " " "	" १२
३	"	— " " "	४३

स्वर में अनक स्थली पर प्रसरता आई है और वही वह माधारण रूप में मिलता है। कवि ने पास अपने स्थली पर कविता की रेशमी संवेदना होते हुए भी कथ्य का प्रभाव है। कुछ कविताएँ अस्पष्ट हैं और कथ्य को पकड़ने के लिए पाठक को प्रयास करना पड़ता है।

“सुलगते पिण्ड” और “एक उजली नजर की सुई” दोनों ही मई सन् १९६२ में प्रकाशित हुए हैं। दोनों एक ही समय प्रकाशित संग्रह हैं। “एक उजली नजर की सुई” में कुछ तो सन १९६० से पहले के गीत हैं और बाकी सन ६२ से बाद की कविताएँ और गीत हैं। ६० से पहले की रचनाओं के बारे में कवि ने ‘एक उजली नजर की सुई’ में अपनी ओर ॥ लिखा है “६० से पहले की रचनाएँ वैयक्तिक पीड़ाओं की अभिव्यक्ति हैं। — सपने में बने एक चेहरे की प्रतीक्षा है, प्रतीक्षा की निरंतरता में उपजी वदना है। यज्ञ पर भी कवि मुख्य रूप से गीतकार के रूप में ही आया है। उनमें बहुत से नवीन उपमानों को ग्रहण किया गया है पर संग्रह में उनके रूपक वास्तव में ही कुछ बड़े हैं। इस संग्रह में कवि की अनुभूति की गहराई का आभास होता है। वही पर भी कवि की अममयता दृष्टिगोचर नहीं होती। ‘घघूरे गीत’ का कवि यहाँ तक पहुँचते पहुँचते बहुत परिपक्व हो गया है।

कविताओं के साथ-साथ गीतों में भी परिवर्तन हो गया है। इस संग्रह में उनके कुछ नगर बोध से सम्बन्धित गीत हैं। प्रारम्भ में जो एक रामायण इनके गीतों में रहता था वह प्रायः यहाँ आते आते पूर्ण रूप से समाप्त हो गया है। उनकी कविता और गीत दोनों में ही साधारण जीवन का चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त आज मानव में जो एक आकाशीय भावना प्रबल होती जा रही है उसको भी कवि ने कविता और गीतों में अभिव्यक्त किया है। ‘मैंने नहीं’, ‘क्षण क्षण की छिनी से काटी तो जानूँ’ आदि हरीश भादानी के बहुत ही प्रसिद्ध गीत हैं।

वास्तव में बीकानेर की काव्य चेतना में हरीश भादानी का बहुत योगदान रहा है। इन्होंने ‘वातायन’ पत्रिका प्रारम्भ करके तो इस काव्य की और अधिक आगे बढ़ाया है जिससे बीकानेर के कवियों का भी एक सहारा मिलता रहा है।

गगाराम “पथिक”

गगाराम “पथिक” की कविताओं के आधार पर यह कहा जा सकता

है कि कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवाणी है। पर कवि ने कुछ व्यंग्यात्मक कविता भी लिखी है आज क नेताजी पर कवि ने बहुत ही तरारे व्यंग्य किये हैं।

प्रजातंत्र में सबसे अधिक मूल्य वोट का है। मत का महत्व है बुद्धि या विचारा का नहीं। अतः प्रत्येक नेता किसी न किसी प्रकार से अधिक मूल्यवान् मत प्राप्त करना चाहता है जिसमें वह किसी ऊँचे पद पर पहुँच सके। इसलिए आज के नेता अपनी जनता को झूठे आश्वासन देकर मत प्राप्त करते हैं। वे देश के अच्छे लोगों के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं जब —

हमने ही तो इस दिल्ली का
राम राज्य का केन्द्र बनाया।
लोक राज न लाल किले पर
सत्ता न सत्तरज बिछाया।^१

यें नेता नोम वोट के लिये जनता का पहले में ही अपनी लम्बी लम्बी योजनाएँ बसा देते हैं। कवि ने अपनी कविता 'हम दिल्ली से बाल रहें हैं' में आज के नेताजी पर करारी चोट की है कि किम प्रफार से लोग झूठ बोल कर अपना स्वाध सिद्ध करना चाहते हैं। अब तक भी भारतवर्ष की बहुत सी जनता अनपढ़ है इसलिये हमारे नेता इस जनपट जनता से लाभ उठाते हैं और इनसे अपना स्वाध सिद्ध करते रहते हैं। इस बात को कवि ने कहा है —

चौकस रह कर चोर बजारी करते रहते
भानी जनता को भरमाने
भट्टाचार भगाम्रा के नार लगवाते
अनपढ़ की आंखा पर पट्टी बांधे।^२

पर कवि समाज के सूटने वालों को यह बताना चाहता है कि अब तुम्हारी धार नहीं गलगी और साथ में ही कवि उनको उनका काय भी बतलाता है —

मच सजा कर समा सजा कर
चरखा कासा या
गांधी जी की जय बोना।^३

१— सनानी	—२६ दिसम्बर, १९५०	प० ७
२— ,	—२५ फरवरी १९५१	, ५
३—	,	, ५

कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवादी है। किसी की कत्र पर महल बना कर मानन्द के साथ रहना कभी भी मानवीय काय नहीं रहला सकता है। पर आज के युग में यह भा हान लगा है। जैसे —

'घो के दीप जले जीवन के दीप जुझा कर
भट्टहास कर रहे महल भापही जला कर
तब भूमे नग चित्नायेंगे सहर्षों पर ।'^१

पथिक ने अपनी कविनाओं में शायित्तो की दीन दशा का बरण किया है। साथ में यह भी बताया है कि यह आजादी तब तक भारत में ध्यय है जब तक पहा से गरीबी दूर नहीं की जाती। क्योंकि मनुष्य प्रत्यक् काम में पहले अपने पर भी भूय से गात करना चाहता है। जैसे —

'भाग लगाओ बागज को आजादी में
भूला है इ सान कि रोटी मपना है ।'^२

कवि ने अपनी कविता में आज के मानव का महत्त्व बताया है कि मनुष्य की कीमत आज वैस से भी कम दे। चारो ओर फले हुए शत्याचार तो और भी अधिक सराव हैं जैसे —

'राटी महगी इ सान बहुत ही सस्त है ।'^३

पथिक" की बहुत ही कम कविताएँ प्राप्त हो सरी है। कवि समका तीन बीकानरी काव्य प्रवृत्तियाँ के अनुकूल स्वयं को ढालता रहा है। कवि ने जो कुछ भी कहा है उसे बहुत ही सरल शब्दों में कह दिया है। भाषा और भाव दोनों में ही किसी प्रकार की क्लिष्टता नहीं है।

मगल सक्मेना—

मगल सक्मेना का प्रथम काव्य संग्रह 'तुम्हारा स्वर' सन १९६५ में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में गीत और कविताएँ हैं। जहाँ सन संग्रह के गीतों का प्रश्न है उनमें कवि के राष्ट्रीय, लौकिक प्रेम और प्रकृति भ्रम्यधी गीत हैं। यद्यपि कवि ने राष्ट्रीय गीत कम लिखे हैं पर जो लिखे हैं उनमें पूरा राष्ट्रीय गौरव झलकता है।

१— लोकमत

२— गगाराम पथिक

३— " " "

—३० अक्टूबर, १९५१

पृ० ३

'बागज की आजादी' कविता से

नीरो के वशज' कविता से

हमारी दर में वीरगताप्रा का नूतन बहता
 मग्न जा प्राग 'मेरी नहीं का रूप यह बहता
 बरोटा न अमर जन्त प्र का बुद्ध हो नहीं मरता
 हमारा गाँव न का दुस्मन परा म गा नहीं सता । 1

कवि न नैतिक प्रेम और प्रकृति गम्य-घो गीत भी मुग्ध बन पा है ।

जगत् मग्न कवि की कविताओं का प्रश्न है, उनका विषय तो उन्नी प्रकार का है जिस प्रकार का इनका गीत म है । पर गीतों में वीरकता का प्रभाव होता है या गीतों में स्पष्ट भी पर हल्का सा होता है । यह बात इनकी कविता में निरन्तर रूप में नहीं मिलती । सद्यः की प्रथम कविता 'युद्ध का प्रातरु' विशेष रूप से पठनीय है । हममें कवि यह बताना चाहता है कि युद्ध में जितना अधिक जानकर होता है उतनी बड़ी हानि भी । कवि को राष्ट्रीय कविताओं को छोड़कर अधिकतर कविताओं में एक प्रेम का विषय हुआ है । पर हमारा चित्रण जिनमें इनका गीतों में हुआ है उनमें कविताओं में नहीं हुआ है । इनकी कविताओं में विषय प्राधुनिक है । सद्यः का अन्तिम कविन एक राष्ट्रीय है जिनमें कवि ने अपने देश का गौरव गान गाया है । और एक रूपक द्वारा प्रकट किया है —

य भारत ऐसा मग्न
 युद्ध का सैनिक जसा देगा
 कठ पत्राव गाँव काश्मीर
 बाजु इन्दार
 पहाड़ का मोना रणधीर
 हिमालय तो भारत का गल । 2

कवि ने कुछ व्यंग्यात्मक कविताएँ भी लिखी हैं । इनमें 'जनता होटल 'मास्टर जी' इसी प्रकार की कविताएँ हैं ।

कविताओं के विषय प्राधुनिक है पर कविताओं में किसी प्रकार की गम्भीरता और प्रभाव नहीं है । कविताओं में भावा का एक हल्का सत ही स्पष्ट है । गौरी परम्परागत है और नवीन उपमानों को ग्रहण किया गया है । कवि के गीतों पर उद्गम का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है ।

‘चाद सितारा की वस्ती में यूँ ही रात गुजर जाती है
कोई याद नहीं आता है या फिर याद बहुत आती है।’¹

कवि की भाषा भी सरल है और उसमें उद्गु के शब्दों का प्रयोग भी काफी माना
म हुआ है। मलिप्टता नाम की बात इनकी कविताओं एवं गीतों में कही भी नहीं
है।

मुक्तक दोषक से लियी गई कविताएँ इस संग्रह में बहुत ही कम हैं।
मुक्तकों में नीति की बातें भी हैं। इनमें ससार के नित्य प्रति के सत्यों को बहुत
ही सहज ढंग दिया गया है —

‘रुलान को सभी जाते हैं हसता कौन चलता है
जलाकर ही सभी जान, जनन को रौन हरता है
बहुत अच्छा हा इसमें तो कि अपना न बने कोई
बिछुड़ा को सभी मिलते जिछुड़ कर कौन मिलता है।’²

कवि ने अपने भावों को बहुत ही सरल भाषा में और भीचे ढंग से व्यक्त
रिच है।

माणकचंद रामपुरिया

आज यदि इस राकेट के युग में कोई वैलगाडी की बात करे तो उससे
अधिक हसी की बात और क्या हो सकती है। समय और वातावरण के अनुसार
जो मनुष्य अपने आप को नहीं टाल सकता वह कभी भी उ नति नहीं कर
सकता। माणकचंद रामपुरिया की कविताओं के साथ भी कुछ ऐसी ही बातें
हैं। कवि समय से बहुत पीछे है। पर कवि न निरा बहुत कुछ है। कवि का
प्रथम काव्य संग्रह “मधुज्वाल” मई १९५६ में प्रकाशित हुआ। उसके बाद
निरंतर ‘स्वरालोच’ आभाम कल्लोच’ सवेग’ और सदीप्ति प्रकाशित
हुए। काव्य में ग्रहों की मर्यादा की दृष्टि से बीकानेर के काव्य में इनका दूसरा
स्थान हो सकता है।

आज इस भौतिकवादी युग में मानव एक तरफ अपने लिए स्वर्ग के
साधना का निमाण कर रहा है और दूसरी ओर अपने विनाश का। इस बात को
कवि ने समझा है। “मधुज्वाल” की कुछ एक कविताएँ इसी स्थिति को लवर

त्रिणी है। जैसे 'विद्वत्प्रपन्न' 'पेरीयाना' आदि।

'ठग रह इस भूमि का गज
यह मनुजता रो रही है
नाग का विष योज शोद
गति भू-र जा रही है। 1

इस सग्रह में कुछ एक कविताएँ उपदेशात्मक और प्रकृति चित्रण की हैं जिनमें 'सत्य' 'प्यार साधना' की नयी जगसाक्षात् आदि।

'स्वराज्य' में छायावाद की मार्गदर्शनी दृष्टि का अनुभव प्रति न प्रिय का साक्षात्कार व्यापक प्राकृतिक वातावरण में भी किया है —

जागो उपा विरगा ने देखा मधुवन र मसार का
उजा गया रोई अनजान प्राण प्राण के तार को। 2

कवि का प्रकृति माह बहुत अधिक है। इमलित इस सग्रह की बहुत सी कविताओं में प्रकृति पृष्ठभूमि उद्दीपन और उपमान आदि विविध रूपों में उपस्थित है। प्रकृति नामा रूपों में भाव सञ्चरण करती है। वहीं अमर्य प्रेम की पीड़ा स्मृति दश दृष्टे सपन एवं निष्ठुर प्यार की गाथा है। कवि यहाँ में लडकना है —

मन को और अभी रोने को
घाव जरा गहरा हान दो। 3

कुछ कविताएँ अनुहार, उपानम्य और अनुराग मन्त्र थी हैं। इनमें कहीं पर भी उलझाव आदि नहीं है पर कुछ कविताएँ समय से बहुत पीछे हैं। छन्द-बन्धन में कवि ने परम्परा का मोह नहीं छोड़ा है। कवि ने भाषा का व्यवहार सिद्ध रूप ही ग्रहण किया है जिसमें उर्दू के प्रचलित शब्द भी आ गये हैं।

आज मनुष्य को चारा ओर से सघप करना पड़ रहा है। ऐसा लगता है कि जीने के लिए माना सघप आवश्यक है। आज एक तरफ मस्तिष्क पुकार रहा है और दूसरी ओर हृदय की आवाज गूँज रही है। प्रेम थड़ा आदि मनुष्य को ऊपर उठाना चाहत हैं पर मनुष्य केवल मस्तिष्क की ही बात सुनता है। मस्तिष्क और हृदय की दौड़ में हृदय पीछे रह गया है। इन्हीं बातों को कवि ने

1— माणकचन्द रामपुरिया	स्वराज्य	पृ० ३१
2—	स्वराज्य	२२
3— माणकचन्द रामपुरिया	मधुञ्जाल	पृ० ४१

अपने सग्रह 'आभास' में प्रस्तुत किया है। आभास में कवि की एक नम्री कविता है। आज मानव ने प्रकृति पर पूर्ण विजय प्राप्त करली है।

“सडे प्रकृति मानव ने सम्मुख
सोले भेद भरा नित अंतर।”¹

कवि को मानव की वृद्धि से भय है —

“मदा वृद्धि के इगित पर नर
चलने वाला गिरा, सम्भालो।”²

कवि का इस कविता में मस्तिष्क पर हृदय की जीत कराने का उद्देश्य स्पष्ट बनकर रहा है। इस सग्रह में कवि ने बहुत ही सरल भाषा में भावों को प्रकट किया है।

‘कलमोल’ में कवि ने फिर पहले जैसे ही विषय पर कविता लिखी है। गायद पहले कवि को पूरा मतोप नहीं हुआ होगा। पर कुछ भी हो कवि प्राचीनता का मोह नहीं छोड़ सका है। प्रभात को नये रूप में प्रस्तुत करता है। सूर्योदय से सबका प्रमत्तता होती है पर कवि कहता है —

“यह ऊपा मुस्कान आई बन दूगा म रात वाली —
जब चले प्रिय दूर आती
प्रात कितना क्रूर आती।”³

इस सग्रह में एक कविता तुमसीदास के जीवन पर है। कवि ने इस सग्रह में प्रेम प्रकृति आदि कुछ बातों का बखान कर अपने सग्रह को पूरा किया है।

आज इस भौतिकवादी युग में ईश्वर पर बहुत कम विश्वास किया जाता है पर कवि इस बात को स्वीकार नहीं करता है। उसके अनुसार मानव आज किसी न किसी रूप में उस एक शक्ति से अपने आप का नियंत्रण मानता है। इन भावों को व्यक्त करने वाली कविताएँ कवि ने ‘सवर्ग’ में एकत्र की हैं। प्रकृति प्रेम तो यहाँ भी साथ में बना हुआ है।

कवि ने अपने शब्दों में उनका सदीप्ति एकान क्षणा म युजिन आत्म

१—	माणिकचन्द रामपुरिया	आभास	३८
२—	“	“	४३
३—	,	कलमोल	प० १०

निष्ठ भावनाओं का संग्रह है।^१ कवि-ने हमम भरनो का गान, सध्या की सलोती छटा तारो का टिमटिमाना आदि का वर्णन किया है। जिस प्रकार से प्रकृति के व्यापार चरित हैं उसी प्रकार के भाव मानव हृदय में पैदा हो जाते हैं। इसी भावा का वर्णन कवि ने इस संग्रह में किया है। कवि इस सतार की धारण भगुरता के बारे में वर्णन करता है।

“कुछ भी नित्य नहीं है जग में—

सदा काल की ही बस जय है।

अत सभी कुछ का निश्चय है ॥ २

निष्कल्प रूप में यह कहा जा सकता है कि कवि में किसी प्रकार का विकास नहीं है। समय बहुत आगे चला जा रहा है और कवि को उसी छायावादी युग से मन्तोप है। कवि अपनी छंद रचना में बहुत ही सफल है। छंद बद्धता को कवि कहीं पर भी नहीं भूलता चाहे वह कविता कौसी भी क्यों न हो जब आवागमन के कोई साधन न थे उस समय तो अवश्य ही वलगाडी का बहुत महत्व था पर इस युग में नहीं। ठीक यही स्थिति माणकचन्द रामपुरिया की कविताओं की है। कवि ने समय के साथ चलने का प्रयास नहीं किया है। कवि की भाषा सवत्र भाषानुसूच है।

योगेन्द्र किसलय

वीकानेर से प्रकाशित 'सवेदन इति' के छ कवियों में स एफ योगेन्द्र किसलय' है। इस संग्रह की कविताओं के अतिरिक्त भी इ होने बहुत सी कविताएँ लिखी हैं। कवि का व्यंग्य बहुत तीखा है। कवि अति साधारण गौरी में बहुत ही तीखी बात कह जाया है। इनकी कविता की उपलब्धि भाषा और पाठ में न होकर अर्थ की गहराई में रहती है। इनकी छोटी कविताएँ आकार में लघु होने के उपरान्त भी बहुत ही तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं। इनकी कविताएँ सामंजस्य के सामान्यतर चलती हैं।

व्यंग्य के क्षेत्र में तो कवि ने वीकानेर के वाक्य में चार चान्द ही लगा दिए हैं। इनकी कविताओं में व्यंग्य बहुत ही तीखा और गम्भीर है। जैसे —

१— माणकचन्द रामपुरिया

—सदीप्ति के आत्मचरित में

“लोग आजकल पैर दवाने वाली बीवियों को नहीं
 झूते फेंकने वाली लडकियों को पसंद करते हैं — —

+ + +

लोग सारा सीमेट खा गए हैं
 भले दरारे पड गयी है, लोग बहुत कुछ पा गए हैं ।”¹

इस प्रकार इन्होंने आजकल के नेताओं पर बहुत ही बराने व्यंग्य प्रस्तुत किये हैं ।

अनास्थावादी स्वर इनकी बहुत सी कविताओं में है । संक्षेप भावना
 कुण्ठा और अनास्था का स्वर अधिक है, पर कवि का मूल स्वर तो इनकी समाप्त
 करने का है । इनकी अभिशप्त अनास्थावादी कविता है जिसमें आस्था का स्वर
 भी है । इनकी कुछ कविताओं में आक्रोश का स्वर भी है । रोमानियत कवि को
 बहुत अधिक घेरे हुए हैं जो इनकी कविताओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है ।

‘किसलय’ के कुछ मुक्तक चमत्कार युक्त हैं, पर कुछ ऐसे हैं जो एक
 प्रभाव भी पाठक पर छोड़ते हैं जैसे —

‘कोई चुपके से जाम दुख के पिला जाता है
 बीती यादों का जहर भी तो मिल जाता है
 ये इतना आसान नहीं जितना तुम सुनते हो
 करव दिल खाक कही एक गीत निखा जाता है ।”²

कवि अपने काव्य में अनुभूति पक्ष को अधिक महत्त्व देता है और उसकी संप्रेष
 शीयता का ध्यान भी कवि को मंदैव रहता है । इसके प्रतिरिक्त इनके कुछ
 मुक्तक उद्गू शैली के काफी समीप हैं ।

एक विशेष बात तो इनकी कविताओं में पायी जाती है वह यह कि
 इनकी कविताएँ मकेदना से परिपूर्ण होती हैं जबकि आज की कविता में सम्बे-
 दना का आभाव दृष्टिगोचर होता है । इनकी कविताओं के प्रतीक प्रति नवीन
 होते हैं । आधुनिक रहन महन को इन्होंने बहुत ही समीप से देखा है और इस
 दृष्टि से इनकी कविताएँ उन्हीं स दर्शों में पाठक के सामने आती हैं । इनकी कुछ
 कविताओं का मध्य भाग कमजोर है ।

१— योगेन्द्र किसलय की एक कविता से

१— योगेन्द्र किसलय का एक मुक्तक

गौरी शंकर 'अरुण'

बीकानेर से प्रकाशित 'सवेदन इति' बीकानेर के छ कवियों की नई कविताओं का संग्रह है। उ ही कवियों में से गौरी शंकर 'अरुण' है। पर कवि हम जिन रूप में 'सवेदन इति' में नजर आया है वह तो कवि का आज का रूप है। कवि का रचना काल तो इससे पहले ही प्रारम्भ होता है। अतः इन कविताओं को देखने से पहले हमें कवि की प्रारम्भिक रचनाओं का विश्लेषण भी करना उचित होगा। अरुण की प्रारम्भिक कविताओं में केवल काव्य रचना का प्रयोग मात्र लगता है। विषय पुराने हैं, शिल्प भी प्राचीन है। कुछ गीत प्रवश्य ही सुन्दर हैं जिनमें आधुनिक समस्याओं को उठाया गया है। इन कविताओं में कवि कभी कवि का प्रगतिवादी स्वर भी उभरा है, पर फिर भी छायावाद से पूर्ण मुक्त नहीं हो सका है।

कवि ने पाक आक्रमण के समय कुछ राष्ट्रीय कविताएँ भी लिखी हैं। कवि ने अपनी 'नेतावनों' कविता में शत्रु को चेतवानी की है और उसे भारतवर्ष की धीरता की याद दिलाई है।

अगर नहीं विश्वास खोल इतिहास देखल
हर पत्थर हमस टकराकर, गल जाता है।
जो भ काटा चुभा हमारे खाक हो गया
आकर हर तूफान यहा पर बन जाता है।¹

सवेदन इति में कवि ने पुराना चांग खोड़ा है और नवीन धारणा दिया है। इस संग्रह की भी अधिकतर कविताएँ पैगमनुमा हैं। कुछ इधर उधर क मूहायरे और गन्दों का इकट्ठा करके कविताएँ लिख डाली हैं। अधिकतर चांग शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन कविताओं से पाठक को सुलभ यात्रा की अनुभूति कम होती है और न ही प्रसरता पाठक को आलोडित कर पाती है।

इतना सब कुछ होने पर भी कवि ने समय के महत्त्व का समझा है और समय के साथ चलन का प्रयास किया है। कवि ने नवलेखन में प्रयास किया है इसका प्रतिरिक्त कृतघनता" अपरिपक्वता" आदि अच्छी कविताएँ हैं जिनमें नवीन अभिव्यक्ति है। इस संग्रह के प्रतिरिक्त अरुण की कविताएँ यद्यत् प्रभावशाली में प्रकाशित होनी रहती हैं। कवि की भाषा भावनुकूल एवं सरल है प्रकाश परिमल

सवेदन इति काव्य संग्रह में छ कवियों में प्रकाश परिमल भी एक है

१ श० संहिता—विजय हमारी है पृष्ठ ३६

इन कविताओं के अतिरिक्त भी कवि की कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनकी कविताओं में बौद्धिकता का प्राचुर्य है। विचारा में उलझन होने से वह जो कुछ अभिव्यक्त करना चाहता है वह भी कभी कभी नहीं कर पाता। इस स्थिति में पाठक के द्वारा उन कविताओं को समझना और अधिक कठिन हो जाता है। कविताओं में सम्प्रेषण तत्व का अभाव है। इनकी कविताओं में कहीं कहीं इतर संदेश भी आ जाते हैं। इसका कारण यह है कि जब यह अनुभूति क्षेत्र में होता है उसी समय वह विश्लेषण भी आरम्भ कर देता है। इसी कारण उसकी अनुभूति खंडित हो जाती है। यह कवि सम्पूर्ण व्यवस्था को अपने विरुद्ध समझता है। कवि में वही भी खोखला आदर्शवाद नहीं है। जीवन का यथाथ चित्रण कवि ने अपनी कविताओं में किया है। कवि ने एक कविता में जीवन और मृत्यु दोनों को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है —

‘जन्म को

भविष्य के सपनों में सजा दिया गया है

—व्यथ

और मृत्यु

भूत की उपलब्धियाँ से लाद दी गई है।^१

कवि की वर्तमान के प्रति बहुत मोह है। वह क्षण भर के आनन्द का

ही सब कुछ समझता है —

‘मैं क्षणों को

जा किसी आकस्मिक संयोग से यदा कदा जुड़ जाते हैं,

अपनी इकाई में ही

भोगने में सुरक्षा महसूस करता हूँ।^२

प्रकाश परिमल की कविताओं में दर्शन का भी पुट रहता है उसका

कारण कवि का दर्शनशास्त्र में एम० ए० स्तर तक का अध्ययन हो सकता है।

पर वह अपने दर्शन को पचा नहीं सका है। इसलिए इनकी कविता का दर्शन कुछ

उत्तम प्रस्तुत करना रहता है।

ग्राम कवलिया

ग्राम केवलिया ‘सरहद्दी’ ने बहुत सी कविताएँ लिखी और उनमें से

१ सावदन इति पृष्ठ २०

२ सवदा इति पृष्ठ २०

६५ कविताओं का एक काव्य संग्रह 'शवनम' प्रकाशित हुआ है। इसमें कुछ तो प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ हैं, जैसे 'बहारों' यह मौसम' 'चादनी गरमा रही है' 'प्रिय फिर बसत कब आएगा' आदि, कुछ राष्ट्रीय कविताएँ हैं जैसे मेरा देश' अगारा का हार, 'आवाज आह्वान', वतन के धास्ते' आदि। गेप शृंगारिक कविताएँ हैं, प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ परम्परावादी शैली में लिखी गई हैं। कवि की राष्ट्रीय कविताओं में जनता का जगा देने की शक्ति विद्यमान है। चीन के आक्रमण के समय लिखी कविताओं में चीन को बहुत सलकारा है और अपने देश के सिपाहियों का उत्साह बढ़ाया है। पर इस संग्रह में राष्ट्रीय कविताएँ अधिक नहीं हैं शृंगारिक कविताओं में सयोग और वियोग दोनों प्रकार की कविताएँ हैं। ऐसी कविताओं में बहुत से स्थला पर भावा की पुनरावृत्ति हुई है। कवि की ये कविताएँ समय में पीछे हैं। इनमें किसी भी प्रकार की नवीनता नहीं है। कवि पर उर्दू का बहुत अधिक प्रभाव है। इसी कारण इन कविताओं में भी उर्दू जैसा ही क्षणिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

पर कवि की कुछ कविताएँ ऐसी हैं जिनके आधारे पर यह कहा जा सकता है कि कवि ने दोकानेर के कवियों के स्वर में स्वर मिलने का प्रयत्न किया है। जैसे उनकी 'नया मोह 'प्रदम चि हूँ' आदि। इन कविताओं के अतिरिक्त कवि की जो राष्ट्रीय भावना की कविताएँ हैं वे वास्तव में ही सशक्त कविताएँ हैं। इन कविताओं में अधिकतर तो चीन के आक्रमण के समय में लिखी हुई हैं। चीन के आक्रमण के समय जिन प्रकार की राष्ट्रीयता की आवश्यकता थी कवि ने उस राष्ट्रीय भावना को समझा है और जनता में देश प्रेम की भावना को जगाने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय कविताओं में कुछ तो ऐसी हैं जिनमें भारतवर्ष का गौरव बताया गया है। जम —

“बहुत पुराना है इतिहास यहाँ का
मन्दिर, मसजिद, गुरुद्वारे घतलाते
सभी एक हैं भारत के हम वामी
अनुपम गव का देश सभी में यारा
+ + +
मानवता का पाठ पढ़ाया जग को
स्वयम् देवताओं ने जिसे सवारा।”

इसके साथ ही कवि भारत के बीरा को भी नहीं भूला है -

इस धरती के कण-वण से
 उन वीरो की
 सुनत हैं आवाजे
 अपना सब कुछ लुटा दिया था
 और खेल गये थे प्राणा पर

× × ×

भगतसिंह, शेखर आजाद
 राज गुरु विस्मिल की
 अमर आत्मा राह दिशाती हमको ।¹

राष्ट्रीय कवितायां में कुछ ऐसी है जिनमें बानुमा को ललकारा है —

'घट्टानो से टकराए हो
 हमें नहीं पहचाना तुमने
 सुनला वान सोलकर ।

+ × ×

गद्दारो को जिंदा ही हम
 अंतिम नींद सुला देते हैं ।²

+ + +

सुन लो
 ससार सुनगा विस्फाटो को
 रोक नहीं तुम पाघोमे फिर
 बढत हुए जवाना को ।³

कवि न ऐसी कविताओं में बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है ।

रामनरेश सोनी

रामनरेश सोनी ने बीकानेर क हिंदी काव्य में सन १९६० में पदापण किया है । इन्होंने कविता, गीत और मुक्तक लिखे हैं । इनके गीत और कवितायां

२— आम कवलिया सरहट्टी	-गबनम	पृ०	८०
२— , , ,	, , ,	, , ,	६८
३— , , ,	, , ,	, , ,	८१

को देखकर यह कहा जा सकता है कि कवि विषय चयन में तो समय के साथ है पर शैली प्राचीन है। कवि की प्रारम्भिक रचनाओं पर छायावाद का पूरा प्रभाव है। इनके बाद के गीतों पर नीरजवादी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कवि ने अधिकतर वीर रस की कविताएँ लिखी हैं जैसे —

“जग को बतला ही दिया कि पौरुष के आगे
विपदाओं की बाधाओं की श्रोकत नहीं
जो सदा घबस पर एह मारते चलते हैं
वे दुविधाओं से खायेंगे क्या मात कही।”¹

इसी प्रकार कवि ने श्रम को लेकर कविता लिखी है। इसमें कवि श्रम का महत्त्व बताता है। कवि ने एक युद्ध को लेकर कविता लिखी है जो ‘प्रस्तुति’ में प्रकाशित भी हुई है। इसमें कवि ने युद्ध के श्रातक को बताते हुए यह प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि मानव चैन से सास तभी ले सकता है जब युद्ध का भय बिलकुल नहीं रहेगा।

‘तब ही ससार सुखों के सपने देखेगा
तब ही सपने साकार स्वयं हो जायेंगे।”²

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ राष्ट्रीय और प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ भी लिखी हैं। ‘अचल गढ़ की एक रात’ कवि की एक लम्बी वीर रस प्रधान कविता है। जिसके प्रारम्भ में प्रकृति का विस्तृत चित्रण हुआ है। प्रकृति को यहाँ अधिकतर मानवीकरण की शैली में चित्रित किया गया है।

‘सो गई धरती गगन की बाह म
सो गई कलिका शिथिल पत्राक मे
सो गई सरिता बगारो से कसी
सो गई लतिका बधी तरु भ्रम म।”³

कविताओं की अपेक्षा कवि गीतों में अधिक सफल नजर आता है। कवि की कविताओं में वीर रस की प्रधानता है पर इनके गीतों के विषय भिन्न हैं। आज मानव को घन कितना प्रिय हो गया है। इसको कवि ने अपने एक गीत में

१— रामनरेश सानी

— मिट्टी के बग कविता से

२— ग० गान भारद्वाज प्रेम भक्तिया

— प्रस्तुति पृ० ५५

३— रामनरेश सानी

— अचलगढ़ की एक रात’ कविता म।

बहुन ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है —

‘बहने बिक जाती है यहा पर रुपया की खनकार पर

+ + X

बदल गई है नियत जमाने की माया के नाम पर^१

इनके गीता म रोमास भी मिलता है । प्रसाद की तरह यह कवि भी सौन्दर्य व प्रेम क गीत गाता है ।

‘‘तुम उमड़ी रही घटा बन कर मेरे नभ पर

मैं गीत प्यार का जनम जनम तक गाऊँगा

X X X

तुम बिखरा दो धनकेश जाल मेरे मुख पर

मैं हिमगिरि बन रस धार स्वयं बरसाऊँगा ।’’^२

समय म कवि प्रवश्य पीछे है । कविता और गीत दोनो मे कवि छायावाद से बहुत प्रभावित है ।

कवि १ कुछ मुक्तक शीपक से भी कविताएँ लिखी हैं । आज इस वैंगानिक युग म यंत्रो का मूल्य अधिक है और मनुष्य का उसकी जाति का मनुष्य ही नहीं पहचानता । क्योंकि आज इस युग म मनुष्य की कोई कविता भी नहीं रही है । इसी से सम्बन्धित इनका एक मुक्तक है —

क्या कहूँ मुस्वान मुश्किल हो गई

है सभी इन्सान पर इन्सान को

इन्सान की पहचान मुश्किल हो गई ।’’^३

कवि ने गीत और कविता दोना ही लिखे हैं । पर कवि नये शिल्प की चर्चाची घ मे नहीं पढना चाहता । कवि की सभी कविताएँ छंद बद्ध हैं । जिस प्रकार की कविताएँ लिख रहे है उस प्रकार की कविताएँ बीकानेर मे बहुत पहले लिखी जा चुकी थी । इन कविताओ का उम समय म तो बहुत आदर हो सकता था, पर आज इतना नहीं । पर इतना होते हुए भी कवि की कुछ

१— ' ' एच गीत स
 २— ' ' ,
 ३— रामनरेश सोना १५५ मुक्तक कविता

कविताशा क विषय अवश्य ही अपने समय के हैं ।

सरल

जीवानेर की नयी पीढ़ी क कविया मे 'मरन' का भी अना ध्यान है । सरल ने कविताशा क गीत नाना ही लिखे हैं । गीत उठुन कम लिखे हैं । इनके सभी गीत नगर गेय क हैं और वे भी बहुत मामा य जीवन का लेकर लिखे गय है —

भोर जगी

घर घर चूल्हे हीटर भ
होड लगी ।¹

मरन की कविताशा के पढ़ने म स्पष्ट होता है कि कवि का स्वर प्राशा वादी है । वह कही निराशा के चक्कर म नहीं है । आज इस भौतिकवादी युग मे मानव एकाकी होता जा रहा है और उस अपने पथ मे हमराही की कमी का अनुभव होता है । इस बात को कवि ने समझा है और उस अपनी कविता म अभिव्यक्ति दी है —

'कोई भी

हमराही नहीं जो

एक तिनका फेंक दे

सुबह की प्रतीक्षा तक ।²

कवि की कुछ एक कविताशा म ज्यग्य भी काफी अच्छा उभरा है ।

आज इस युग म औपचारिकता का महत्व बढ़ता जा रहा है । मानव अपना अधिकतर समय इस औपचारिकता मे ही नष्ट कर डालता है, पर इस औपचारिकता से किसी का भी काम सफन होना सम्भव नहीं है । इसलिए कवि ने इस औपचारिकता को नकारा है —

"क्या होगा मेरे दोस्तो

मेरी कविता सुनने से

तालिया बजाने से

झण्डा लहराने से

बदे मातरम गाने से ।³

१— वातायन

अप्रैल १९६५

प० ५०

२—

सितम्बर, १९६६

, २७

३— सरल

'क्या होगा' —? कविता से

कवि इससे यह भी सकेत करना चाहता है कि यदि ऐसा करने से कुछ होता तो पिछले बीस वर्षों में कुछ हो जाता, पर ऐसा न होकर कुछ और ही हुआ है —

‘दिना दिन भूख और वदनीयति के
दास होने जा रहे है ।’^१

इतना ही नहीं कवि आज की वास्तविक व्यवस्था को बताना चाहता है और जिस बहुत कम लोग जानते हैं ।

“राता रात बहिया बदल दी जायेगी
फाइलें गुम हो जायेंगी
और हर हुकाम की निजी कोठी, कार
और सोहरत बढ जायगी ।”^२

कवि आज की इस वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन के लिये प्रयत्नशील है । इसलिये वह उसमें परिवर्तन करना चाहता है और इसलिये एक हलचल पदा करना चाहता है —

“एक पत्थर और फेंका
सोचकर
हलचल मचेगी
सह्रों उठेगी ।”^३

पर ऐसा हुआ नहीं और कवि का सारा प्रयत्न निष्फल हो गया ।

किन्तु
उछला नहीं
विगडा नहीं
ताल का जड-जल
प्रज्ञाहीन व्यक्ति सा
अपलक देखता रहा
मुझे
जैसे मैंने कुछ किया ही नहीं
उसे कुछ हुआ ही नहीं ।”^४

१ सरल
२ ”
३ ”
४ सरल

—बया होगा — — — ? कविता से
— ” ” ” ” ” ”
—ताल का जल कविता से
— “ ” ”

पर कवि इससे निराश नहीं होता है। वह अपना यह प्रयत्न जारी रखता है।

कवि ने अपनी प्रत्येक बात को सरल शब्दों में कहा है और नहीं पर भी कविता बोद्धकता व भार ही नहीं दबी है।

लालचंद 'भावुक'

लालचंद "भावुक" बोकानर के प्रगतिवादी कवि है। अपनी प्रत्येक कविता में प्रगतिवादी स्वर मुख्य रूप से रहता है। कवि 'भावुक' आज की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाता है और उसको बदलने के प्रयत्न में है। पर यह आवाज उनकी शक्ति के साथ नहीं निकलती, अपितु बड़े ही गजन-तजन के साथ मुखरित हाती है। जब ये कवि सम्मेलनों में कविता पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि शायद ये अभी इन सब परिस्थितियों को बदल देंगे। कवि कहीं पर भी दबी जवान से कुछ नहीं कहता है, जो कुछ कहता है स्पष्ट और शक्त शब्दों के साथ अपने विचारों को पूरा विश्वास के साथ व्यक्त करता जाता है —

मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हें विश्वास स"।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय भावना की कविताएँ लिखी हैं। उनमें देश की रक्षा और हथेली पर लेकर अपने धर्म-मान की रक्षा करता हुआ करता है और यही बात वह अपने देशवासियों से कहता है। ऐसी स्थिति में कवि के सामने मौन भी नहीं ठहर सकती —

मौत होगी सामने, सर ले हथेली पर निकलना

मौत तुम देगेगी तेरे क्रोध का खुल कर मचलना।¹

कवि इस बात को स्पष्ट कर देता है कि जब सब देशवासी ऐसी प्रतिज्ञा कर लेंगे तो किसी भी शत्रु का सामना बड़ी सरलता के साथ किया जा सकता है और ऐसा करने पर शत्रु का ठहरना असम्भव है —

खुन के कह दो गा कल्पम अब, भारती के माल की।

इस मेरे अहल बदन स गर किसी ने चाल की।

ता समझलो हम उसी का नाम तक छोड़े नहीं

जि दगो का एक क्षण भी धैर्य से तोड़े नहीं। -

कवि ने आज की इस प्रजातान्त्रिक व्यवस्था पर भी बहुत बराहरी चीजें की हैं। इसके लिए कवि ने शतरंज का रूपक गाथा है और शतरंज की मोटियों व उपमान द्वारा अपना बात को स्पष्ट करने में सफल हुआ है। इनकी 'शतरंज

मोहरे' कविता में रूपक और व्यंग्य का साथ साथ निर्वाह हुआ है —

“जनता-श्री के वजीर तो
लकड़ी के मोहरे
से हो गये हैं ।
और ये
प्रशासनिक घोड़े
दो सही एक बटा दो के मालिक —
अपने चौकोने में
घुड़ चौकिया लगाकर
हाथियों से हाथी
भटा कर भी
निर्णायक मात की
स्थिति नहीं ।”^१

यद्यपि लालचन्द भायुक ने बहुत अधिक कविताएँ नहीं लिखी हैं, पर जितनी लिखी हैं उन सब में प्रगतिवादी स्वर ही प्रमुख है । इन कविताओं की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है । वही पर भी किसी प्रकार की क्लिष्टता नहीं है ।

नद किशोर आचार्य

आज इस भौतिक युग में औपचारिकता ने मानव जीवन को चारों ओर से जकड़ लिया है । इस औपचारिकता के कारण कभी-कभी मनुष्य एक दूसरे का सही सूझाकर नहीं कर सकता । नद किशोर आचार्य की कविताएँ इस आधुनिक सामाजिक परिवेश का स्वीकार करके लिखी गई हैं । इनकी कविताएँ आधुनिक समाज पर सीला व्यंग्य हैं । आज हम पुरानी सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार कर रहे हैं जिनमें बंदू आ रही है जिनसे घुटन होती है, परन्तु फिर भी उनमें जो रहे हैं उसे —

“जिसकी मौली बंदू में
सास भी तो नहीं लिया जाता
सल कर

पर कवि इससे निराश नहीं होता है। वह अपना यह प्रयत्न जारी रखता है।

कवि ने अपनी प्रत्येक बात को सरल शब्दों में कहा है और कहीं पर भी कविता बोद्धिकता के भार से नहीं दबी है।

लालचंद 'भावुक'

लालचंद "भावुक" बीकानेर के प्रगतिवादी कवि हैं। आपकी प्रत्येक कविता में प्रगतिवादी स्वर मुख्य रूप से रहता है। कवि 'भावुक' आज की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाता है और उसको बदलने के प्रयत्न में है। पर यह आवाज उनकी शक्ति के साथ नहीं निकलती अपितु बड़ ही गजन तजन के साथ मुखरित होती है। जब ये कवि सम्मेलनों में कविता पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि गायद ये अभी इन सब परिस्थितियों को बदल देंगे। कवि कहीं पर भी दबी जवान से कुछ नहीं कहता है, जो कुछ कहता है स्पष्ट और शक्त शब्दों के साथ अपने विचारों का पूर्ण विश्वास के साथ व्यक्त करता जाता है —

मैं कवि आवाज देता हूँ तुम्हें विश्वास से¹।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय भावना की कविताएँ लिखी हैं। उनमें देश की रक्षा सिरे हथेली पर लेकर अपने आन-मान की रक्षा करता हुआ करता है और यही बात वह अपने देशवासियों से कहता है। ऐसी स्थिति में कवि के मामन मोत भी नहीं ठहर सकती —

'मोत होगी मामने सर ने हथेली पर निकलना

मोत खुद दोगी तरे क्रोध का खुल कर मचलना।'²

कवि इस बात को स्पष्ट कर देता है कि जब सब देशवासी ऐसी प्रतिज्ञा कर लेंगे तो किसी भी शत्रु का मामना बड़ी सरलता के साथ किया जा सकता है और ऐसा करने पर शत्रु का ठहरना असम्भव है —

बुल के कह दो खा कस्म अब, भारती के माल की।

इम मेरे अहले बतन से गर किसी ने चाल की।

ता समझने हम उसी का नाम तक छोड़े नहीं

जि-दगी का एक क्षण भी चन से तोड़े नहीं।'³

कवि ने आज की इस प्रजातंत्रिक व्यवस्था पर भी बहुत करारी बातें कही हैं। इसके लिए कवि ने शतरज का रूपक बाधा है और शतरज की मोटियों के उपमान द्वारा अपनी बात का स्पष्ट करने में सफल हुआ है। इनकी 'शतरजी

मोहरे' कविता में रूपक और व्यंग्य का साथ-साथ निर्वाह हुआ है —

"जनसन्धी के वजीर तो

लकड़ी के मोहरे

से हो गये हैं ।

घोर ये

प्रदासनिक घोड़े

दो सही एक बटा दो के मातिक —

अपने चौकीने में

घुट चौकिया लगाकर

हाथियो से हाथो

सटा कर भी

निर्णायक मात की

स्थिति नहीं ।"^१

यद्यपि लालचन्द भाबुक ने बहुत अधिक कविताएँ नहीं लिखी हैं, पर जितनी लिखी हैं उन सब में प्रगतिवादी स्वर ही प्रमुख है। इन कविताओं की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। कहीं पर भी किसी प्रकार की क्लिष्टता नहीं है।

नद किशोर आचार्य

आज इस भौतिक युग में औपचारिकता ने मानव जीवन को चारों ओर से जकड़ लिया है। इस औपचारिकता के कारण कभी-कभी मनुष्य एक दूसरे का सही मूल्यांकन नहीं कर सकता। नद किशोर आचार्य की कविताएँ इस आधुनिक सामाजिक परिवर्तन का स्वीकार करके लिखी गई हैं। इनकी कविताएँ आधुनिक समाज पर तीखा व्यंग्य है। आज हम पुरानी सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार कर रहे हैं जिनमें बंदू आ रही है जिनसे घुटन होती है परन्तु फिर भी उनमें जो रहे हैं जैस —

"जिसकी मोली बंदू में

सास भी तो नहीं लिया जाता

खल कर

और एम घुटन में
सूत देते हैं हम
अपने लिए जीने का ।”¹

वास्तव में यह जीवन कोई जीवन नहीं है। आज जीवन के आघारभूत मूल्यों को इतना महत्त्व नहीं दिया जाता जितना कि जीवन के छिछलेपन को। यह बात भी कवि की दृष्टि से बची नहीं है। आज हम फ़िल्मी रोमांस पसंद करते हैं। किसी लड़की का मुस्कुरा कर घोलना, भीड़ में किसी लड़की से शरीर स्पृश करना और रोमानी उपवास आदि हमारे लिए जान द का विषय बन जाते हैं।

हमारा रामास
सिनेमा हान और सस्त रामानी उप यासा तक ही ।
+ + +
पड़ोस की किसी लड़की
या दफ़्तर की लेडो टाइपिस्ट का
मुस्कुरा कर बात कर लेना
और भीड़ में
किसी औरत के शरीर स्पृश
काई सनसनाखड़ खबर पढ़न जसा ही है ।”²

कवि का सामाजिक जीवन से जुड़न है पर उसका स्वर आस्थावादी है। इसलिए वह इसका सामना करना चाहता है। सफलता और असफलता की उसे कोई चिंता नहीं है। कवि को आधुनिकता में मन्चाई कम दृष्टिगोचर होती है—

‘चौदह करट सोने का
एक गहना है
हमारी आधुनिकता ।’³

कितनी मिलावट है आधुनिकता में। इस प्रकार कवि समाज के प्रत्येक पहलू पर व्यंग्य करता है। पर यद्यपि कवि जीवन की निराशा दृष्टि को लेकर नहीं चिन्तित है।

-
- | | | |
|--------------------|-------------|--------|
| १— सवेदन इति | | पृ० २७ |
| २— मन्दिगार आचार्य | मन्वेदन इति | २६ |
| ३— | | , २४ |

श्री न दक्खिणो आचाय की कुछ कविताओं में शिल्प की उत्कृष्टता हात हुए भी सम्प्रेषणीय तत्व की अपेक्षा है। इस प्रकार की स्थिति में उनका वाक्य दुबल लगता है और कविता शिल्प का आवरण बन जाती है, पर इनकी कुछ कविताओं में चिन्तन पक्ष मजबूत है और अनुभूति पक्ष भी तगभग बँसा ही है।

बीकानेर में स्वतन्त्रता के बाद के इन कवियों के अतिरिक्त भी कुछ कवि और हैं जिन्होंने कुछ छोट छुट कविताएँ लिखी हैं। इनमें भी हमें दो प्रकार के कवि दिखाई दे रहे हैं। एक वे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय एक कुछ दिनों में कविताएँ लिखी और दूसरे वे जिन्होंने इन दिनों के कुछ वर्षों से कविताएँ लिखनी प्रारम्भ की हैं। बीकानेर में इन प्रथम प्रकार के कवियों में श्रीमन्मोक्षदास गान्धी गोविन्दलाल व्यास, क हैयालाल गोस्वामी बद्रोप्रसाद पुरोहित मुरली-धर व्यास का नाम लिया जा सकता है। इन सभी कवियों ने राष्ट्रीय कविताओं के साथ-साथ कुछ ही कुछ कविताएँ भी लिखी हैं। गोस्वामी की 'यह ताज-महल' कविता जिसमें उन्होंने यह बताया है कि गान्धीजी और मुमताजमहल से ताजमहल अमर नहीं है अपितु —

"इसको तो अमर बनाया है
मर मर कर मजदूरान
जो सिर पर पत्थर उठा उठा
बट चले ताज के गुब्बद पर।"^१

कवि यह मानता है कि ताजमहल की देख कर हम आज मुमताज और गान्धीजी के प्यार को याद करते हैं और उन मजदूरों का कोई भी याद नहीं करता जिन्होंने इन दिनों के अपना जीवन बलिदान किया था।

खडगावन मालचन्द शेखर मकमना धर्मोत्तम बुताकीदास बाबरा, घडचन्द राजीव, बच्चल हण शिवराज छगशी विश्वनाथ सचदेव तथा धामु बीकानेरी आदि ने भी कुछ छोट छुट कविताएँ लिखी हैं। इन सभी कवियों की कविताएँ विजय हमारे हैं' में प्रकाशित हुई हैं जो सभी राष्ट्रीय कविताएँ और भारत पाक के आक्रमण के समय में लिखी हुई हैं। इन कविताओं में इन्होंने या तो अपने देश की महिमा का वर्णन किया है या फिर शत्रु को ललकारा है। देश महिमा में मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों का भी आद किया है। इन कविताओं के अतिरिक्त इन कवियों ने कुछ स्फुट कविताएँ और भी लिखी हैं

१— क हैयालाल गोस्वामी

- यह ताजमहल कविता से

जो स्थानीय पत्रा में बिखरी पड़ी है। प्रेम सक्सेना, शिवराम पुनिया श्रीकृष्ण विश्नीई, मालीराम शर्मा तथा नरेन्द्र शर्मा आदि कवियों ने भी कुछ कविताएँ लिखी हैं। प्रेम सक्सेना की कुछ कविताओं में वैयक्तिकता है। वैयक्तिक पीड़ा का कवि ने अपना कविता में बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है —

“लेकिन ऐसा हुआ नहीं है
हर बार आप नहीं रात सोई है
और हर बार मेरे घर के एकान्त में
सुनसान ने मुझे धोखा दिया है।”^१

शिवराम पुनिया ने बहुत कम कविताएँ लिखी हैं। एक कविता में उन्होंने पीड़ा को बहुत ही सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। युवती और पीड़ा के रूपक से कविता बहुत ही सुंदर बन पड़ी है —

‘तभी से
एक युवती
पीड़ा है नाम जिसका
मिलती है
हर गली - हर माड पर
और फिर
बिना बोले
धूमती हैं साथ-साथ
रात होने तक।’^२

कविताओं के अतिरिक्त पुनिया ने कुछ गीत भी लिखे हैं।

आज इस महंगाई के समय में मनुष्य का जीना बहुत ही कठिन है। और फिर परिवार की गाड़ी को साथ लेकर चलना तो और भी कठिन है। मनुष्य को मनुष्य का सहारा भी कम मिल रहा है। इसी बात को श्रीकृष्ण ने अपनी कविता में प्रस्तुत किया है और बताया है जब तक मनुष्य मनुष्य में भेद समाप्त नहीं होगा तब तक जीवन यापन करना कठिन है —

१— प्रेम सक्सेना की एक कविता से

२— शिवराम पुनिया की एक कविता से

स्वामी है
 राशन चुक गया है
 माडो फट गई है
 पास नहीं थी
 नाम कट गया है ।
 + × +
 बहुत मुश्किल है जाना
 जमी पर
 जब तक
 आदमी आदमी में भेद है ।¹

आज के यांत्रिक युग में मनुष्य का यंत्रों जमा ही बना दिया है। मनुष्य का जीवन मशीन बन गया है। उसके चारों ओर मशीन ही मशीन है —

बोध का बालक
 बिक गया
 यत्रा के पहरे
 लड़े हैं चांगे और ।²

इन कविता के प्रतिरिक्त बीकानेर में और भी कवि सम्मेलना में कुछ बाल कवि भी सामने आ रहे हैं पर उनकी कविताएँ आकार और प्रकार किसी भी दृष्टि से हमारे आलोच्य विषय में नहीं आ सकती। इसलिए उनका यहाँ वर्णन नहीं किया जा रहा है।

==

बौद्धान्तर बिन्दु के काव्य-रूप

काव्य के तत्त्व

प्रत्येक मानव में कविता विचारणीयता और अनुभूति विद्यमान है। कविता के लिए भी वही ही आवश्यकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक मानव अपने आप में कवि है। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण यह है कि कवि साधारण मानव से कहीं अधिक भावुक एवं विचारणीय होता है। यह अपने अनुभूतियों को अपने तन्मय मीमांसक रूप में व्यक्त करने में अभिव्यक्त करना चाहता है। कवि अपने हृदय के रस का पाठक तत्त्व पर्याप्त है। यदि कवि अपनी अनुभूति को पाठक की अनुभूति में बना सके तो उसकी कविता में निश्चिन्त रूप का बुद्धि रमी है। पर इसके लिए कवि का ही श्रेय नहीं होता। कभी कभी पाठक का योग का भी श्रेय होता है। इस प्रकार में वाक्य के दो पक्ष हो जाते हैं। अनुभूति पक्ष एवं अभिव्यक्ति पक्ष। जिस हम भाव पक्ष और कला पक्ष भी कह सकते हैं। काव्य में इन दोनों का अद्भुत सम्बन्ध है। दोनों का एक दूसरे के बिना कोई महत्व नहीं है। कवि का अनुभूति पक्ष भी प्रबल होना चाहिये और अभिव्यक्ति का पक्ष भी। यदि अनुभूति तीव्र हो और उस अभिव्यक्ति करने के लिए भाषा न हो तो भी वह व्यर्थ है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य के चार तत्त्व (साक्षात्कृतत्व, कल्पनातत्त्व, बुद्धितत्त्व और गलीतत्व) इन्हीं दो तत्वों से सम्बन्धित हैं।¹

काव्य का वर्गीकरण

काव्य की समझने के उपरान्त यह जानना भी आवश्यक है कि काव्य का कितना रूप है? काव्य के रूपा की जब हम चर्चा करते हैं तो हमारे सामने पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों मत ही आते हैं। दोनों मतों में थोड़ा अन्तर भी है। पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के दो भेद किये हैं - एक विषयगत (Sub-

jective) व विषय गत (Objective) । विषयगत में कवि को प्रधानता मिलती है और विषयगत में शेष सृष्टि की । पहले प्रकार के काव्य को लिरिक (Lyric) कहते हैं । इसमें गीत तत्व की प्रधानता रहती है । दूसरे प्रकार के काव्य को प्रकथनात्मक (Narrative) कहा गया है, जिसमें महाकाव्य आदि काव्य आते हैं ।^१

भारतीय विद्वानों के अनुसार काव्य का विभाजन दृश्य और श्रव्य दो भागों में हुआ है । जो काव्य अभिनीत होकर देखा जाय वह दृश्य काव्य कहलाता है और जिसे कानों से सुना जाय उसे श्रव्य काव्य कहा जाता है । श्रव्य काव्य क अतमस्त गद्य पद्य और मिश्र तीन भेद रखे हैं ।^२

गद्य की दृष्टि में काव्य के दो भेद किये जा सकते हैं—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य । प्रबन्ध काव्य वह कहलाता है जिसमें पूर्वोपर सम्बन्ध रहना है तथा छन्द एक दूसरे से माला की मणियों से जुड़ रहने हैं । जिस प्रकार माला का एक भी माला टूटने पर भारी माला बिखर जाती है उसी प्रकार प्रबन्ध काव्य में छन्द का महत्व रहता है । प्रबन्ध काव्य में छन्दों के क्रमों को प्रागे पीछे नहीं किया जा सकता । मुक्तक काव्य में पूर्वोपर सम्बन्ध नहीं रहना । प्रत्येक छन्द अपने आप में पूर्ण एवं स्वतन्त्र होता है ।

प्रबन्ध काव्य के भी दो भेद किये जा सकते हैं—महाकाव्य और खण्ड काव्य । महाकाव्य में एक विस्तृत कथानक होता है । उसमें मानव जीवन की पूर्ण घटनाओं का चित्रण होता है । महाकाव्य की परिभाषा बताते हुए गुलाब राय ने लिखा है ' महाकाव्य वह विषय-प्रधान काव्य है जिसमें कि घटना घटने बड़े आकार में जाति में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नायक के उदात्त कार्यों द्वारा जातीय भावनाओं, आदर्श और आकाशाओं का उद्घाटन किया जाता है ।'^३

खण्ड काव्य में जीवन की किसी एक घटना का वर्णन रहता है । जीवन की विविधता का इसमें अभाव होता है । इसका क्षेत्र भी महाकाव्य से सीमित होता है ।

१ गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ १७

२ डॉ० गकुलता दूब—काव्य रूपा के मूलस्त्रोत और उसका विकास— पृष्ठ ३३

३ गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ ८४

श्री विश्वनाथ मिश्र ने महाकाव्य तथा खण्ड काव्य क बीच को एक स्वतंत्र विधा मानी है जिसे एकाय काव्य कहते हैं। उनका मत है कि 'महाकाव्य म कथा-प्रवाह विविध भूमिमाया क साथ माट सता हुआ भाग बढ़ता है किन्तु एकाय काव्य म कथा-प्रवाह के माट कम होते हैं।' उन्होंने कामायनी, प्रिय प्रवास और साक्त को एकाय काव्य माना है।

मुक्तक काव्य क भी दो भेद किये जाते हैं। गेय मुक्तक और पाठ्य मुक्तक। पर यास्तव में देखा जाय तो जो पाठ्य है वह गेय भी हो सकता है और जा गेय है वह पाठ्य भी हो सकता है। पाठ्य और गेय को यदि हम विषय प्रधान और विषयो प्रधान कहें तो अधिक उचित होगा। गेय पदा म कवि का निजी भावाधिक्य अधिक होता है और पाठ्य मुक्तक में कवि तटस्थ होकर लिख डालता है।

गीति काव्य को श्लोको में लिखते कहते हैं। इसमें व्यक्तिगत सुख दुख की बात अधिक रहती है। इसमें कवि के व्यक्तित्व की छाप मुख्य रूप में रहती है। भावातिरेक और संगीत इसके मुख्य तत्व हैं। प्रथम को इसकी आत्मा तथा द्वितीय को इसका शरीर कहा जा सकता है। गुलाब राय ने गीति काव्य की व्याख्या करते हुए लिखा है 'यह काव्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक अंतः प्रेरित (Spontaneous) होता है और इसका कारण इसमें कला होते हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है।'

काव्य रूपा की विवेचना करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि काव्य क निम्नलिखित रूप हो सकते हैं —

- १ महाकाव्य
- २ खण्ड काव्य
- ३ एकाय काव्य
- ४ गीति काव्य
- ५ मुक्तक काव्य

बीकानेर में काव्य क रूप

उपयुक्त काव्य रूपों को ध्यान में रखते हुए यदि बीकानेर की काव्य

१ सराजिनी मिश्रा—साहित्यशास्त्र के सिद्धांत— पृष्ठ २५३

२ गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ ११०

चेतना को देखें तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इतने लम्बे समय में बीकानेर जिले में हिंदी में महाकाव्य और खण्डकाव्य स्वतंत्रता के पश्चात् नहीं लिखे गये।

विश्व का आदि कव्य कौन सा था और कैसा था इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। हा यह अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारंभ में काव्य मुक्तक शैली में ही लिखा गया और बाद में प्रबंध रूप में। इसका कारण भी स्पष्ट है कि मुक्तक की अपेक्षा प्रबंध काव्य लिखना कठिन है। प्रबंध काव्य लिखने के लिये परिपक्वता की बहुत आवश्यकता है। इसलिए यह देखा जाता है कि अधिकतर कवि प्रबंधकाव्य बहुत बाल्य में जाकर लिखते हैं।

स्वतंत्रता में लेकर आज तक हम बीकानेर में किसी भी प्रकार का प्रबंध काव्य दृष्टि गोचर नहीं होता है। हा स्वतंत्रता से पूर्व शम्भूदयाल सक्सेना ने अवश्य ही दो खण्ड काव्य लिखे जिनमें से 'उत्सव' में तो कवि दो कथाओं के बीच में उलझ गया है और किसी भी कथा का ठीक तरह से निवाह नहीं कर सका। स्वतंत्रता के बाद इस कवि द्वारा भी ऐसा प्रयास नहीं किया गया और न ही किसी और कवि द्वारा। हिंदी साहित्य के आयावादी युग में अवश्य ही प्रबंध काव्य लिखे गये, प्रयोगवादी युग में यह काय उस गति से नहीं हो रहा है। जब हिंदी साहित्य में भी ऐसा नहीं हो रहा है तो केवल बीकानेर में इस काल में कोई प्रबंध काव्य लिखा जाना कभी सम्भव हो सकता है क्योंकि यहाँ हिंदी काव्य का जन्म हिंदी काव्य जगत के बहुत बाद में हुआ है। बीकानेर के काव्य के लिए यह भी बहुत बड़ा बाधा है कि अपनी यात्रा बहुत बाद में प्रारंभ करके वह आज हिंदी काव्य जगत के माथे मिला गया है। यहाँ के कवियों का ध्यान इस यात्रा को पार करके जल्दी से जल्दी हिंदी काव्य जगत के साथ मिलने की ओर रहा है इसलिए प्रबंध काव्य की ओर ध्यान नहीं गया।

बीकानेर में हिंदी काव्य की यह बाल्यावस्था ही है। काव्य चेतना स्वतंत्रता के पश्चात् ही आयी है। शम्भूदयाल सक्सेना ने अवश्य स्वतंत्रता से पूर्व कुछ लिखा था। इस समय में जितने भी कवि लिख रहे हैं वे अधिकतर चालीस वर्ष की उम्र से कम हैं। आयु की अल्पता अनुभव, और अध्ययन की अल्पता भी प्रबंध काव्य न लिखे जाने का एक कारण है।

आज के इस युग में कवि सम्मेलना का महत्त्व बढ़ता जा रहा है और बीकानेर में कवि सम्मेलना का महत्त्व और भी अधिक रहा है। इस-

लिय आज कल कवि सम्मेलन प्रचार ने एक साधन बन गया है। कविया का अधिक ध्यान कवि सम्मेलनों की ओर ही रहा है और उसमें अपने गीत और कविताएँ सुनाते रहते हैं। इस दृष्टि में प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान न जाना सम्भव ही है। हिंदी का जो षट् रहा है और जहाँ स हिंदी जगत का प्रेरणाएँ मिली है उसमें बीजानर जिला बहुत दूर रहा है। उस क्षेत्र से यहाँ तक जितनी प्रेरणाएँ मिली उतना "स क्षेत्र में काव्य सजन भी होता रहा है पर इसमें अधिक न ही हो पाया है और न ही हममें अधिक सम्भव था।

राजस्थानी में प्रबन्ध लिखे आवश्यक गया थे किन्तु आज क कवि उनसे पूर्णतया अछूते हैं। स्वतंत्रता के बाद युग की परिस्थितियाँ बदल गईं और उनके साथ ही साथ समस्याएँ भी नवीन पदा हातीं रहीं और कविया का अधिक ध्यान इन बदलती हुई समस्याओं की ओर रहा है। इसलिए किसी प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान जाना असम्भव ही है। सन १९४७ से लेकर आज तक दश पर दो तीन बार आक्रमण हो गया रूपय का अधभूतयन हो गया वकारी, महंगाई और जनसंख्या की समस्या बनती जा रही है। अतः यहाँ क कविया का ध्यान इन समस्याओं की ओर जाना भी स्वाभाविक है। ये इन्हीं विषयों पर कविताएँ लिखते रहे और किसी भी प्रकार के प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान नहीं दिया।

गीति काव्य

काव्य अपने आप में ही हित कर (शिव) एक आनंद दायक (सुंदर) होता है। अगर काव्य में लयात्मकता भी समावेश कर दी जाय तो तब न सुगम ही जाय। काव्य का और संगीत का सम्बन्ध बहुत प्राचीन काल में रहा है और आज भी है। यही कारण है कि हम "विनय पत्रिका" का पढ़कर उससे काव्य का आनंद ले लेते हैं पर साथ ही उमगा कर संगीत का भी आनंद लेते हैं। इस दृष्टिकोण का ध्यान में रखते हुए यदि हम बीकानेर के काव्य का बर्णन हमारा ध्यान कुछ गीतकारों पर आवश्यक जाता है जिन्होंने कविताएँ और गीत दोनों लिखे हैं और उन्हें कवि सम्मेलनों में अच्छी प्रकार सुनाते हैं। गीतकारों और उनके गीतों का ज्ञान में पहले यह जरूरी है कि हम गीति काय का अर्थ और महत्त्व समझ लें।

जब कि पहले लिखा जा चुका है कि मुक्तक का अर्थ भेद होना है पाठ्य और गद्य। अभी गेय को ही गीति काव्य (गीत काव्य) कहते हैं। अग्रजी में

प्रगीत काव्य को लिरिक (Lyric) कहते हैं। महादेवी वर्मा के अनुसार "साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख दुःखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।" १ गुलाब राय ने प्रगीत काव्य की परिभाषा बताते हुए लिखा है "संगीतात्मकता और उसके अनुकूल सरस प्रवाहमयी कोमल का त पदावली, निजी रागात्मकता (जो प्रत्येक आत्मनिवेदन के रूप में प्रकट होती है), सक्षिप्तता और भाव की एकता। यह काव्य की अत्यन्त विधाओं की अपेक्षा अधिक अतः प्रेरित (Spontaneous) होता है और इसी कारण इसमें कला होत हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है।" २

उपरोक्त परिभाषाओं के अनुसार गीत काव्य के निम्नलिखित तत्त्व निर्धारित किये जा सकते हैं —

- १ आत्माभिव्यक्ति
- २ विचारा की एकता
- ३ जीवन की मार्मिक अनुभूति
- ४ सक्षिप्तता
- ५ कोमल का त पदावली
- ६ संगीतात्मकता

साधारणतया गीत दो प्रकार के होते हैं। एक साहित्यिक गीत और दूसरा लोक गीत। साहित्यिक गीत में रचयिता का निजीपन अधिक रहता है। लोक गीत में रचयिता का निजीपन तो रहता है किन्तु इन में साधारणगौरव और सामान्यता कुछ अधिक रहती है अतः वे वैयक्तिक रस की अपेक्षा जन रस उत्पन्न कर सकते हैं। साहित्यिक गीत भी मुख्य रूप में दो प्रकार के होते हैं। प्रथम 'गुह्य सवदनात्मक गीत' जैसे 'बबीर मोरा' और 'तुमरी के' 'विनय पत्रिका' और दूसरे 'व्यापित गीत' जैसे 'सूर' के 'तीना सम्बधा पद' ३

डा० शकुंतला द्विवेदी गीत काव्य का विषय के आधार पर छः भागों में विभाजित किया है— प्रेम के गीत भक्ति प्रधान गीत विचारात्मक गीत बुद्धि प्रधान गीत प्रज्ञा के गीत और सामाजिक गीत। ४

पारंपारिक विद्वानों द्वारा भी गीत काव्य के कुछ रूप निर्धारित किये

१ महादेवी वर्मा का निबन्धनात्मक गद्य— पृष्ठ १४७

२ गुलाब राय—काव्य के रूप ' ११०

३ गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ १११-१२

४ डा० शकुंतला द्विवेदी—काव्य के मूलसूत्रों और उनका विनाम पृष्ठ १५

गय हैं ।^१

- १ चतुदशपदी, सानेट (Sonnet)
- २ सवोधन गीत ओडे (Ode)
- ३ शोक गीत एलिजा (Elegy)
- ४ व्यग्य गीत मटाइर (Stire)
- ५ विचारात्मक रिफ्लेक्टिव (Reflective)
- ६ उपदशात्मक द्विटैक्टिव (Diadactive)

इन सब गीत प्रकारों में केवल सानेट में आकार की प्रधानता होती है (चौदह पंक्तियाँ होती हैं) और गेप सब में विषय की प्रधानता रहती है। पाश्चात्य विद्वानों ने जो गीतों काव्य के रूप माने हैं आज सभी हिंदी में मिल जाते हैं।

सन १९४७ से लेकर अब तक बीकानेर जिले में गीतों काय नभा कविता का साथ दिया है। कविता की तरह गीतों काव्य में भी समय पर ओडे आते गये हैं। यहाँ के लगभग सभी कवियों ने गीत लिखे हैं।

प्रेम जीवन की सबसे मधुर सबसे सुन्दर सबसे सबल और सबसे अनाखी अनुभूति है। प्रेम की भावना से प्रभावित होकर मानव कमित्वमय बना और उस गीत काव्य निर्माण की प्रेरणा मिली। गीतों काय प्रेम पूरा हृदय की सच्चा वाणी है। जिस कवि ने प्रेम की ज्वाला में अपने को तपाया नहीं उसमें सच्चे गीतों काव्य लक्षण नहीं प्राप्त हुए। गीतों काव्य जितना प्रेम भावना को लेकर निर्मित हुआ है उतना ही किसी भाव को लेकर नहीं। प्रेम प्रधान गीतों काव्य एक आर शृंगारिक और दूसरी ओर देश भक्ति की भावना से आपूर्ण है।

प्रेम के दो पक्ष होते हैं एक सयोग और दूसरा वियोग पक्ष। किसी ने प्रेम की मादकता का वर्णन किया है तो किसी ने उसकी विरह व्यथा का। बीकानेर के काव्य में दोनों प्रकार के गीत मिलते हैं—जैसे

‘हम रहे न रहे बात चलती रहे
 प्यार जिसको मिला जिन्गी भा गई।
 तुम रों न रहो पर यही सध रह
 रुग जिसका रोशनो आ गई।
 त्वना कुछ दिव्यता कुछ नहीं
 रूप देखा तुम्हारा मजा आ गया ।’^२

१ गुलाब राय—काय के रूप— पृष्ठ ११२

२ मगत सकमना—में तुम्हारा स्वर— पृष्ठ ५६

इसी प्रकार का यह प्रेम सम्बन्धी गीत है —

“पाकर तेरा प्यार आज मैं
नई बहारें ताना चाहू
तूने गीत दिये जो मुझको
नये राग म गाना चाहू
पर वागी के तार टूट जात हैं
गोरी गीत झूठे रह जात हैं।”^१

पर मानव हृदय का जिनना विरह प्रभावित करता है उतना सयोग नहीं। इस दृष्टि से जो विरह व्यथा को लेकर लिखे गये गीत हैं व वही अधिक प्रभावशाली है। सयोग की सीमा बांधी जा सकती है पर वियोग की नहीं —

‘घड़िया बाध लिया करती है
सीमाएँ सयोग की,
किन्तु गगन तक सिध जाती है
रेखा विधुर वियोग की।’^२

यहां तक कि कवि ने पीडा को जीवन का एक मात्र सहारा बना लिया है —

पीडा का हर एक झगारा
जीने का बन गया सहारा।^३

प्रेम प्रधान गीत-काव्य में दूसरी ओर देश प्रेम के गीत भी पाते हैं। जब कोई कवि देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण होकर गीत लिखता है तब उसी भावना के अनुरूप हम उसे देश प्रेम या राष्ट्रीय गीत कहते हैं। इस प्रकार के गीतों में प्रायः वर्णान्तरमकता रहने के कारण अल्प गीतों से सम्बन्ध होते हैं। इन गीतों के साथ युद्ध के गीत भी लिखे जाते हैं। इन राष्ट्रीय गीतों में अतीत वैभव की स्मृति व भविष्य का उज्रयण मिल एक युद्ध गीतों में उगरी की स्मृति की प्रधानता रहती है जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिये। ऐसे गीतों में कवि शोक प्रकट नहीं करता अपितु अज्ञानता के रूप में उगरी मराहना करता हुआ योरा का उत्साह बढ़ाता है।

बोकानेर में देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना के गीत लिखे गये हैं।

- १ हरिण भादानो-झूठे गीत-पृष्ठ १४
- २ हरिण भादानो-मदन की गली पृष्ठ १७
- ३ मदन सक्लना-मैं तुम्हारा स्वर-पृष्ठ २५

अनन्तर ये गीत चीन आक्रमण और पाक आक्रमण के समय के हैं। इनके अतिरिक्त भी समय समय पर इस प्रकार के गीत सामने आते रहे हैं।

‘डिक्टटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान
प्रेम का मंदिर स्नेह का उपवन मे है सत्य का गीत
इसके बगुन बगुन में गूँजा नित मिलन भरा संगीत।’^१

कवि की दृष्टि में भारत वप त्याग की भूमि है। यह ऐसा देश है जिसने स्वयं कष्ट भोग कर दूसरों को सुख प्राप्त और सम्मान दिया है।

‘मेरे देश में ससार को सम्मान दिया है
सुख प्राप्त स्नेह, शक्ति का वरदान दिया है
माना कि य रहता है खुद हठेशा कष्ट में
इस पर भी इसने चीन का सामान दिया है।’^२

यह प्रेम के गीतों में समूह गान भी गाये जाते हैं। जब बीर युद्ध को चलते हैं तो इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं —

‘हमारी दोस्ती में जो हमें चाहे यही कहते
मगर जब हम जगड़ते हैं दिशाएँ फटकर जाती है
हमारे दुश्मना की छातियाँ भी तड़क जाती है।’^३

कवि पीरो के शरीर में बहन भाले रक्त की महिमा बताता है —

हमारी देह में वीरागनाथा का लहू बहता
सदा जो प्राण में खेती उठी का दूध यह कहता
करोड़ों के ऊपर जनतंत्र का बुद्ध हो नहीं सकता
हमारी छाति का दुश्मन घरा में सो नहीं सकता।’^४

इस प्रकार हरीश भादानी रामनरेश सोनी आदि ने भी राष्ट्रीय गीत लिखे हैं।

प्रकृति और मानव का सम्बन्ध आदि काल से ही रहा है और बाध्य के आदि काल से ही मानव प्रकृति के गीत गाता आ रहा है। गीत का नाम प्रकृति

१ बन्धन शिवाहर—मैं एकाकी नहीं चलूँगा—पृष्ठ—३०

२ बन्धन शिवाहर—मैं एकाकी नहीं चलूँगा—पृष्ठ—३२

३ मलय मन्ना— मैं तुम्हारा स्वर—पृष्ठ २२

४ “ “ “ “ “ “ “ “ “ “ २४

का आलम्बन की अपेक्षा उद्दीपन का चित्रण अधिक हुआ है। कवि के सुखद भाव प्रकृति को सुखद रूप में और उसके दुःखद भाव प्रकृति में दुःखद भाव का प्रतिबिम्बित देखते हैं। इन कवियों ने प्रकृति सम्बन्धी गीत लिखे हैं —

“नीलिमा आकाश की, सागर तरंगों पर उतर कर

पूव दृष्टा नयन की, बन वाष्प जो छा जाय भू पर।”¹

प्रकृति सम्बन्धी गीत ‘अधूरे गीत’ और ‘मैं गीत सुनाता जाऊंगा’ आदि में भरे पड़े हैं। इन गीतों में अधिकतर छायावादी ढंग के गीत हैं।

इन गीतों के अतिरिक्त बोकानर में कुछ प्रगतिवादी गीत भी लिये गये हैं। इस प्रकार के गीतों में अधिकतर क्षोपिता की कारुणिक स्थिति का चित्रण है और साथ ही विद्रोह का स्वर भी जैसे —

ये धूल भरे काले नगे गोदी के लाल सिसकते हैं।”²

मा की छाती से लाल रक्त जब पानी बन उड़ जाता हो।

फूलों की तरह हसी हसता जब शिशु रो रो मर जाता हो।³

आज समय बदल गया है और समय के साथ साथ काव्य का बदलना भी आवश्यक हो जाता है। धाज के गीतों के विषय में भी परिवर्तन आ गया है। जहाँ पहले प्रेम गीत और प्रकृति के गीत लिखे गये वहाँ आज नगर बोध का और सामाजिक जीवन का चित्रण गीतों में होने लगा है। आज अन्न प्राप्ति की एक समस्या बनी हुई है उसके साथ ही देश की दृढ़ता हुई जनसंख्या इस समस्या को और जटिल बनाती जा रही है।

नगर-बोध के गीतों में आज शहरी जीवन का चित्रण है —

‘और जमी

घर घर में झूठे हीटर में

होड़ लगी।”⁴

“शहर सो गया है

जो रंग देखे

कगुरा छतों पर

विदाती हुई सामने

- | | | | |
|---|--|---|----------|
| १ | मेघराज मुकुल-उमग | — | पृष्ठ ४ |
| २ | हरीश भादानी-अधूरे गीत | — | पृष्ठ १४ |
| ३ | मेघराज मुकुल-उमग | — | पृष्ठ १८ |
| ४ | वातायन-आज का गीत धव, अप्रैल, १९६५-पृष्ठ ५० | | |

चिमनिया से उठा घुमा
पसर धो गया है ।¹

नगर बोध के इन गीतो में हर प्रकार के जीवन का चित्रण हुआ है । जहाँ एक
और सायरन बजने पर हलचल सी मच जाता है —

समय पर बजा
टयून क पीस सा सायरन
+ + +
घंतहाथ इधर स उधर
इकली उभरती अनग थाप ।²

वहाँ दूसरी ओर रात के सनाटे में होने वाला दुष्कर्म भी नहीं बचा है —

फितने बढ हाथ काले
कु आरे सिन्दूर पर
बासती रात की मंदिर सास
प्यास पर प्यास से जाम भर
ममल दी गई नव कली ।³

भूख ने मानव को आज किस तरह से व्यस्त कर दिया है । इसका
चित्रण भी गीतो में हुआ है । साथ ही आज के युग में मानव मानव के लिये
भजनबी बन रहा है । गीतकार उससे दिल खोल कर मिलना चाहता है ।

'आदमी भजनबी आदमी के लिये
तुम्हें मन खोल कर मिलने बुलाया है ।'⁴

बीकानेर के काव्य में इन गीतो में एक स्वाभाविक ढंग से विकास
दृष्टिगोचर होता है । प्राकृतिक गीतो में स्वयं का मन ही बहल सकता है और
किसी प्रकार की उपलब्धि उससे होना सम्भव नहीं है । लेकिन आज बीकानेर में
उस प्रकार के गीत नहीं लिखे जा रहे हैं अपितु ऐसे गीत लिखे जा रहे हैं जिनमें
या तो सामाजिक जीवन का चित्रण है या किसी समस्या का बयान है । इन गीतो

-
- १ वातायन—आज का गीत अरु अश्रित, १९६५—पृष्ठ ३१
- - - - - , - - - - - पृष्ठ ३५
२ - - - - - पृष्ठ ३७
४ - गीत अरु अश्रित १९६६—पृष्ठ ४३

मे नय उपमानो का प्रयोग हुआ है। यदि प्रकृति के किसी उपमान को लिया है तो वह भी नय ढग स। कविता क साथ साथ आज के गीतो मे भी व्यग्यात्मकता था रही है। आज के गीत और कविता का कथात्मक और तिल्पगत अंतर प्राय समाप्त सा हो गया है। मूल रूप मे वह काव्य है। गीतकार रुढिया तोड चुका है। अत वह छंद के बंधना से अपने आपको मुक्त करता जा रहा है। तुक विषयक संगीत आग्रह शिथिल होता जा रहा है।

मुक्तक काव्य

काव्य के अथ व षग मे एक जोर गीति काव्य को रखत है और दूसरी ओर मुक्तक को। सस्वृत म मुक्तक काव्य रूप को चर्चा प्रथम अग्नि पुराण म मिलती है -

मुक्त इमोक एकैकश्चमत्कारदाय सताम् ।^१

इसके बाद मे बहुत मे विद्वाना ने इसकी परिभाषा दी ह और काव्यानुशासन म मुक्तक का अर्थ और भी स्पष्ट हो जाता है।

‘अग्नि बद्ध मुक्तकादि’^२

साहित्य दपणकार ने मुक्तक को सबथा मुक्तक के ही अर्थ मे लिया है -

‘छंदो बद्ध पद्य तेन मुक्ततन मुक्तकम्’^३

मुक्तक काव्य के दो भेद बिय जाते हैं। एक पाठय मुक्तक और दूसरा गय। गेय मे निजी भावातिरेक की मात्रा कुछ अधिक रहती है। और पाठय मुक्तक म कवि बात को एक तिरपेक्ष द्रष्टा या वकील के रूप म कहता है। पाठय मुक्तक प्राय सुवितयो के रूप मे आते हैं। ऐसे मुक्तक प्राय नीति विषयक, शृंगार विषयक, धीरता विषयक होते हैं।^४

गीति काव्य मे भाव पद्य की प्रधानता रहती है परन्तु मुक्तक काव्य मे कवि की अनुभूति तथा की रसा वाडर नदी निकरनी अपितु उसकी अनुभूति पर बोद्धिजता एक शास्त्रीयता का भार बढ जाना है। अत उमम गीति काव्य का सा स्वरूप नही भन्नकन पाता। ऐस काव्य म कवि का ध्यान अनुभूति क साथ साथ

१- अग्नि पुराण अष्टाध्याय ३३७ इमोक ३३ पृ० - ४२१
 २- हेम चन्द्र काव्यानुशासन, अष्टाध्याय ८ मूक्त ५ ६ पृ० ४४६
 ३- विश्वनाथ कवितान साहित्य दपण परिच्छेद ३१६
 ४- गुलाब राय - काव्य क रूप - प० - १०८

वाह्य अलंकरण की ओर भी रहता है। इसमें कवि वाह्य ही दय की धार अधिक सचेष्ट रहता है। गीति काव्य में आंतरिक हृदयावग को स्थापन देना उसका प्रथम वाय होता है। अतः स्पष्ट है कि मुक्तक में आत्मनिष्ठता का अभाव हो जाता है। कवि अनेक प्रकार से अभिव्यजित रूप को सवारने लग जाता है जिससे अनुभूति पीछे रह जाती है। यही आत्मामिव्यजना का तत्त्व गीति काव्य को मुक्तक से भिन्न करता है।

पर इसका यह अर्थ नहीं है कि मुक्तक में किसी भी प्रकार का भाव पन नहीं हाना। भाव पक्ष के अभाव में किसी भी काव्य की कल्पना करना ही व्यर्थ है। मुक्तक में कवि के भावों पर कवि कम का आवरण रहता है। मुक्तक में गूढता भी रहती है। कवि अपना पांडित्य इसी में समझता है कि वह अपनी बात को अधिक से अधिक गूढ बनाने में किम प्रकार से सफल हो सकता है। इस प्रकार से उसमें चमत्कार की प्रधानता आ जाती है। कला पक्ष की प्रधानता हृदय नहीं बुद्धि का हल्का सा सहारा लेकर अनुभूति का महल खड़ा करता है। परन्तु मुक्तककार क यथा तो बुद्धि के नीचे अनुभूति खे जाती है। गीति उपदेश और आचार सम्बन्धी बातों से हृदय का नहीं बुद्धि का सम्बन्ध है।

मुक्तक में भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मुक्तककार की भाषा को समाप्त मुक्त हाना आवश्यक है। क्योंकि कवि को छोटे से आकार में माग भरना होता है। कवि को संक्षेप रूप में प्रत्येक बात को कहना आवश्यक हो जाता है। मुक्तक में चमत्कार और सौन्दर्य के लिए मुहावरों का प्रयोग भी किया जाता है।

घोषानर के कवियों ने गीतों के साथ साथ मुक्तक भी लिखे हैं। यथा पर अधिकतर मुक्तक राष्ट्रीय, प्रेम सम्बन्धी जीवन दर्शन सम्बन्धी और नीति सम्बन्धी मुक्तक हैं।

राष्ट्रीय मुक्तकों में कुछ तो राष्ट्रीय गौरव के हैं।
राष्ट्रीय एवता की ओर कवि ने अपने मुक्तक में इशारा किया है —

एक वंश, एक देश एक भाग है
एक साथ एक साथ एक राज है
आन के लिये पचास कोटि प्राण्य में
एक जोग एक रोग एक आग है।^{११}

कुछ ऐसे मुक्तक हैं जिनमें दुश्मनो का चेतावनी दी गई है —

इस उत्तर दिशा को छोड़ना,
तुम्हारी बहुत महंगा पड़ेगा
सिर्फ हमसे ही नहीं तुमको,
हवाओं से भी लड़ना पड़ेगा ।¹

कवियों ने परम्परागत मायताओं को भी मुक्तको के माध्यम से भक्तभारा है —

'जब जब भी गया मन्दिर लगा ऐसा,
प्रादमी भला है देवता ठगी से ।'²

कुछ मुक्तक प्रातम परक भी लिखे गये हैं । इसमें कवि अपनी ही बात कहता है । चाहे वह अपने प्रेम की हो, चाहे दद की और चाहे अपने विश्वास की । कवि को अपने पर पूरा विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य का छोड़ नहीं सकता चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, इसलिए वह कहता है —

"तुम मेनका बनो चाहे रम्भा
मेरी कलम रूप की दास नहीं
कितनी भी भिगार करो, महको
डिगा सकता मेरा विश्वास नहीं ।'³

कवि अपने प्राप को दद से जकड़ा हुआ समझता है और उसी दद में उलझ गया है ।

सुभा के आकडे सभी बोले बिना निकल गये,
और हम उलझ रहे हैं सिर्फ दद के हिमाव में ।'⁴

वीकानेर में प्रायः सभी कवियों ने जि दगी की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है कभी जि दगो उसे पूरा दिखाई देती है तो कभी वह गूल दिखाई देती है —

"जि दगो है पूरा भी और गूल भी ।
जि दगो ऊँची शिखा है गूल भी ॥

- | | | |
|---------------------------------|-----|----|
| १— हरीश भादानी — हसिनी याद की | पृ० | ८६ |
| २— योगेन्द्र किमलय का एक मुक्तक | | |
| ३— " " " | | |
| ४— हरीश भादानी — हसिनी याद की | " | २७ |

जिन्दगी को देख दोना आलो से -
जिन्दगी मझधार भी है बूल भी ॥”¹

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयो पर भी मुक्तक लिखे गये हैं जस गरीबी पर, प्रकृति पर, घासिक पाखण्डो आदि पर । परंतु ऐसे मुक्तक की अधिकता नहीं है । कुछ मुक्तक तो ऐसे हैं जो केवल शब्दों के चमत्कार में ही समाप्त हो जाते हैं । इनमें पाठक शब्दों के चमत्कार को ही देख पाता है अथवा किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं कर पाता । यहां के मुक्तक में कहीं पर क्लिष्टता नहीं है । इसका कारण यह है कि इन पुस्तकों की भाषा बहुत ही सरल है । मुहावरों आदि का प्रयोग यहां के मुक्तकों में नहीं हुआ है । बीकानेर में अधिकतर चतुशपदी मुक्तक लिखे गये हैं । यहां के अधिकतर मुक्तक में प्रथम तीन पक्तियों में सीधों वाली बात कही जाती है और चौथी पक्ति में बात को इस प्रकार में घुमाकर कहा जाता है कि वह प्रभावशाली हो जाती है । इस प्रकार यहां के मुक्तक की चौथी पक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली होती है । कुछ मुक्तक ऐसे भी हैं जिनकी चारों पक्तियां समान महत्व की होती हैं । यहां पर कुछ दो पदी मुक्तक भी लिखे गये हैं ।

यहां के कवियों ने इन मुक्तकों में परम्परागत छंदों को छोड़ दिया है और किसी भी प्रकार के मीमांसा बंधन को भी स्वीकार नहीं किया है । यहां के मुक्तक लय और तुक में बंधे हुए हैं परंतु लय और तुक परम्परा से मेल नहीं खाता ।

==

बीकानेर काव्य की अन्तर्चेतना (कथ्य)

कवि अपने युग का चितेरा होता है। युग में जो जो सामाजिक घात प्रति-घात, सांस्कृतिक उत्थान-वतन, ऐतिहासिक उत्कृष्ट अथवा अपकृष्ट और धार्मिक हेर-फेर प्रादि चलते रहते हैं कवि उन पर दृष्टि रखता है और कभी तो वह उनका मध्याय चित्र प्रस्तुत कर देता है कभी वह इ-हे इम रूप में प्रस्तुत करता है जिस ओर वह उस समाज को ले जाना चाहता है और कभी कभी वह परम्परा ग्रस्त हाकर युग से बहुत पीछे रह जाता है — अतीत में या किसी प्रवृत्ति-विरोध में फसा रह कर उसी पर मुग्ध रहता है। इस प्रकार उसका भारी सामाजिक दायित्व है और मजकूर ज्ञाने के नाते वह इसका जितनी कुशलता से निर्वाह करता है उतना ही वह अपेक्षणीय बन भी जाता है। उस पर समाज अपनी दृष्टि लगाय रहता है और वह समाज को अपनी दृष्टि में समाय रहता है। ऐसी पारस्परिक स्थिति से कवि का महत्त्वपूर्ण दायित्व हो जाता है।

समाज व्यक्तियों की समष्टि है व्यक्ति प्रतिपल परिवर्तनशील है। उसके विचारात्तम चिंतन में भावनाओं में प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहता है और जब यह परिवर्तन समस्त समष्टि में व्याप्त हो जाता है तब वह सामाजिक चेतना का घग बन कर प्रकट होता है और यह सामाजिक चेतना भी व्यक्ति के साथ गतिशील होकर अपने युग को आगे बढ़ाते चलती है पर इसकी गति उतनी तीव्र नहीं होती जितनी की व्यक्ति की।

व्यक्ति की गति और समाज की गति का क्रम यह है कि प्रथम व्यक्ति गतिशील होता है और द्वितीय में धीरे गति से आगे बढ़ता है। इससे समाज-पथ से बहुत पिछड़ जाता है जब यह दूरी विस्तृत हो जाती है तब कवि या किसी सामाजिक नेता का कर्तव्य हो जाना है कि उस समाप्त करे। इसलिए समाज में जब — जब ऐसी अवस्थाएं उत्पन्न हुई हैं तब तब ऐसे व्यक्तियों ने आकर ऐसी सामाजिक क्रांतियाँ उत्पन्न की जिससे समाज और व्यक्ति में सामंजस्य हो सका है। महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती हमारे युग के ही ऐसे

मनीषी है जि हाने दाना के बीच घटती हुई राई को भरने का प्रयास किया और वह सफलता भी प्राप्त हुई है।

साहित्य का समाज का चित्र होना है अपनी चाल में भी कुछ सामा-
जिक चान के समान हाता है और यदि स्थान विशेष का साहित्यकार परिस्थिति
वश देश के साहित्यकारों से अलग अलग पड़ा रहे तो उसकी गति और अधिक
म पर हो जाती है। इससे व्यक्ति और समाज का घे बढ़ने पर भी साहित्य का
नहीं बढ़ पाता और तब वह आकषण हीन बन कर अपने प्रकृत आदा स
हो जाता है और उमम पाठक ठवने लगता है। रीति काल का साहित्य बहुत
दूर चल कर समाज के लिये इसी प्रकार का बन गया था।

विषय वस्तु की नवीनता के साथ साथ कवियों के लिये यह भी आब
दयक है कि वह अपने गिव पत्र का भी नवीन और वस्तु के अनुरूप बनाये रहे।
यदि भाषा भावा की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो विषय वस्तु के परिवर्तन के
साथ गित्य में परिवर्तन अपेक्षित हो जाता है ऐसा न होने पर नवीन विषय भी
अनुरूप माध्यम के अभाव में अपनी प्रभावशमता खो देता है और पाठक में साहि-
त्यिक रचि बनाये रखने में अममय रहते हैं। भारत-दु युग के साहित्यकार ने
जब नवीन विषयों को पुराने चोले में प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया तो वह इतना
आकषक नहीं लगा और इसीलिये बाद में द्विविी युग की समाप्ति के साथ अनेक
रूपात्मक प्रयोग हि दी जगत में हुए। इस प्रकार काव्य में विषय वस्तु और गित्य
दाना में सामंजस्य अपेक्षित है। जहा ऐसा नहीं होता वहा कलाकृति पगु-सी
लगने लगती है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्वतन्त्रता पूर्व का युग बीकानर
जिले में वाली-स्वतन्त्रता का युग नहीं था। सभी रियासतों में एक विशेष दर्े के
चारणों कवियों को तो प्रोत्साहन और आश्रय मिल रहा था पर प्राय विषयों को
लेकर लिखने वाले कवियों को न तो प्रेरणा प्रदान की जाती थी और न उह
तन्त्रात्रीन नरेशों को और से स्वीकृति और मान्यता ही मिली थी। इसलिये या
तो कलाकार जन्मते ही कुचल दिये जाते थे या वे अपनी सहज प्रतिभा को इधर
उधर मोड़ कर व्यक्त कर पाते थे। कभी कभी तो वे चारणों डग से भा कविता
या गद्य लिखने के लिये प्रेरित होते थे। ये अभिव्यक्ति के दोरा साधना के अभाव
में प्रकाशन और कवि सम्मेलनों में कविता पाठ के अभाव में निराशामय जीवन

व्यतीत करते स तथा अपने कवि रूप की हत्या करत से प्रतीत होत थे । ऐसी विषम परिस्थितिया मे भी जिन कविया ने काव्य जैसी पुनीत प्रतिभा की सेवा करन का प्रयत्न किया है उनमे शम्भुदयाल सक्सेना आदि का उल्लेख पहले हो चुका है । उन सभी कविया ने या तो अपनी कविता क लिख ऐम विषय चुने जो श्रतीत से सम्बन्ध रखत हैं अथवा जिनका तत्कालीन सामाजिक चेतना से कोई सम्बन्ध नहीं और जहा वही उ होने ऐसे विषयो को भी चुना है जिन पर गेप भारत म निर्भङ्गता स कविता लिखी जा रही थी वहा उहाने कुछ ऐसी साहित्यिक युक्तियो को अपनाया है जो इन परिस्थितियों मे प्रपञ्चित होती है ।

पर ऐस अकृश मे भी कुछ ऐसे विचारक और कवि जन्म लते है जो कवन अपने हृदय की सच्चाई पर जीत हैं, उनकी अभिव्यक्ति को किसी भी प्रकार अवरोध करना राजतंत्र की शक्ति की परे की बात होती है । समाज म ऐस व्यक्तियो कातिया की है और काव्य म ऐसे ही व्यक्ति नवीन दिशा प्रस्तुत करत हैं । आचार्य चन्द्रदेव प्रभति कवि इसो रेणो क हैं । उ होने वह वहा जो उनके हृदय की अनुभूति थी और उसकी शैली मे भी प्रच्छन्नता और परोक्षता क स्थान पर प्रत्यक्षता और श्रुता मिलती है । ऐम ही कवियो ने इस क्षेत्र के काव्य को गेप हिंदी काव्य से सम्बद्ध किया और इस प्रकार हिंदी साहित्य म जो कुछ हो रहा था उसका सक्षिप्त संस्करण यहा भी देखने का मिलता है ।

देश की स्वतंत्रता क साथ जब राज्य म भी स्वतंत्रता मिली ता अनेक हृदय सहसा अनेक दिशाओ म बह चले और इसलिए अनेक काव्य विषया पर कविता लिखी जाने लगी । जिन राजनैतिक विषया को छूना तक पाप था उन पर अब उ मुक्त वागो संभव प्रकट हुआ । सामाजिक विषया म भी अनेक रूपता आयी । कवि के धर्मिमान का हृष और उत्साह, प्रेम और वदना, घणा और क्रोध आदि अनेक भाव अनेक दिशाओ म बह चले—अपनी निश्चित परम्परा का छोड कर नव पथ निर्माण मे अग्रसर हुए । गेप राष्ट्र मे सम्बन्ध स्थापित होन स तजो के साथ वे सभी विषय और काव्य रूप बीकानेर म प्रकट हुए जो अब तक यहा प्रवेश नहीं पा सकने थे । इन प्रकार कविता की अवरोध चेतना महसा बहु मुली होकर प्रकट हुई और इसम एक धार ता पुराने कविता को नव विषय मिले और दूसरो और इस क्षेत्र म नवीन कविता का उदय हुआ ।

बीकानेर के काव्य म प्रकृति चित्रण —

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध आदि काल से रहा है। जन्म से मृत्यु तक मानव प्रकृति के प्राणम ही सास लेता है। आरम्भ मे प्रकृति अपनी ममता मयी क्रोड मे मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती है। प्रकृति के नाना रूपों के साथ कविया न अपना र गायक सम्बन्ध स्थापित किया है और काव्य रचनाओं मे प्रसगानुकूल प्रकृति का उपयोग भी किया है। प्रकृति की गति विधि मे मानव की गति विधि है और मानव की गति विधि मे प्रकृति की गति विधि प्रारम्भ से ही मिलती है। कविता कानिनी के शृंगार मे प्रकृति ने अपना सर्वाधिक योग प्रदान किया है। हिन्दी काव्य में छायावाद से पूर्व भी प्रकृति चित्रण हुआ है पर इस काल मे कवियों का मन प्रकृति — चित्रण म विनोद रमा है। इस काव्य म प्रकृति पर चेतनता का आरोप किया गया है।

बीकानेर प्रकृति की अनुदारता का क्षेत्र है। इसलिए जहा देग म प्रय कवियों से सरिता, निम्बर और पवता के सौ दय पर मुख होकर प्रकृति का मनो हारी वणन किया है वहा बीकानेर का प्रकृति प्रेमी कवि यहा क रेत के बड़े-बड़े टीना पर ही भुग््न हो जाता है और उ ही म उस सौदय दिखाई देता है —

तुम द्रु पुरी से सुन्दर थे
मेरे मरुधर के मुखद ग्राम
तरे रेतीले घोरो पर
उल्लास बिछाती सुबह नाम ।”¹

बीकानेर म श्रावण का महीना बहुत ही सुहावना माना जाता है।² इस महीने म यहाँ की मरुधरा पर एक विशेष प्रकार का सौ दय सा छा जाता है, चारा और की हरियाली प्रत्येक के लिए सुखदायी हाती है और इस हरियाली से बीकानेर का कवि भी अछूता नहीं रहा है। राजस्थान म ‘सावणियारो तीज’

१ मालदान मनुज — विष्णव मान पृष्ठ—३३-३४

२ यहा के श्रावण मास के लिए एक लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है —

‘सियाली खाद्द मलो, ऊनालो धत्रमेर,
नागौर तो नित रो मलो सावण बीकानेर ।’

का बहुत महत्त्व है। प्रकृति का उस समय का मनोरम दृश्य यहाँ के समाज में आनन्द और उत्सव का समय होता है, जो तीज व त्यौहार व झूना पर झूने में प्रकट होता है —

“फिर” तीज्यो का त्यौहार सुखद
सखियाँ के मादक गीत मधुर,
झूलो के मस्त झकारा पर
जाते उर के धरमान बिखर।”¹

बसंत ऋतु के स्वागत में चारा और हरियाली फैल जाती है —

‘पीपल की फुगनी पर बोली
पंचम स्वर में कोयल काली,
मादक मधु ऋतु के स्वागत में
कोसा तक फैली हरियाली।”²

इस प्रकार से बीकानेर के प्रकृति प्रेमी कवियों ने यहाँ की प्रकृति की खूबी आला से देखा कर उसका सौंदर्य एवं उससे उत्पन्न होने वाले प्रभाव का सुन्दर चित्रण किया है।

हिन्दी काव्य में प्रकृति का जो परम्परा से चलान चलता आ रहा है वैसे चित्रण भी बीकानेर के कवियों ने किया है। प्रकृति का मानवीकरण रूप दृष्टव्य है —

“दीप रजनी ने सजोया
या दिवस दुल-प्रश्रु रोया ?
रश्मि पट में पाछ कर मुरा
धाम अचल का किनारा
झिलमिलाता साध्य तारा।”³

+ + +

ऊपर स्वरा मुटाती जाती सध्या जाती राग रचायें⁴

१	मालदान मनुज-विप्लव गान-	पृष्ठ ३३
	“ ”	” ३३
३	शम्भूत्याल सक्तेना-रैन बसेरा	पृष्ठ ६७
४	“ ” -तीहारिका	पृष्ठ ८२

प्रकृति पर से मानवीकरण के पदों को हटा कर उसको स्वतंत्र रूप में भी चित्रित किया है —

“तरु तरु पर है किसलय छाया
मादक है बस त लहराया”^१

इनके अतिरिक्त भी इन कवियों ने प्रकृति को अग्र रूपों में भी चित्रित किया है। छायावादी काव्य में प्रकृति के जिन रूपों का चित्रण हुआ है उन सभी रूपों का कारण बीकानेर का काव्य में हुआ है। इस प्रकृति चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय रंग की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

नारी एवं प्रेम का चित्रण

नारी और प्रेम को लेकर विश्व में जितना साहित्य रचा गया है उतना अग्र विषयों को लेकर नहीं लिखा गया। बीर गाथा काल में नारी युद्ध का केन्द्र बिन्दु थी। उस समय के अधिकतर युद्ध नारी को लेकर ही हुए हैं। भक्ति काल में नारी को विषयासक्त का मूल हेतु होने से उससे विरक्त होने की और कवियों ने सचेत किया है। रीति काल में कवियों की दृष्टि उसके नख शिख से दूर नहीं गई। नवनि काल से छायावादी कवियों ने नारी के सौन्दर्य एवं प्रेम का वर्णन किया है जिसमें सूक्ष्मता और कोमलता है।

नारी का सौन्दर्य अनमोल है। बीकानेर का कवि कली में व्याप्त लाली का कारण नारी सौन्दर्य ही मानता है —

कितनी सुन्दर हो, भोली हो, बड़ी निराली
कली-कली पर मुग्ध तुम्हारी निखरी लाली’^२

कवि को आज का फैशन पसंद नहीं है वह तो अवगुण्ठन को ही पसंद करता है —

‘साज तुम्हारी बंधी रहे प्रिये ! अवगुण्ठन में ही शरमाओ’^३

नारी के सौन्दर्य वर्णन का रूप भी बदल गया है। कवि लोग बहुत पहले से नारी के अंगों की उपमा कमल खजन पक्षी आदि से देते आये हैं। पर

१ आचार्य चन्द्रमौलि— वीथिका—पृष्ठ ७८

२ भाणक चन्द रामपुरिय— सदीप्ति— ’ ११०

३ आचार्य चन्द्रमौलि— वीथिका— ’ २६

आज का कवि ऐसा नहीं करता है, वह नारी के समान दुनिया की किसी भी वस्तु को नहीं समझता है —

“यह सब झूठ है
कि तुम्हारे गालों और पूंजों में
कोई समानता है

× × ×

अब मैं यह समझ गया हूँ
कि तुम केवल 'तुम' हो
और तुम्हारी समानता

दुनिया की

किसी भी दूसरी वस्तु से नहीं”^१

नारी के कई रूप हैं, वह मा बहिन प्रियसी सभी कुछ है। बीकानेर के कवियों ने नारी के सभी ही रूपा का चित्रण किया है पर तु अधिकता उसमें प्रियसी रूप की है। अन्य रूपा का चित्रण तो केवल राष्ट्रीय कविता में हुआ है। वहाँ नारी का प्रत्येक रूप राष्ट्रीय भावना से आत प्रीत है और वह देश के लिये अपने भाई पति, पुत्र सभी को -योद्धावर होने को कहती है। ऐसी कविता में मा धपन बैठ से कहती है —

बेटा मेरी बूख उजागर तब ही होगी

जब तू मेरी भारत मा पर मर मिट जाएगा।^२

मानव की नारी कभी देवी के रूप में दिखाई देती है तो कभी नागिन के रूप में और कभी अन्य रूपों में। इतने अधिक रूपा के कारण वह नारी को समझने में असमर्थ है और वह सदैव मनुष्य के लिए एक पहली बनी हुई है, जैसे —

“कौन हो तुम ?

जो कभी तो सुरभिमुख करती

घरा को, गगन को कदराओ को—

अपनी केसरिया-कस्तूरी गंध से

× × ×

१ रामदेव भाचाय — अक्षरा का विद्रोह — पृष्ठ ७३

२ मेघराज मुकुल — अनुगूज — ' २८

“कभी तुमासुलगती रहती इस तरह की
जैसे बंद घर के कपडों में लगी हो आग,

× × ×

कभी तुम असहाय सी लगती
घरा के दक्ष पर इस तरह कि
जैसे हो गई हो डाल नगी’^१

इसके अतिरिक्त आज के कवि ने तो नारी को आत्महत्या का पर्याय मान लिया है —

‘आत्म हत्या और नारी
दो समान-धर्मों पर्याय है
मेरे इस देश भारत में ।
आत्म हत्या-बनाम नारी,
नारी पर्याय आत्म हत्या ।’^२

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत नारी को समानता का प्रश्न उठा और उसे भी सविधान से समानमतार्थकार का अधिकार प्राप्त हुआ । इससे नारी आत्म निर्भर हो गई और साथ ही उसमें पुरुष से आगे बढ़ने की भावना प्रबल हुई । इन कवि का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ और वह उसे प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखने लगा —

“साथ-साथ रह चुके बहुत भव चले विरुद्ध दिशाओं को रथ
प्रतिद्वंद्विनी बनो तुम नर की अधिकारा को तुम अपनाओ’^३

अधिकार लिप्ता में डूबी हुई आज की नारी मानव से हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है ।

नारी धरुण के साथ-साथ बीकानेर के कविदा १ प्रेम का चित्रण भी किया है । प्रेम जीवन की सबसे सुंदर भवम सबल और सबसे अनोखी अनुभूति है । प्यार का आनंद बहुत मधुर होता है —

मधुर है प्यार की भाषा
जिसे कहता सदा काई

- १ हरीश मादानी— सपन की गली— पृष्ठ २३ २४
२ रामदेव आचार्य — अक्षरों का विद्रोह— ” ७२
३ शम्भूदयाल सक्सेना— नौहारिका— पृष्ठ ८१

गहन गम्भीर अंतर है
जहाँ लोया नदी बौई'^१

प्रेम के सतार में घासा घोर अविश्वाम के लिए बौई अगह रही है। प्रेम में
दिमाग की नहीं दिल की आवश्यकता ? —

“तुम्हारे घोर मर पीच
श्रुतिमता का बार्दे पग लो,
क्याकि दिन तुममें
दिन से प्यार किया है,
दिमाग से नहीं।”^२

प्रेम ही एक ऐसा है जो मनुष्य के हृदय के तारों को झटूत कर देता है और
सबका मुगधि को सतार की राई भी गति राक नहीं मक्ती —

‘प्यार तो निरर्थक माइक ग घ जिमका पथ करता उद बन सतार है ?

प्यार मन के तार की अकार कामल घोर भीष्म गति की तलवार है’।^३

इस प्रकार में बीकानेर के कविया न तारी के विभिन्न रूपा उसक सौन्दर्य
एक प्रेम का वरण किया है।

राष्ट्रीय भावना का चित्रण —

जब कवि ने प्रेम की भावना में श्रोत प्रीत होकर काव्य का निर्माण
करता है तो राष्ट्रीय कविता की मजना होती है। हिंदी का यह सौभाग्य रहा
है कि इसके काव्य में राष्ट्रीय भावना वीरगाथा काल से लेकर आज तक की
कविता में प्रकट या प्रवृद्धन रूप में प्रवाहित हुई है। वीरगाथा काल के काव्य में
यह भावना उत्तमी व्यापक नहीं दिखाई पटती जितनी की परवर्ती काव्य में दिखाई
पडती है। इस समय के चारण भाटा ने अधिकतर अपने आश्रय दाताप्रा की
प्रणाम की है। भक्ति काल में तुलसी की कविता में यत्र तत्र राष्ट्र प्रेम के उद्गार
भरे पडे हैं। रीति काल के भूषण ने राष्ट्रीय भावना में प्रेरित हाकर अनेक
मुक्तका की मजना करते हुए राष्ट्र नायक वीर शिवाजी के दरवार में भी सम्मान
पाया है। व्यापक राष्ट्रीयता का स्वरूप और भावना देश में सन १८५७ के स्व-

१ मागक चन्द रामपुरिया — मधुज्वाल—

पृष्ठ ५

२ रामनेच आजाय — अमरा का विद्रोह

” ७२

३ मागक चन्द रामपुरिया — स्वराज्य—

” ३४

त प्रता सग्राम मे देखन को मिलती है । चाहे यह क्रांति सकन नही हुई, फिर भी इससे राष्ट्रीय भावना का देश में विकास हुआ । भारत-दु काल से लेकर राष्ट्रीय भावना की कविता का विकास उत्तरोत्तर बढ़ता गया और राजनीतिक परिस्थिति के अनुरूप कवियों की भावना में नवीनता आती गई ।

बोकारनेर के स्वातंत्र्यांतर काव्य पर भी एक दृष्टि डाले तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि यहाँ का प्रत्येक कवि राष्ट्रीय भावना में ओत प्रोत होकर कवि काम में प्रवृत्त हुआ है । देश के स्वतंत्र होत ही यहाँ के कवियों की प्रवृत्तियाँ भी स्वतंत्र हो गईं और जो कवि बहुत समय से अपने हृदय में देश प्रेम की भावना दबाये बैठे थे उह दूम काल में अभिव्यक्ति मिल गई । युद्ध या अन्य किसी प्रकार से जब देश पर सकट आ जाता है तो राष्ट्रीय भावना का विकास अधिक होता है । ऐसे समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने देश के लिए मर मिटना चाहता है और कवि गण भी अपना कलम से देश में इस भावना का धमन करते हैं ।

बोकारनेर के कवियों ने यद्यपि आनाच्य काल में राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर कविताएँ लिखी, पर उसमें विशेष गति तब तब उत्पन्न हुई जब जब देश में राष्ट्रीय आगृति आइ है । इसलिए बोकारनेर के कवियों ने एक तो उस समय राष्ट्रीय कविताएँ लिखी जिस समय देश स्वतंत्र हुआ था । इस समय में देश वासियों के हृदय में प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी, क्योंकि न जाने कितने वर्षों का परतंत्रता के पश्चात् देश स्वतंत्र हुआ था । इस प्रसन्नता को कवियाँ ने अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया है —

“मिट गई कालिमा है नभ से
मस्तक पर कु कर्म — राग विमल
आई स्वतंत्रता ले ऊया,
खिल गया देश का हृदय कमल ।”^१

इस समय की कविता जानद और उत्साह से परिपूर्ण है । कवियाँ ने अपने देश के वैभव का बहुत बखान किया है, इसलिए वह वैभव पूर्ण भूमि पर बार बार जन्म लेना चाहता है —

सरिताया का दश हमारा यही हस होत है
यही ओढ कर हिम की चादर शैल शिवर सोते हैं ।”^२

- १ आचार्य चन्द्रमौलि — वैजयंति
२ शम्भूदयाल सबसेना — निहारिका—

इस लिए वह चाहता है कि —

“इसका पक्कू कीट भी होना मेरे मन भाता हो
उठते हुए वायु में इसके बरण बरण स नाता हो
फिर फिर जम्मू में पुनः पर रहूँ न इसस यारा ।”^१

यहाँ कवियों ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत वप ने ही विश्व की मानवता का पाठ पढ़ाया है। स्वयं कष्ट में रहकर भी दूसरों की सुख और शांति दी है —

“मेरे देग न ससार की सम्मान दिया है
सुख-शांति, स्नेह शक्ति का वरदान दिया है
माना कि ये रहा है खुद हमेंगा कष्टा में
इस पर भी इसने चीन का सामान दिया है”^२

स्वतंत्रता के उपरांत देग पर दो देगों के कार्यक्रम हुए हैं और इन दोनों अवसरों पर बीकानेर के कवियों ने बहुत सी कविताएँ लिखी हैं। अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करने के लिए तथा वीरों में नया उत्साह भरने के लिए कवियों ने अपनी मातृ भूमि पर न्योछावर होने वाले वीरों की याद किया है —

“यहाँ सिवाजी, लक्ष्मी बाई, बलिदानों की कहे कहानी
यह प्रताप की जन्म भूमि, सघनों की दे रही अजानी ।”^३

वह अपनी मातृ भूमि पर आँख उठाने वाले शत्रु को कुचल देना चाहता है। वह अपने वीरों से यही कहता है —

नेफा और लहाख बुलाते
आज तुम्हें भारत के बीर
आते हुए सुट्टरा की तुम
बढ़ कर देना छाती चीर ।”^४

कार्यक्रम के समय की कविताओं में शत्रु को भी चेतावनी दी है और

१	शम्भूदयाल सक्सेना — नीहारिका —	पृष्ठ १३
२	बलभेश दिवाकर — मैं एकाकी नहीं चलूँगा	” ३२
३	मेघ राज भुक्तल — अनुगुण —	” ६
४	श्रीम वेवलिया — शवनम —	” ७३

उस उसकी दुबलता और भारतवर्ष से युद्ध करना पर क्या फल मिलेगा वह भी पहले से ही बता दिया है। कवि अपने अनुशासक का कामता है —

“जान वैसे माँ जन्म लिया था तुमको,
जाने किस धरती में भार तुम्हारा भरा

+ + +

भूठ तुम्हारा जनक माँ तुम्हारी है दूना
कपल जान म गम धारणा है तुम्हारी”^१

कवि अपने शत्रु को पहले मर्त्य मरेत कर देना चाहता है —

सुन लो
ममार मुनेगा विस्फोट का
राज नहीं तुम पाशापतिर
बन्त हुए जमाना का”^२

अस प्रकार से बीकानेर में बहुत सी राष्ट्रीय कविताएँ लिखी गई हैं। आक्रमण का नाम देश के प्रत्येक नागरिक का ध्यान देने की ओर रहता है और तब व्यक्तिगत स्वार्थों को छोटा दिया जाता है। इस दृष्टि में कवियों का भी यह कतय हा जाता है कि वे भी अपने स्वयं की जनता में राष्ट्रीय भावना का संचार करें। जिससे जनता देश की सुरक्षा में अधिक में अधिक योगदान कर सके। बीकानेर के कवियों ने भी इन दोनों अवसरों पर अपने कतय का पानन किया है और नागरिकता में राष्ट्रीय भावना का विकास भी किया है।

शोषक-शोषितों के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि

यहाँ के कवि ने समाज की दो वर्गों में रस कर देखा है—शोषक वर्ग एवं शोषित वर्ग। शोषक वर्ग पूँजीवादी व्यवस्था को बनाये रखना चाहता है। जब तक पूँजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तब तक शोषण भी चलता रहगा और जब तक शोषण चलता रहेगा तब तक शोषित वर्ग अपना जीवन मूल से व्यतीत नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में शोषक और शोषितों के बीच गहरी खाई बनी रहेगी। यहाँ के प्रगतिवादी कवि यह नहीं चाहते कि एक व्यक्तिता वातानुकूलित

१	मेघ राज मुकुन	—	अनुशू ज	—	पृष्ठ	४५
२	श्रीम कल्याण	—	गबनम	—		८१

वक्ष्मा म विथाम कर और दूसरा सडको पर भोजन और वस्थ के अभाव म सर्दी मे ठिठुरता रह । इस प्रकार से एव मनुष्य का खून चूस कर दूसरा मनुष्य सुप्त की नींद सोता रहे ऐस व्यक्ति इन बवियो की दृष्टि मे मानव कहलाने के योग्य नहीं है —

“मानव हाकर जो दानव का
है रूप लिय फिरते करान ।”¹

इसलिए ऐसे मानव को कवि ‘नरक कीट’, वासना पक भे सने, कतुपदाग आदि रूपा म देखता है —

धरे नरक के कीट ।
वासना पक निमज्जित ।

× × ×

‘वसुधा के वपु पर रे, कतुप दाग तुम निश्चन
शोपक रे, दुर्दांत दस्यु, गर्वो नत प्रतिपल” ।²

कवि की दृष्टि मे शोपका की स्थिति कीए और चील से थोष्ठ नहीं है —

“कीए और चील से शोपक,
दूषो का ले मास उठ रह ।
प्रभुता के बग्दान दीन की
धात खीच कर पट भर रहे ।”³

वह इन शोपका का धीमत्त चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि य मानव को खाने वाले तथा लाहू पीने गाने हैं —

“क्या कभी सुना भी है तुमन
मानव, मानव को खाता है,
पीकर लोहू, चाटकर जीम,
फिर हस्तकर दात दिलाता है ।”⁴

१ प्राचाय चन्द्रक —	पङ्क्तिजी गजब हो रहा है—	पृष्ठ ५६
२ मालदान देपावत मनुज—	विप्लवगान—	” ३२
३ मेघराज मुकुल—	उमग—	” २८
४ मालदान देपावत मनुज—	विप्लवगान—	” ३६

इस प्रकार स दून कविता को समाज क उस वग से प्रत्यत घणा है जा समाज के दूमर वग का शोपण करता है और उर् मानव नही समभता है । इनकी दृष्टि म सबसे नीच व्यक्ति शापक है । इसलिए इहान अपनी कविताओ स इनक प्रति खूब घणा व रोप प्रकट किथ है ।

इन प्रगतिवादी कवियो ने जितनी अधिक घणा और रोप गोपक वग क प्रति प्रकट किया है, उसनी ही शोपित वग क प्रति महानुभूति दिखाइ है और कारणाक स्थिति का चित्रण किया है । शापण से बढकर मानव क लिए और काइ अभिक्षाय नही है । आज के युग म शोपण का चक्की क पाटो म पितन वाने मजदूर विज्ञान और पीटिता का विष न स्थिति का इ होन घणम किया है —

नगी पडी घग घा पहले भूय स्वय अरव नगी है ।
मा की छाती से चिपटे शिशु को जीन की लगी है ॥
ग्यासी आखें बता रही है, खून चूकता जाता है ।
नगा भूया ऐयागी पर याज चूकता जाता है ॥ 1

शोपक वग द्वारा गोपित वग को इतना अधिक कुचल लिया जाता है कि उसक बडे स बडे गोपण का भी विरोध नही कर सकता । ऐसी स्थिति मे शोपित वग अपनी विवशता के कारण उनके गोपण को सहन करता रहता है —

‘‘दखो वह शैशव पिमना है
शोपण के तीक्ष्ण आरा मे
देखा वह जीवन बिकता है
गली गली मे बाजारा मे ॥’’²

शोपित अपग है और विवग है व तो बेवन ग्राह भर सकत है उमी का व्यापक प्रभाव कवि ने दिखाया है —

‘‘शोपित जन क उच्छवासो म
वह काप रहा अदनी अम्बर ॥’’³

इस ससार मे शोपिता का जीना तो वैस ही बहुत दूमर हो जाता है और अकाल

१ मेघराज मुकुट—	उमग—	पृष्ठ २०
२ मालदान दपावत मनुज—	विप्लवगान—	” ५६
३ ‘ ‘ ‘ ‘	‘ ‘ ‘ ‘	” ७२

य तो इनकी स्थिति और भी अधिक दयनीय बन जाती है तब तो इन्हें मृत्यु का ही आश्रय करना पड़ता है। कवि ने बगाल के अकाल का वर्णन किया है —

“लास्ता मरते हैं बगाली,
सब अन्न बिना, भूखे, जजर।”^१

सारे जीवन कठिन म कठिन मेहनत करने वाले मजदूर को मृत्यु के समय कफन भी नहीं मिलता। इसमें बुरी स्थिति उन गरीबों को और क्या हो सकती है।

गापिता म अधिकांश वग के अतिरिक्त कृषक वग भी आता है, जो श्रम सा बहुत करता है परंतु रहता नगा, भूखा ही है। ऐसी विपन्नता में वह अपना मन प्रसन्नता से काम नहीं कर सकता, क्योंकि करके मार से आज वह दब सा गया है —

“कमंड किमानो के तेलों पर
आतक ध्वजा फहराती है
इनके व देवस लगान देव
कर मानवता धरती है।”^२

शोषितों के करण गान के साथ साथ शोषकों का प्रभाव नारी के चारित्रिक पतन पर भी लिखा गया है। उससे इन हीन काय के पीछे गरीबों का हाथ प्रवश्य रहता है। अपनी पेट की जवाबत का शांत करने के लिए उन्हें यह सब कुछ करना पड़ता है और उसको बढ़ावा देते हैं पैस वाल —

‘वे उस दुकान पर जाते हैं
जिस पर जीवन बिकना रहता है
पैस पैस के बदले में
जो मिट्टी में मिलता रहता है।’^३

× × ×

रूप का बाजार लगता है यहाँ पर, मित नई होकर बिक करती जवानो।^४
इस प्रकार इन कवियों ने अपने चारों ओर तथा दक्ष में व्याप्त गायक का चित्रण

१ आचाय चंद्र देव—	पश्चिमजी गजब हो रहा है—	पृष्ठ १२
२ मालदान देवावत मनुज—	विप्लवगान—	” ३५
३ “ “ “ “	“ “ “ “	” ३६
४ आचाय चंद्रदेव	पश्चिमजी गजब हो रहा है—	पृष्ठ २७

किया है।

रूढ़ियो एव परम्पराओं का खडन तथा सामाजिक क्रांति की भावना

बीकानेर के प्रगतिवादी कवियो ने सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियो का खडन किया है। समाज में जितनी भी रूढ़ियाएँ परम्पराएँ हैं, य सभी कवि इस मुक्त होना चाहते हैं। वास्तव में इस विज्ञान के युग में इन रूढ़ियो का तब सम्मत समाधान नहीं मिलता है इसलिये वे पग पग पर प्रगति बाधक प्रतीत होती हैं। अतः जब समाज उनको त्याग कर नवीन पथ का अनुसरण करता है तब कवि भी आनन्दमय स्वर में कह उठता है —

‘जीएँ पुरातन परम्परा से पत्ला छूटा।

आज व्योम का प्रथम बार ध्रुवतारा टूटा।’¹

× × ×

घबित खा बँठी पुरानी मायताएँ

आ रही सघप करती सफ़रताएँ ॥²

य कवि लकीर के फकीर नहीं है। मूर्ति पूजा, घम के अथ उपकरण इनकी दृष्टि में तुच्छ है। वे इन सबको मिटाना चाहते हैं। वे मंदिर में भगवान की मूर्ति को पत्थर से अधिक कुछ नहीं समझते —

‘मंदिर में जो बसता ईश्वर

वह तो पत्थर है पत्थर है”³

बड़ी बड़ी सभाओं में पण्डित जी बैठे बैठे भगवान के रूप का वर्णन करते रहते हैं परंतु बीकानेर का प्रगतिवादी कवि इस रूप का स्वीकार नहीं करता है। उसके अनुसार तो आज भगवान की स्थिति कुछ इस प्रकार की हो रही है —

‘सर पिचक गया है ईश्वर का

उसका मस्तेक, उसका नलाट

सह गया आज,

कर रहे वहा कीड़े किंवदिल

२ मेघराज मुकुल

उमरग—

पृष्ठ ६

३ ” ”

”

” ५२

४ आचार्य चंद्रदेव

पंडितजी गजब हो रहा है—

’ ६६

भुजदड सूख बलहीन हुए—
छाती भीतर की सिकुड़ गई ।”¹

इन कविमा की दृष्टि में यदि आज किसी का महत्व है तो वह है मानव का । मानव स्वयं अपना भगवान है । वह स्वयं सब कुछ कर सकता है । उस ईश्वर पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है —

“मानव खुद अपना ईश्वर है
साहस उसका भाग्य विधाता”²

कवि रुढ़िया से ग्रस्त मानव को मानव एवं पत्थर की मूर्ति की भगवान स्वीकार नहीं करना चाहता है —

“कायर रुढ़िवाद का कँदी
क्या उसको इमान समझ लू ?
परिवर्तन पथ का वह पत्थर
क्या उसको भगवान समझ लू ?”³

इसलिए कवि इस पत्थर के भगवान को पूर्णतया समाप्त ही कर देना चाहता है जिससे मानव गुमराह एवं झालसी न बन सके —

“उस पत्थर के परमेश्वर का अभिमार मिटाने आया है ।”⁴

य कवि धर्म, समाज तथा उस तथाकथित ईश्वर द्वारा निमित्त नियमा और उप नियमा को छिन्न भिन्न कर देना चाहते हैं । इनके लिए मंदिर, मस्जिद, गीता और कुरान आदि का कोई महत्व नहीं है और न ही ये कवि स्वर्ग, नरक आत्मा परमात्मा आदि में विश्वास रखते । इन सभी बातों का ये घोर विरोध करते हैं और इनका उन्मूलन कर देना चाहते हैं । विद्रोह करने से तो यमदूत से भी नहीं डरते —

ठहरो, ठहरो—में चीर उठा
में नरक भला क्या जाऊगा ।”⁵

१	प्राधाय चन्द्रदेव—	पंडितजी गजब हो रहा है—	पृष्ठ ३
२	मालदान देवावत मनुज—	विप्लवगान—	’ ५६
३	” ” ”	”	” ५७
४	” ” ”	”	” ५८
५	प्राधाय चन्द्रदेव	नरक विद्रोह कविता में—	

इस प्रकार से य कवि एवं और तो समाज में व्याप्त रूढ़ियां, परंपराओं और धार्मिक पाखण्डों का विरोध करते हैं और उन्हें समाप्त कर देना चाहते हैं दूसरों और धार्मिक शापकों का भी समाप्त कर देना चाहते हैं। इन सब के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है। इसका साथ ही य किसी भी प्रकार के ममभीते या हृदय परिवर्तन में विश्वास नहीं रखते। ये फाड़ पर मरहम लगाकर उस घाव को दूर करना नहीं चाहते, अपितु उसे जड़ में नष्ट कर देना श्रेष्ठ समझते हैं। ये गीत भी गाते हैं ता प्यार के नहीं, अपितु प्रलय के गाते हैं —

“मैं प्रलय वल्लि का वाहक हूँ

मिटटी के पुतल मानव का तुम्हारे मिटाने आया हूँ।”^१

और इन काय में वह अथ सत्कर्मों का भी सहयोगी बनाना चाहता है —

‘नोहित मसि में कम डुबा कर

कवि तुम प्रलय छंद लिए डालो।’^२

किसी भी प्रकार की क्रांति करने से पूर्व उस क्रांति की तैयारी करना आवश्यक ही जाता है इसके लिए यह मानव की एकता के मूल में बाधना चाहता है जिसमें क्रांति सफल हो सके —

आम्ना पहले इन हाथों में, वज्र धमाले एक साथ हम।

और घरा पर अगद का सा, पाव जमाले एक साथ हम।’^३

इस प्रकार कवि पहले समाज में क्रांति के लिए हर प्रकार की तैयारी करता है और वह चाहता है कि इस प्रकार की क्रांति हो जिससे पूँजीपतियों के य गगन चुम्बी महल, धर्म के ठकेदार सामाजिक रूढ़ियां और धार्मिक पाखण्ड आदि सभी नष्ट हो जायें। इन सब की समाप्ति के लिए इस क्रांति के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग भी नहीं है जिसमें समाज इन सब पुराइयों से, शापकों और शापितों को तार्क भी दूर करने का यह एक ही उपाय है।

दीवानर में धार्मिक प्रपञ्च कुछ अधिक है। अतः इन कवियों ने इन धार्मिक पाखण्डों और आडम्बरों को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। साथ ही ये कवियों का ध्यान देश में व्याप्त शापकों की ओर भी है। अतः देश में व्याप्त

१ मालदान देवावत मनुज—

विष्णुवगान—

५५

२

,

५५

३ मेघराज मुकुट—

उमग—

६२

सापण को भी य कवि समाप्त करना चाहते हैं ।

सामयिक वस्तुश्रा का चित्रण —

समय परिवर्तनशील है । समय के साथ साथ समाज भी बदल जाता है । एक समय में जो बात किसी समाज के लिए आदर्श होती है वही बात कुछ समय बाद उसी समाज के लिए अभिशाप बन जाती है । इस दृष्टि से यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह धृष्टतया स्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार से कविता के विषय बदलते जा रहे हैं । वीर गाथा काल में कवियों की लखनी राजाघ्रा की वीरता और युद्ध वरण स दूर नहीं हटी और भक्ति काल में वही लखनी भगवान के गुणों के वरण में प्रयुक्त हुई । रीतिकाल में अपने प्राथम्यदाता की प्रशंसा और नख शिल वरण में कवियों ने अपनी सफलता समझी । इस समय की कविता एक वग की कविता थी । इसके प्रतिरिक्त प्राधुनिक काल की कविता जनता की कविता बनी । भारत दु युग की कविता में राष्ट्रीय भावनाओं का वरण है, तो द्विवेदी युग में समाज सुधार कविता का विषय बना । छायावाद में कवि करपना लोक में लो गया और प्रगतिवाद में वह तोड़-फोड़ में ही गगा रहा ।

इस समय का कवि सामसामयिक वस्तुश्रा तथा व्यापारों का वरण कर रहा है । आज छोटी स छोटी वस्तु भी कविता में विषय बनी हुई है । वीर नेर के कवियों ने अपने चारा चार की वस्तुओं का वरण अपनी कविताओं में किया है । यहाँ का कवि चाय का, रनव पाटों की भीड़ सडक पर चलती माटरगाड़ी होटल प्राणि का वरण कर रहा है । चीनी क वतना का प्रयोग आज काफी बढ रहा है तो कवि ने उसी का वरण कर दिया है ।

‘ चीनी मिट्टी के बतनो

मानता हूँ

तुम्हारा दुधिया रंग

चिनारे की सुनहरी बाडर

रेल बूटा की डिजाइन

घातक का

अपनी चार सींच सती है

गुबली जागरी भण्ड

कवि कटो हुई पतंग और उसके पीछे दौड़ने हुए बच्चों का ही वरण करने लगता है —

“कटो पतंग
पीछे दौड़ने बच्चे ।”¹

आज कवि यह मानता है कि समाज में कोई भी वस्तु निरर्थक नहीं है। इसी लिए कवि भी वस्तु के वरण करने में सकोच नहीं करता है —

‘ मैं एक सिगरेट हूँ
मुझे पीते हैं लखक, कवि या वियोगी,
× × ×
मुझे पीते हैं बाबू, लाला या अफसर
शौक फरमाने के लिए
रोब जमाने के लिए
दान दिखाने के लिए ।’²

आज उस समय में चाय का महत्व बहुत ही बढ़ता जा रहा है। मनुष्य का जीवन ही चाय में बन गया है। इसलिए कवि न चाय को भी अपनी कविता का विषय बना लिया है और उसी का वरण उमन अपनी कविताओं में किया है —

“चाय का ठंडी सी प्याली का
पकड़ जाता हूँ हाथ ।”³

संस्कृति और परम्पराएँ जैसे गम्भीर विषय पर भी यहाँ के कवि न प्रतिदिन के जीवन के आस पास बिखरे साधारण से साधारण विषयों द्वारा व्यंग्य किया है —

घिर गया है
परम्पराओं का बुलूँडा शरीर
कि जिस

१ शिवराम पुनिया की एक कविता से।

२ रामदेव आचार्य अक्षरा का विद्रोह

३ स० न० किशोर आचार्य —सवेदन इति

भरती करवा दिया गया है
 सस्त्रुति रक्षा का जुड़ाई
 के अस्पताल के
 काटज बाड म
 कि जहा
 मोहनजोददो डाक्टर -
 हठप्याई नसे ।”¹

सिगरेट जसी छोटी वस्तु का जीवन और मृत्यु को समझाने के लिए प्रयोग किया गया है -

“मरना और जन्मना
 केवल अज्ञानक याद घा जाने पर
 सिगरेट पी लेने जैसे ही है
 शाक्स्मिक ।”²

निष्कष रूप में यही कहा जा सकता है कि बीकानेर का आज का कवि प्रत्येक छोटी से छोटी वस्तु का वगुन अपनी कवितामा म कर रहा है ।

अति यथाथ एव बौद्धिकता का चित्रण -

आज का कवि कल्पना मात्र म विचरण करता है । यह यथाथ क बहुत समीप है । थोड़े आदर्शवाद का वगुन अधिक समय तक नहीं किया जा सकता इसलिए वह वास्तविकता से दूर नहीं रहना चाहता । बात भी ठीक है कि जो वस्तु जसी है उसको छिपाने से लाभ भी क्या ? बीकानेर म कुछ कवियों ने इसका सीधा वगुन किया है और कुछ ने व्यंग्यात्मक गैली में इसका वगुन किया है । इन सभी कवियों म यथाथ के वातावरण म मास ली है और इसी कारण जीवन के साथ इहाने सम्पर्क बनाया है । वह व्यावहारिक जगत की वास्तविकता की पृष्ठभूमि पर निर्मित हुआ है । आज देश म अज्ञान का बीमो है । इस वास्तविक सत्य से कोई डकार नहीं कर सकता । भ्रम का बहुत ही यथाथ चित्रण यहा के कवियों म किया है जिसम भारत का आर्थिक स्थिति का पूरा चित्र मिल जाता है ।³ मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति का कविता यथाथ

१— भवानी गकर व्यास की कविता म ।

२— वातायन -सितम्बर, १९६६

३— हरीश भादानी -मुलगत पिड

चित्रण है —

“यह मेरा ग्वाला है
 भहीने भर म दिय गये दूध का
 हिसाब मागता है
 × × ×
 यह मेरा महाजन है
 घादी म दिय गय ऋण का
 भुगतान चाहता है ।”^१

एक प्रकार से आज के मानव के सामने आर्थिक समस्या मुह बाये खड़ी है और वह इस मानव को निगलना चाहती है। आज का सम्भव भी जितना स्वाधुपूग हो गया है। मानव को प्रेम से पहल पेट म कुछ खाने की चाहिए —

‘नहीं अभी नहीं
 पहले किसी अच्छे होटल मे
 मुझे भर पेट भोजन खिलाओ ।”^२

इसी प्रकार से व्यायामक कविताओ म भी यथाथ का चित्रण हुआ है।

आज की कविता मे बौद्धिक व्यायाम की उछल कूद बहुत अधिक है। नया कवि पाठक की तरगत और उद्वेलित न कर उसकी बुद्धि को अपनी पहली बुभावल के चक्रव्यूह मे आवद्ध करके उसे परेगान करना चाहता है। आज का कवि अपनी कविता की मस्तिष्क से कुरद कुरेद कर बाहर निकालना है और इस प्रकार मस्तिष्क मे निकली हुई वस्तु हृदय की नहीं अपितु मस्तिष्क की ही वस्तु बन सकती है। एमी कविताओ को समझने के लिए मस्तिष्क को बहुत अधिक व्यायाम करना पडता है। इसी मे आज का कवि अपनी सफलता समझता है पर बीकानेर के सभी कवि इस प्रकार के नहीं है। यहा के अधिकतर कविता की कविताओ म बौद्धिकता का समावश नहीं है। कुछ कवि अवश्य है जिनकी कविताओ म बौद्धिकता है —

मोत अडं देती रहती है
 डर क विभीषिका के ^३

१— राम देव आचाय

अक्षरो का विद्रोह

पृ० ५८, ५९

२— यागद्व किमनय

यथाथवाद की कविता स

३— स० नद नन्दार आचाय

सवेदन इति

६६

इसी प्रकार से यह एव और कविता है —

‘खिंची हुई फोसिंग
स्टम्पस के दोनों तरफ जाल
चितन की ओवर वॉलिंग
पका हुआ शती का दाशनिक्”¹

इस प्रकार की बोद्धिकता को देख कर आज के कवियों की ग्रहम् भावना स्पष्ट रूप से सामने आ जाती है। यह ठीक है कि कविता को समझने के लिए पाठक का कुछ प्रयत्न करना पड़ता है परन्तु इसका यह तो अर्थ नहीं कि पाठक चाह जितना भी प्रयत्न करे तो भी इन कविताओं का अर्थ न समझ सके, और जब पाठक इन कविताओं का अर्थ नहीं समझता है तो कवि पाठक की बुद्धि की कमजोरी बताकर अपने महत्त्व को स्थापित करता है। वास्तव में देखा जाय तो वह कविता ही निरर्थक है जिसे कोई पाठक समझ न सके। बोद्धिकता की यह बात धीकानेर के कविता में ही नहीं अपितु हिंदी के अनेक कवियों के साथ भी है।

वैयक्तिकता एव ग्रह की भावना —

आज के कवि की आत्मा में अहनिष्ठ व्यक्तिवाद इस रूप से बढमूल है कि वह सामाजिक जीवन में किसी प्रकार का सामंजस्य और गठबंधन नहीं कर सकता। कवि अपने समाज और आस पास को छाड़कर अधिकतर अपनी ही बात करता है। इसका अर्थ यह नहीं कि यह वैयक्तिकता की प्रबलता और किसी काश्य धारा में नहीं हुई परन्तु उसका रूप यह नहीं था, क्योंकि उस व्यक्तिगतता में लोकव्यापक भावना भी थी। परन्तु आज के कवि तो अपने आप को समाज से भी दूर समझता है और अपनी ही बात करता है समाज के प्रति वह अपने उत्तरदायित्व का स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस बात से धीकानेर का कवि दूर नहीं है। कवि अपनी कविता में व्यक्तिगत पीड़ा का वर्णन कर रहा है —

‘अभी अभी
अध्ययन करके उठा हूँ
थक गया हूँ

१ — राजान द भटनागर की दाशनिक् कविता से।

गेठ गइ रीढ़ की हड्डी
पसनिया दुग रही है ।^१

पर तु इससे भी अधिक बात यह है कि कवि इस युग में अपने जन्म को ही एक अच्छी घटना और इस सदी का सबसे उज्ज्वल दिन मानता है । यह निपट व्यक्तिवादी दृष्टिकोण है ।

‘हमारे जन्म मञ्जच्छा
और क्या घटित होता
इस सदी में ।
+ + ×
इस सदी का
एक केवल एक उजला दिन
कि जन्म हम ।’^२

निष्कण रूप से यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की यह भावना बीकानेर के आज के कवि में मिलती है । और वह अपने आप को ही सब कुछ समझता और उसकी दृष्टि में दूसरे का जीवन कुछ भी नहीं है ।

अनास्था और आस्था का स्वर —

बीकानेर के आज के कवि का कविताभाषा पर यदि एक दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि कुछ कविताभाषा में तो आस्था का स्वर है और कुछ में अनास्था का । इन कविता का इस ससार इस जीवन जादि से कोई सम्बन्ध नहीं है । वे सब इस जीवन से ऊब चुके हैं । उन्हें घुटन होती है इस ससार और जीवन से । अनास्था का यह स्वर इस कविता में द्रष्टव्य है —

‘जि दगी केवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवटें सब मर गयी मेरे लिए
सड़ गय सारे गुलाब मरे लिए ।’^३

कवि को इस ससार में कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता —

१— योगेन्द्र किसनय

२— हरीश भादानी

३— रामरत्न आचार्य

एक कविता से

मुनगत पिण्ड १० १०८ १०६

अक्षरो का विद्रोह , २४

“बचा ही क्या है हम बीनो दुनिया म ऐ दोस्त
जिणे प्यार किया जा मने ।”¹

प्राज इछ सत्तार म उतबा कही भी तो मा नही लगता । न वह पठ सनता है
घोर न वट रहिया मुनना चाहता है -

। ' कि कही जो जो नही उगता
पढ़न तो ध्यान कही और जाता है
× × ×
मन न रेहिया मुनता है
मन न सिनमा दसना चाहता है
पूमी तो पूमना नही चाहता' ²

बुछ एमी भी कविताए है जिनम घनास्थावादी स्वर ऊपरी है, उसके मून म कवि
का घास्थावादी स्वर भी है ।

' लेकिन जो भी मुझे ठगगा
उम अपने ही शक का
अस्तित्व में समाप्त कर दूंगा' ³

परन्तु हमका अर्थ यह नहीं है कि आलाच्य काल की कविता म बदल
घनास्था का ही स्वर ही, उमम घास्थावादी स्वर भी है । यहाँ का कवि
नगर मन्दता मे घाघ्रा-न होने हुए भी कभी-कभी गलिया म भटक जाता है,
परन्तु उसकी आँखें चीराहे पर घास्था क स्वर का देखती ही रहती है । यह
उमकी घास्था का प्रमाण है -

'कही बुछ एसा है
जा मुझे जावित रखने के लिये
कृत सफर्य है
इसीलिये मैं मरा नही
अ घेर का हुआ नही' ⁴

१— रामदेव आचार्य -अक्षरा का विद्राह

२— राजानन्द भटनागर एक कविता से

३— मागद्व किसलय 'अभिघप्त' कविता स

४— सरल की एक कविता स

आस्थावादी स्वर म कवि पर पड़ी हुई प्रत्येक चोट स्वयं टूट जाती है उस कवि का वह कुछ नहीं बिगाड सकती -

“फिर जब अपने चारों ओर देखता हूँ
तो पाता हूँ
कि मुझ पर पड़ी प्रत्येक चोट
स्वयं टूट गई है
बिलर गर्ह है’¹

यहाँ के कुछ कवियों म इनकी ग्राम्या है कि ‘कभी कुछ’ मुख (आस्था) की देखने के लिए वर्षों म राहु द्वारा प्रसिद्ध मूरज की कालिमा की मिटाने के लिए भी वह अपने खून तक की फेंकत है -

“फेंकत हूँ खून
कि कभी कुछ मुख तो दीख
वर्षों स काले पडे मूरज पर
कुछ लाल छीटे तो पडे’²

और भी कविताग्रा म आस्थावादी स्वर मिल जाता है। यह आस्थावादी स्वर ही ऐसा है जा दुनिया मे रहने योग्य और जिन्दगी को जीने योग्य बना देता है। इस प्रकार से बीकानेर के काव्य मे अनास्था और आस्थावादी दोनों स्वर ही मिलते हैं परन्तु आस्थावादी स्वर ही यहाँ पर अधिक मुखरित हुआ है।

इस प्रकार से बीकानेर जिने म इस आनोच्य काल मे काव्य की विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का विकास हुआ है। एक ओर जहाँ प्रकृति चित्रण और नारी को लेकर कविताएँ लिखी गईं ता दूसरी ओर धार्मिक पंखण्ड सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं के खण्डन का भी प्रयास किया है। इसी प्रकार जहाँ राष्ट्रीय कविताएँ लिखी गईं वहाँ प्रत्येक छोटी म छोटी वस्तु को भी कविता का विषय बनाया गया है और साथ ही वहाँ हसी के फुवारे भी फेंकें हैं। आज बीकानेर के काव्य म आधुनिक हिंदी काव्य की सभी प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। इस प्रकार से बहुत बाद म प्रारम्भ हान वाला काव्य आज हिंदी काव्यो के साथ चल रहा है।

बीकानेर काव्य की चर्चिचेतना

भाव पक्ष काव्य का अन्तरंग पक्ष है और कला पक्ष उसका बहिरंग पक्ष है। काव्य साधना में दोनों का समान महत्त्व है। वादो और सम्प्रदायो के बदकर म पहकर साधारणों ने कभी भाव पक्ष पर अधिक बल डिया है तो कभी कला पक्ष पर। परन्तु काव्य में इन दोनों के होने से वह अधिक प्रभावशाली बन सकता है। भाव पक्ष यदि सबल भी हुआ और कला पक्ष उसका दुबल हुआ तो निश्चित रूप से वह काव्य प्रभावशाली नहीं बन सकता। इसी प्रकार यदि केवल बहिरंग पक्ष की ओर अधिक ध्यान दिया गया तथा अन्तरंग पक्ष की परवाह न की, तो वह काव्य भी श्रेष्ठ नहीं कहला सकता। काव्य की प्रभावोत्पादकता के लिए इन दोनों पक्षों की ओर ध्यान कवि के लिए आवश्यक हो जाता है।

बीकानेर जिले के कवियों ने जहां काव्य के अन्तरंग पक्ष की ओर ध्यान दिया वहां उसके साथ उसके बाह्य पक्ष की भी भूले नहीं। भाव पक्ष की मयीगता के साथ कला पक्ष में भी नवीनता का श्रीगणेश हुआ। अपने भावा की व्यक्त करने के लिए कवियों ने भाषा की सरलता की ओर भी ध्यान दिया है। द्रष्ट दष्टि से यहां के कवियों ने तद्भव और विदेशी शब्दों का प्रयोग प्रारम्भ किया है। यद्यपि यह बात नई पीढ़ी के कवियों में कुछ अधिक पायी जाती है। विदेशी शब्दों में भी उन्हीं को ग्रहण किया जो जन साधारण में अधिक प्रचलित है। इसी प्रकार से नये पीढ़ी के कवियों ने छंद के बंधन की भी अस्थीवार किया है। किसी भी प्रकार से काव्य में ऊपरी चमत्कार को महत्त्व नहीं दिया है। जहां एक ओर से यहां का कवि छंद के बंधन से मुक्त हुआ वहां दूसरी ओर नये नये प्रतीक और चिह्नों का प्रयोग काव्य में हुआ है। उपमा भी पायी हैं। व नवीन एवं अपने आस पास के वातावरण में सही ग्रहण किये हैं। शैली की दष्टि से भी वणनात्मक शैली की अपेक्षा व्यंग्यारमक शैली का प्रयोग अधिक किया है। इस प्रकार से जहाँ एक ओर बीकानेर का काव्य भाग गया वही ओर से बढ़ा है वहां कला पक्ष में भी उसका साथ दिया है।

रस —

यद्यपि रस का विवेचन काव्य के भाव पक्ष के अंतर्गत किया जाता है । पर तु हम उसका विवेचन काव्य के बहिरंग पक्ष के अंतर्गत ही कर रहे हैं ।

रस को काव्य की आत्मा माना जाता है । “वाक्य रसात्मक काव्यम्”^१ सब प्रथम साहित्य में रस के महत्त्व का प्रतिपादन करने वाले भरत मुनि हैं । साहित्य दण्ड में रस की परिभाषा इस प्रकार की है —

‘विभावानुभावेन व्यक्त सचारिण तथा ।

रसतामति रत्यादि स्थायीभाव सचतसाम्’

अर्थात् सहृदय-हृदय में (वासना रूप से विराजमान) रत्यादि रूप स्थायी भाव जब (कवि वर्णित) विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी के द्वारा अभिव्यक्त हो उठते तब आस्वाद गंधवा गान व रूप हो जाते हैं और उस रस कहा जाता है ।^२ रस ही माने गए हैं ।

शृ गार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक

वीभक्तोद्भूत हृद्यण्टी रसा शा तस्तथा मत^३

शृ गार हास्य करुण रौद्र, वीर भयानक वीभक्त, उद्भूत और शा त रस माने गए हैं ।

रस की इस विवेचना के बाद हम यह देखना है कि बीकानेर के काव्य में कौन कौन से रस आये हैं । शृ गार रस को रसरज माना जाता है ।

शृ गार रस —

शृ गार रस का मूल आधार रति या प्रेम होता है । इसी के आधार पर इसकी सबव्यापकता सिद्ध होती है कि प्रेम एक ऐसी बल है कि जिसका संचरण पशु-पक्षिमा तक भी देखा जाता है । प्रेम के विभिन्न रूप होते हैं पर तु शृ गार के अंतर्गत जिस प्रेम की अवस्थिति होती है वह दाम्पत्य प्रेम कहलाता है । जहाँ दोनों प्रेमिया का मिलन होता है वहाँ संयोग शृ गार और जहाँ दोनों

१— साहित्य दण्ड	प्रथम परिच्छेद	प० २३
२— ” ” ”	”	” ८६
३— ” ” ”	”	” २२

एक दूसरे से दूर रहते हैं वहाँ वियोग शृंगार होता है ।

सयोग शृंगार में युगल प्रेमिया की विभिन्न क्रीडाएँ मनोविनाद, रति प्रसंग, समुक्त दिनचर्या आदि का वर्णन होता है । रति का प्रमुख कारण सौंदर्य हुआ करता है । यही कारण है कि कवि लोग अपने शृंगार रस के परिपाक में सौंदर्य का मनोमुख्यकारी वर्णन करते हैं । बीकानेर के काव्य में इस प्रकार का शरीर का स्थूल वर्णन कम हुआ मिलन वर्णन ही अधिक हुआ ।

"तारा की छाया के नीचे
मिला रहे कौन दो तरुण हृदय,
भावा की उठती आधी म
जीवन का प्रारम्भिक अभिनय"¹

इसी प्रकार प्रारम्भिक मिलन में प्रेमी व प्रेमिका जीवन और सत्कार तक भूल जाते हैं ।

'वह वय सखि का प्यार विमल
मस्ती का मादक भवर जान
जिसमें भूले हैं दो भावुक
जीवन का जग का हाल चाल'²

सयोग का अभाव वियोग है । छायायों के द्वार प्रकार का वियोग माना है — पूर्वानुराग, मान, प्रवास और करुण । पूर्वानुराग का वर्णन यहाँ नहीं के समान है । मान का अवश्य ही वर्णन हुआ है । यह विभाग क्षणिक रहता है —

"क्या पता, क्या कर रही तुम आज मुझमें मान
स्वप्न सी पुकार, क्या कर बन गई पापण'³

परन्तु यहाँ पर अधिक वर्णन 'प्रवास' का ही हुआ है । प्रवास काल में सयोग की मुख्याधी वस्तु कष्टमय बन जाती है —

भाग लगाने लगी चादनी, भीरम जी में शूल चुभाने
च द-करो की बाट दिया है तुमने तीये घर अनजान"⁴

१— मालदान देपावत मनुज—	विप्लवगान—	प० ५३
२— ' ' ' "	"	, ५३
३— माणक चन्द रामपुरिया	स्वरालोक	२१
४— शम्भूदयाल सक्मना	नीहारिका	" ८२

वियोग में संयोगकालीन घटनाएँ एक एक करके मानस पटल पर उभर आती हैं और इनके स्मरण आने से वियोग और अधिक बढ़ता रहता है —

प्रथम मिलन में क्या जादू था हुए तब जब चार सखी
तो क्षण भर में रही मुग्ध सां सखी न तन सभ्यार सखी
तन को, मन को और माग को भूली मैं उस बार सखी
कितना सत्य और मुन्दर-सा था वह नश्वर प्यार मखी' ^१

प्रवास काल में आसो में आसू बहते हैं और आह निरन्तर रहती हैं और चारों ओर पतझर हो दिखाई देता है —

'आसू बहत आह उठती
पतझर दिखाई देता है
योधन का न माद कहा
मधुमास बिदाई लेता है' ^२

अभिलाषा भी प्रवास की एक दशा है। इसमें अपने आप को प्रियतम पर योद्धावर की आशा ही प्रमुख रहती है —

मलय पवन बन कर आयें व
प्राणा की झमराई में,
तो पिव बन कर कूक उठूँगी
उनकी मुद्रित बघाई में । ^३

प्रवास में न रात की नीद आती है और न दिन की खैन मित्रता है और प्रतीक्षा में अलि पथरा जाती है।

रात रात भर रोती रही
दिन दिन भर आगती रही
पर वह न आया सो न आया
प्रतीक्षा की आये पथरा गई
आतुरता के डंठे सिधिल हा थम । ^४

१ — शम्भुदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृ० ५५
२ — आम कवलिया	शबनम	, ४
३ — शम्भुदयाल सक्सेना	नीहारिका	, १४
४ —	रत्न रेणु	, ३८

इस प्रकार से वियोग की अनेक दशाओं का वर्णन यहाँ के काव्य में मिल जाता है ।

हसी का जीवन में बहुत महत्त्व है । यह जीवन का एक विटामिन है । हास्य रस बोकानेर के काव्य में यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है —

"जब दरवाजा में घुसे आप तिरछे ही अंदर आते हैं ।
अपनी खटिया को खाती से स्पेशल ही बनवाते है ॥
सौम्य रहते हैं आप नाक से बाजा बजता जाता है ।
जब कभी बदन लेने करवट खटिया की बीमा बिक जाता"१

कवि खटमल का वर्णन करना हुआ हास्य बिखेर रहा है —

'पर मुरारजी खटमलजी तो सोने पर टेक्स लगाते है
वे स्वर्ण नियम बना करते है ये शयन नियंत्रण करते हैं
वे कामराज से डरते हैं ये काम रात को करते हैं
ये खटमल है या नट खटमल यं जिनके पीछे पड जात
तां विड छटाना मुश्किल बीमा के एजेंट नजर आत हैं"२

वीर रस की कविताएँ तो यहाँ बहुत लिखी गईं । प्रायः प्रत्येक कवि ने ऐसी कविताएँ लिखी है —

'वन के सिपाही सजग वीर प्रहरी
घरा न तुम्ह आज फिर मे पुकारा ।
उठो राज हाथा मे हथियार माधो
तुम्हारा सदा मातृ भू को सहारा ।'३

"विजय हमारी है" सप्रथम इसी प्रकार की कविताओं का है । इनके प्रतिस्वपन वीररस रस की कविताएँ भी यहाँ लिखी गई हैं —

"सर पिचक गया है ईश्वर का
उसका मस्तक उसका ललाट
सड गया आज
कर रहे वहाँ कीड़े किलबिल"४

१— भवानी शंकर व्यास	हास्यमेव जयते	प०	४४ ४५
२—	'	'	२
३— मेघराज मुकुल	अनुगुंज	,	२८
४— आचार्य चंद्रशेखर शर्मा	पंडितजी गजब हो रहा है	,"	३

× × ×

मानव-मानव को खाता है
पीकर लोहू चाट कर जीभ
फिर हस कर दात दिखाता है ।^१

इस रसा क प्रतिरिक्त वाक्य रस भी वीकानेर की कविताशा में दस जा सकता हैं और साथ ही म आज की कविता में बौद्धिक रस का समावेश हो गया है और इस रस की कविताशा की भी वाकानेर में कोई कमी नहीं है ।

वीकानेर के काव्य में अलंकार —

मनुष्य स्वभावतः सौ दर्यो भासत्र प्राणो है । वह प्रत्यक्ष वस्तु में मौ दय का लू डता चाहता है । इसी भावना में काव्य में अलंकार का आविर्भाव हुआ है । अलंकार शब्द का अर्थ आभूषण है । जिस प्रकार से आभूषण नायिका का मौ दय बढ़ाते हैं उसी प्रकार अलंकार का प्रयोग भी काव्य की शोभा बढ़ाने के लिए किया जाता है । जैसा कि दण्डी ने लिखा है —

‘ काव्य शोभा करान् धर्मानलंकारान् प्रचमन ।^२

अर्थात् काव्य में शोभा बढ़ाने के लिये धर्म को अलंकार कहते हैं । काव्य में अलंकारों का क्या महत्व है । इस बात को लेकर बहुत विवाद हुआ है और संस्कृत साहित्य में इसके दो बग बन गये । एक बग तो अलंकारों का काव्य का अनिवार्य धर्म मानना है और अलंकार विहीन काव्य को काव्य नहीं मानता । दूसरा बग उन विद्वानों का है जो काव्य में अलंकारों को अनिवार्य नहीं मानता । अलंकारों को काव्य का अनिवार्य धर्म के रूप में तो नहीं पर तु इनके महत्त्व प्रयोग से काव्य में रसवत्ता का उत्पन्न ही होता है । जिस प्रकार से स्वाभाविक मौ दर्श की आभूषणों की अपेक्षा नहीं होती और यदि उनका प्रयोग कर लिया जाय तो सौ दर्श और अधिक बढ़ जाता है । ठीक इसी प्रकार यदि सत्काव्य में अलंकारों का प्रयोग न किया जाय तो कोई अंतर नहीं पड़ता और प्रयोग हो जाय तो उसकी शोभा दुगुनी हो जाती है ।

अलंकार शब्द में, अर्थ में तथा शब्द और अर्थ दोनों में भी शोभा है । इस दृष्टि से अलंकारों का तीन वर्गों में विभाजित किया गया है —

१ मानवान् देवावत मनुज— विप्लवगान—

२ काव्यशास्त्र

१—शब्दालंकार

२—अर्थालंकार

३—उभयालंकार

अलंकार की इस विवेचना के बाद हम यह देखना है कि बीकानेर के काव्य में किस किस प्रकार के अलंकार मिलते हैं।

आज अलंकार प्रधान कविताओं का युग नहीं है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि अलंकारों का प्रयोग आज की कविताओं में होता ही नहीं है। अलंकारों का प्रयोग होता अवश्य है पर वह स्वाभाविक रूप में होता है। बीकानेर की कविता में भी यत्र-तत्र अलंकारों का प्रयोग देखा जा सकता है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग यहाँ की कविताओं में विशेष रूप से मिलता है।

अनुप्रास —

‘चरमर चरमर चू चरर मरर कुछ ऐसा करने लग जाती’^१

जहाँ तक अनुप्रास अलंकार का प्रश्न है वह प्रत्येक कवि की कविताओं में मिल जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में अनुप्रास के साथ अनुप्राणत्वकता () भी उत्पन्न हुई है। उत्प्रेक्षा का एक उदाहरण यह है —

‘दिन भर जो मूय चढा नभ पर

जग पर शासन करता, करता

उदण्ड चण्ड पृथ्वी का पगत

रौ द भीति भरता भरता

जगती के बीने बीने में

मानो गबर का नत्र तीमरा

उन्मीलित हा आया था। -

परन्तु बीकानेर के काव्य में सबसे अधिक उपमा अलंकार का प्रयोग है और आज की कविता में तो इसका प्रयोग और अधिक बढ़ता ही जा रहा है —

“चादर के नभ पर घिर आई ज्या भावन धा माला ललाम”^३

×

×

×

१	नवानी गबर व्यास	—मुझे हमी जानी है	पृष्ठ ३
२	चन्द्रमौलि	—बैज ती	पृष्ठ ८६
३	म चाय च द्रदय गमाँ	—पहितकी गज्ज हा रहा है	पृष्ठ ७

“सीली लकड़ी सा

सुलग रहा मन”¹

+ + X

कुंआरे बाप सा भीर अघेरा ²

इन अलंकारों के अतिरिक्त अथ अलंकारों का प्रयोग भी महा की कविता में हुआ है —

रूपक —

बकता जाता या नर पिशाच”³

X > X

‘कल्पना की इस विस्तृत सडक पर”⁴

स देह —

“या गम घटा हो पतघट का या तू बा एक लचीला हो”⁵

पुनरक्ति —

‘डरडा डरडा डरडा दुनिया रोजाना हमती है।”⁶

इनके अतिरिक्त भ्रांतिमान, उल्लंघन आदि अथ अलंकार भी बीकानेर की कविताओं में देखे जा सकते हैं। बीकानेर की कविताओं में जितने भी अलंकारों का प्रयोग हुआ है वह स्वाभाविक रूप से हुआ है। अलंकारों के लिए कोई भी कविता नहीं लिखी गई है।

उपमानों की नवीनता —

किसी भी वस्तु के बार बार प्रयोग करने पर मन उससे ऊब जाता है।

कवि लोग बहुत समय तक एक जैसे उपमानों का प्रयोग करते रहे हैं। इन उपमानों के प्रयोगाधिष्ठान से उनकी संप्रेषणीयता सुप्त होने लगी थी। इसको आज के कवि ने अनुभव किया और उन्होंने नए पुराने उपमानों को छोड़ दिया है।

१	स० न० किशोर आचार्य	—सवेदन इति	पृष्ठ ३६
२	हरीश भानानी	—सुलगते पिण्ड	१३
३	आचार्य चंद्रदेव शर्मा	—पण्डित जो शजब हो रहा है	पृष्ठ ५५
४—	स० नदकिशोर आचार्य	—सवेदन इति	प० ५७
५—	भवानी शंकर व्यास	—मुझे हसी आती है	” ८
६—	”	—हास्यमेव जयते	’ ७

बीकानेर की नई पीढ़ी के सभी कवियों ने अपनी कविताओं में ये उपमानों का प्रयोग किया है। पोस्टर, पेम्फलेट आदि को उपमान बनाया गया है —

मेरी वेदना कोई पेम्फलेट तो नहीं है

कि बाँट दू

+ + +

'मेरा दद कोई पोस्टर तो नहीं है

कि चिपका दू ।'¹

उपयुक्त विदेशी वस्तुओं को उपमानों के रूप में स्वीकृति मिली पर आस पास का वातावरण से भी कवि ने उपमान चुन हैं —

प्रात की मेहतरानी

किरगा की लम्बी झाड़ू लेकर'²

प्रकृति से भी उपमान चुन है पर वे भी परम्परागत न होकर नवीन दृष्टि की स्वीकृति में आय है।

इसमें यह स्पष्ट होता है कि इन कवियों ने अपनी कविताओं में बासी उपमानों को ग्रहण नहीं किया है। जिनने भी उपमान ग्रहण किये वे सब क सभ नवीन हैं। चन्द्रमा और कमंड आदि से कोई उपमान ग्रहण नहीं किया गया है। आज से पहले जो एक परम्परागत उपमान हिंदी साहित्य में चले आ रहे थे वे प्राय सब समाप्त हो चुके हैं। अब से पहले कविता में उपमानों के क्षेत्र में एक बड़ी बधाई परम्परा रही है। पर तु अब नये विषयों के आने के कारण कवियों ने उपमान भी नवीन ग्रहण किये हैं।

आज की कविता में वैयक्तिकता अधिक है और बासीपन का इतना ध्यान रखा गया है कि एक कवि द्वारा अपनाये गये उपमानों को भी बासी समझ कर उन्हें नहीं ग्रहण करता। इस घोर वैयक्तिकता से पाठक व श्रोता के सम्मुख नई उलझनें भी पैदा हुई हैं और उस आजकल भाव या विभव ग्रहण करने के लिए एक विशेष सतकता और तनाव की स्थिति में स गुजरना पड़ता है।

बीकानेर काव्य में प्रतीक —

प्रतीक को व्याख्या करते हुए कहा गया है, 'प्रतीक शब्द का प्रयोग उन

१— रामेश्वर आचार्य	रामेश्वर का विद्रोह	पृ० ७
२— स० नन्दकिशोर आचार्य	सवेदनदृष्टि	' ७

दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य का विषय प्रति विधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है । अमृत, अदृश्य, अप्रस्तुत विषय का प्रतीक — प्रतिविधान, मृत, दृश्य, अथवा प्रस्तुत विषय द्वारा करता है ।^१ हम अपने दैनिक जीवन में प्रतीकों का ही आश्रय देकर बातें, सुनते और समझते रहते हैं । प्रतीक विस्तार को संक्षेप में कहने का एक माध्यम है । काव्य और प्रतीक का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । काव्य में प्रारम्भ से ही प्रतीकों का प्रयोग होता आ रहा है । यह दूसरी बात है कि उनका स्वरूपों का समय के साथ साथ परिवर्तन होना रहा है । कौशाभ वाजपेयी ने प्रतीकों को तीन भागों में विभाजित किया है — सांस्कृतिक प्रतीक प्रकृति प्रतीक और सञ्जातिक प्रतीक ।^२

वीकानेर के काव्य में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है । पत्नीका के तीना रूप स्वतन्त्रता से लेकर आज तक के काव्य में देख जा सकता है —

‘पर घिरे हुए हा तुम अब भी
लक्ष्मण-नकार से
रूढ़ हो गया जीवन का
अविकल प्रवाह तो,’^३

इसी प्रकार आज की कविताओं में भी इसी प्रकार के सांस्कृतिक प्रतीकों को देखा जा सकता है —

‘न दसा है न बुद्ध
और त काइ मसीहा
कि अपनी ममक का ही
को नया स्वर गढ़ कर’^४

× × ×

क्रास पर अब भी चढाये जात हैं ममीहा *

इसी प्रकार रामायण, तुलसी, शंकर आदि अनेक सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग

१— द्विती माहि य कोश		प० २७१
२— कौशाभ वाजपेयी	आधुनिक द्विती कविता में शिल्प	, ७७ ७८
३— मालदान दयावत मनुज	विष्णुवर्णन	, २७
४— स० न रङ्गार आजाय	मवेदन-नि	, २२
५— हरीश भादानी	सुनयन विषय	११२

यहा की प्रारम्भ की ओर आज की कविता में देखे जा सकते हैं ।

वीकानेर काव्य में सबसे अधिक प्रवृत्त प्रतीकों का प्रयोग हुआ है । इनका प्रयोग आलोच्य काल के प्रारम्भ से ही रहा है —

“बुढ़ी बतसे तैर रही है
टरनि है वचे-सुचे कुछ दुबल दादुर”¹

आज की कविता में भी इनका प्रयोग देखा जा सकता है —

या ता विजलिया लहप गयो है
या किसी बाग का उदास कोना’²

× × ×

यामु लहरिया, गीध रजतपख, रागहम, शिलालेख, नमी लिखावट, तग लाली, भलबम, रात वाली लडकी, सस्त होटल, अडियल पैन, आदि प्रतीकों का प्रयोग वीकानेर की कविताओं में देखा जा सकता है ।

संज्ञात्मक प्रतीकों का प्रयोग प्रकृत प्रतीकों की अपेक्षाकृत कम हुआ है —

घोत ईधर के असीमित
तप निनारा पर लहराकर³

× × ×

भर जाने को

एक घोया घायाम’⁴

इसी प्रकार रोटी चाय, एग्स हाराकिरी स्लेज आदि प्रतीकों की योजना वीकानेर की कविता में हुई है । उपर्युक्त सभी प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग सभी प्रकार की कविताओं में हुआ है ।

विम्ब विधान —

विम्ब भोजना का सम्बन्ध कवि की भाव विधायिनी कल्पना से होता है । विम्ब और काव्य का गहरा सम्बन्ध है । रामचन्द्र गुप्ता ने भी विम्ब की

१— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	प०- २७
२— स० न दक्शोर आचाय	सवेदनइति	४८
३— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	" ३०
४— स० न दक्शोर आचाय	सवेदनइति	, २१

अनिवायता को स्वीकार किया है । “वाक्य मे अथ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित है ।”¹ डा० कुमार विमल ने बिम्ब पर विचार करते हुए लिखा है, ‘बिम्ब विधान कला का क्रिया पक्ष है जो कल्पना से उत्पन्न होता है । कला जगत में कल्पना के विकास की एक सारणी है । कल्पना से बिंब का अविर्भाव होता है, तब बिम्बो में सृष्टि होती है और जब बिम्ब प्रतिमित या व्युत्पन्न अथवा प्रयोग के पौन पुन्य से किसी निश्चित अर्थ में निर्धारित हो जाते हैं तब उनमें प्रतीका का निर्माण होता है । अतः कला विवेचन की तात्त्विक दृष्टि से बिम्ब कल्पना और प्रतीक का मध्यस्थ है ।”²

बिम्बा का वर्गीकरण भी अनेक विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से किया है । वस्तु चित्रण यजना तथा अलकृति के आधार पर जो कलाशा वाजपेयी ने बिम्बा को तीन वर्गों में रखा है³ -

- (१) वस्तु प्रधान बिम्ब
- (२) भाव प्रधान बिम्ब
- (३) अलकार प्रधान बिम्ब

वस्तु प्रधान बिम्बों में यथाथ की दृष्टि रेखाओं द्वारा कलात्मक मूर्तिकरण होता है । भाव प्रधान बिम्बों में अभिव्यक्ति पक्ष दुबल होता है किंतु अनुभूति की तीव्रता के कारण ये चित्र संवेद्य अधिक होते हैं । अलकार प्रधान बिम्बों में अलकृति और सज्जात्मकता की प्रधानता होती है । वैसे तो प्रत्येक बिम्ब ही कुछ अंशों में अलकार पूर्ण होता है परंतु इनमें सज्जात्मकता की प्रधानता होती है अनुभूति की नहीं ।

रीकानेर की कविताशा में भी बिम्बा का प्रयोग हुआ है । हिंदी में बिम्बों का आग्रह जितना आज के कवि में दिखाई देता है उतना पूर्ववर्ती कवि में नहीं रहा था । यही दृष्टि रीकानेर के काव्य में प्रारम्भ से लेकर आज तक की कविता में देखी जा सकती है ।

वस्तु प्रधान बिम्ब का यह उदाहरण दृष्टव्य है -

१— रामचन्द्र गुक्ल	चिन्तामणि (पहला भाग)	पृ० १३
२— डा० कुमार विमल	सौ दयशास्त्र के तत्व	२०१
३— बंदाग वाजपेयी	आधुनिक हिंदी कविता शिल्प	, ८०

मंदिर में एक सभा बैठी
पण्डितजी कथा सुनाते थे,
श्रोता कुछ ऊधे जाते थे,
कुछ बैठे पान चवाते थे ।”^१

भाज की कविताओं में वस्तु प्रधानता की योजना है परंतु उसका प्रयोग अधिक नहीं हुआ है —

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैं
पस था एक पेड़
पेड़ पर था घी सना
घी सले में हाग अनक शिशु’^२

वस्तु बिम्बा के आंतरिक भाव बिम्ब भी यहाँ की कविता में देखे जा सकते हैं। ये बिम्ब भी प्रारम्भ से लेकर आज तक की कविताओं में हैं —

“नगी पड़ी घरा घी पहले भूल स्वयं गब नगी है ।
मा की छाती से चिपटे शिशु की जीने की तगी है ।
प्यासा माँ बनाव रही है खून चूकता जाता है”^३

मालोच्य कविता में गरीबी और भूल का यह बिम्ब सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है —

‘मास फूनी हुई
पट चिपका हुआ
हाथ ताने हुए
माल में सुखिया’^४

वस्तु बिम्ब और भाव बिम्बों के साथ अनकृत बिम्बा योजना भी बीकानेर की कविता में है —

१— आचार्य चन्द्रेव	पंडित जी गजर हो रहा है	प०	१
२— रामरव आचार्य	अक्षरा का विद्रोह	”	४६
३— मेपरज मुकुल	उमग	”	२०
४— हरीश भांगनी	मुनगत पिण्ड	”	६१

"पनघटो पर पायली झुकार
 केवल एक बूद की प्यास
 कोई चातकी मनुहार
 गहराई घटाआ से
 रिभक्तिम बरसता सावन
 फिर कौन से आकाश आता है
 सास'^१

× × ×

"जीवन की इस विस्तृत सङ्ग
 अभावा की चुस्त पागावा म निपटी
 भुण्डाकार हो विचरती है
 कल्पना की य जवान किशोरिया'^२

इस प्रकार स वीकानेर की कविताआ म बिम्ब योजना का भी पूरा निर्वाह हुमा है और सभी तरफ के बिम्बा का समावेश किया गया है ।

शैली —

कविता म कल्पना भाव और भाषा के साथ-साथ शैली का भी महत्व कम नहीं है । काव्य म शब्द या वाक्य का बही महत्व है जो शरीर मे अस्थिया और शिगमो का है । शैली वाक्या का ही समबिन रूप है वह एक प्रकार भाषा का वह गुण है जो भावना और विचारो को साकार करता है । जहा कही भाषा म विचार प्रभुत्व होना है वहा कलाकार अपने का मध्य म अभिव्यक्त करता है और जहा भाषा म भावपूर्ण अनुभूति का प्राण य होता है वहा अविक्तर अभिव्यक्ति काय रूप म होती है ।^३ रस को काय की आत्मा माना जाता है पर तु शरीर क अभाव म आत्मा का अस्तित्व सम्भव नहीं । जिम प्रकार से आत्मा क लिए शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार कविता के लिए शैली की आवश्यकता है । वास्तव म शैली के अभाव म साहित्य के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती । शैली नेवल काव्य के बाह्य रूप को अलकृत नहीं करती उसके भावगत रूप को भी विकसित करने का काय करती है । भाव सौन्दर्य की

१— हरीश भागनी	सुन्दरत पिण्ड	पृ० ६३
२— म० न दक्षिणोर आचाय	सवेदनइति	, ५७
३— कलाग वापेयी	आधुनिक कविता मे शिल्प	७७

मायकता मुँट रौली म है । हमारे हृदय मे नाना प्रकार क भावा का उदय होत है परंतु उनका हम तब तक अभिव्यक्त नहीं कर सकत जब तक उसके लिए कोई उचित भाषा न हो ।^१ इयामसु दर दास के शब्दों मे कहा जा सकता है^२ किमी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यान्त का प्रयोग वाक्या की बनावट और उनकी ध्वनि घाटि का नाम ही गौली है ।^३

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि काव्य मे भावा क माय ही साथ रौली का महत्व कम नहीं है । अच्छी गौली के अभाव मे काव्य प्रभावशाली नहीं बन सकता । काव्य को प्रभावशाली बनाने मे रौली का बहुत हाथ रहता है । काव्य प्रवृत्तिया क साथ ही माय रौली का भी रूप परिवर्तन हो रहा है ।

बीकानेर जिले की कविता मे रौली के कई रूप देखे जा सकन है । प्रारम्भ में यहा पर बुद्ध प्रवृत्ति सम्बन्धी कविताएँ लिखी गईं और वह भी प्रवृत्ति को कई स्थानों पर मानवीकरण के रूप मे चित्रण किया है ऐसी कविताओं मे प्रतीकात्मक और चित्रात्मक रौली का प्रयोग हुआ है । प्रगतिवादी रचनाओं मे उद्बाधनात्मक रौली का प्रयोग हुआ^४ । इसमे किसी को सम्बाधन किया जाता है ।

कवि युग कवि को सम्बोधन करते हुए लिखता है -

‘तुम उन पीप भर छात्रों मे
रस का अनुसंधान कर रहे
मौत यहाँ पर नाच रही
तुम पोरया का आह्वान कर रहे ।’^३

उद्बोधन रौली के साथ यहा पर शगात्मक रौली का प्रयोग भी हुआ है -

‘य काल घन ज्वर जब बरगे
सग लिए पावन पुरवाई
नभ की गोदी मे स्पर्शित हो
सध्या सोती ल अगडाइ’^४

१— सरोजिनी मित्रा	साहित्य शास्त्र के सिद्धांत	प० ५६
२— इयामसु दर दास	साहित्य लोचन	, ३०२
३— मालदान देवावत ‘मनुज	विष्णवगान	५५
४— मेघराज ‘भुक्तुन’	उमंग	, ४१

बीकानेर में आज का कवि प्रतीको, सवैतो आदि के माध्यम से अपने भावों का अभिव्यक्त कर रहा है और साथ ही मध्य का स्वर भी काफी मशक्त रूप में निखरा है। यह व्यंग्य कहीं तो समाज पर है और कहीं समाज की व्यवस्था पर है —

‘ जैसे कोई तेज स्पीड से भागती हुई मोटर
जैसे ऐसी मोटर के पहियों में
फसकर कुचल गया कबूतर
जैसे कबूतर के लोथड़े पर
अपनी समझदार गरदन ठाय
बुभुक्षित कीए
धँसी ही यह आधुनिकता
बँसा ही यह परिवेश
बस ही ये सभ्य लोग ।’¹

समाज के समाज और उसमें कहे जाने वाले सभ्य लोगों पर इसमें अधिक करारा व्यंग्य और क्या हो सकता है। आधुनिकता पर एक करारा व्यंग्य और देखने योग्य है —

“बौद्ध केरट माने का
एक गटना
हमारी आधुनिकता”²

यह व्यंग्य बीकानेर के आलोच्य काल के पूर्वार्द्ध की कविताओं में भी है। आचार्य चन्द्रदेव की कविताएँ इसका प्रमुख उदाहरण हैं। इन उपात्मक कविताओं की भाषा भी बहुत सीखी बन जाती है जिससे व्यंग्य का स्वर बहुत पैनी और गहरी भार करता है। इन्हीं के साथ ही साथ उपमानों में भी नवीनता का रूप धारण किया है। उपमानों का प्रयोग काव्य में प्रारम्भ से ही हो रहा है परन्तु आज उनके रूपों में परिवर्तन हो गया है। नवीन उपमानों के साथ यहाँ की कविता में बहुत विदेशी शब्दों का प्रयोग हो रहा है।

१ रामदेव आचार्य

२ नन्दकिशोर आचार्य

अक्षरा का विद्रोह

—सवेदन इति

पृष्ठ १६

’ ३४

बीकानेर जिले के काव्य की भाषा

स्वतंत्रता के पश्चात् से आज तक बीकानेर के काव्य में कई परिवर्तन हुए। इन परिवर्तन के साथ ही माथ भाषा में भी परिवर्तन होता रहा है। काव्य और भाषा का बहुत गहरा सम्बन्ध है। अनुभूति जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है तो वह अभिव्यक्ति चाहती है और उस अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। कवि अनुभूति के साथ साथ भाषा का भी धनी होता है, जिसमें वह अपनी अनुभूति का सही और समय अभिव्यक्ति देता है। यदि अनुभूति अच्छी है और भाषा ने उसका पूर्ण साथ नहीं दिया है तो यह स्पष्ट है कि कवि की वह अनुभूति उस रूप में पाठक तक नहीं पहुँच पायेगी और इसलिए वह अभीष्ट के प्रभाव को उत्पन्न नहीं कर पायेगी। इस दृष्टि में यह कहा जा सकता है कि काव्य के लिए समय भाषा का ज्ञान बहुत आवश्यक है।

भाषा में सम्बन्धित इन सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए हम बीकानेर के काव्य की भाषा पर विचार करना है। किन्ता भी कवि द्वारा अपनी रचना में केवल एक ही भाषा के शब्दों का प्रयोग करना बहुत कठिन है। अतः उनकी रचनाओं में दूसरी भाषाओं के शब्दों का आना भी स्वाभाविक बात है।

(क) बीकानेर-कविता । शब्द समूह

खड़ी बोली के शब्द तद्भव और तत्सम

बीकानेर की कविता में तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रारम्भिक कविताओं में अधिक हुआ है। या आज भी हास्य रस की कविताओं में हो रहा है। हास्य की कविताओं में तो कहीं-कहीं पक्ति ही संस्कृत की है —

‘क्योंकि चरमा उनमें कहता कि ‘वन्द्य मास्यगम पाथ
श्वम् सर्वे धर्माणि परित्यज्य मामेव शरणं वा १

मलयज, गतय, स्वत्वो, मुषुप्ति, शत्रुमैय आदि अनेक तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दों का प्रयोग आठोच्यनाल व पूर्वाद्ध में कुछ अधिक हुआ है। आज तद्भव शब्दों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है —

“शुभ्र में ऐसा क्या है
कि मैं दूटता नहीं ॥
मैं बिखरता नहीं हूँ

गाँठ मड़ता हूँ धनेर

हर चोट खाकर निलमिनाता हूँ ।^१

इसी प्रकार गाँठ मड़ना की कविता में तत्सम गद्या का प्रयोग कम हो रहा है और तद्भव और विदेशी गद्या का प्रयोग बढ़ता जा रहा है ।

राजस्थानी शब्दावली

कोई भी साहित्य अपने मभाव में अनगूनी रह सकता है। अपने समाज का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। बीकानेर जिला एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ की राजस्थानी मातृभाषा है। यद्यपि बीकानेर में आज हिन्दी को साहित्य के क्षेत्रमें अपनाया गया है फिर भी राजस्थानी भाषा में तो यहाँ बहुत पढ़ल सही रचना हो रही थी, और आज भी वह बोल चाल में प्रयोग में आ रही है। साहित्यिक और बोल चाल की भाषा में सदैव ही अंतर रहता है परन्तु इन दोनों भाषाओं में बीच में एक विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती। इस दृष्टि में बोल चाल की भाषा के शब्द भी काव्य में आना स्वाभाविक है। इसलिए बीकानेर जिले के कवियों की कविताओं में राजस्थानी भाषा के शब्द यत्र-तत्र आ गये हैं। परन्तु प्रयोग में कविता में किसी भी प्रकार की क्लिष्टता नहीं आयी है। अपितु इनके प्रयोग से कविता का कुछ सौंदर्य ही बढ़ा है। राजस्थानी शब्दों का प्रयोग का एक कारण और भी है यहाँ के कुछ कवियों ने पहले राजस्थानी में कविताएँ लिखनी आरम्भ की और बाद में हिन्दी में। अतः राजस्थानी का प्रभाव आना स्वाभाविक है। राजस्थानी शब्दों का जहाँ प्रयोग हुआ है वह कविता अपने स्थान विनोद का बोध कराती है। यदि उस शब्द को वहाँ से हटा कर दूसरा सही शब्द का या अन्य भाषा का शब्द प्रयोग करें तो उससे कवि अभिव्यक्ति सफल नहीं हो सकती—

‘घर का ही था राज काज सब खमा धग्गी कहन थे ।^२

× × ×

‘तरे रेतीले घोरो पर

उल्लास बिछाती मुबह-शाम’^३

इस प्रकार से यहाँ पर तुला मोटे तगडे, लिपता, येपड़ी, सुरगा मरुधर आदि शब्दों की यहाँ की कविताओं में देख जा सकता है। एक बात और स्पष्ट है वह

- | | | |
|-------------------------|-------------------------|--------|
| १— रामदेव आचार्य | असरो का विद्रोह | पृ० २४ |
| २— चन्द्रदेव शर्मा | महाराज युनियन कविता से। | |
| ३— मालदान देपावत ‘मनुज’ | विप्लवगान | , ३४ |

यह कि राजस्थानी शब्दों का प्रयोग जितना प्रारम्भ की कविता ने किया है उतना प्रयोग आज के कवि नहीं कर रहे हैं।

विदेशी शब्दावली

भारतवर्ष पर अंग्रेजों ने पहले मुगलों ने शासन किया और हिन्दुओं के साथ उनका सम्बन्ध काफी समय तक रहा है। इतने समय में एक साथ रहने के कारण ये दोनों संस्कृति परस्पर प्रभावित हुई हैं और भाषा का भी आदान प्रदान हुआ है। काव्य की भाषा भी उससे प्रभावित नहीं रह सकी है। यहाँ तक कि संस्कृत के साथ कविता लिखने वाले कविता तक की भाषा में (प्रिय प्रवास) उर्दू के शब्द आ गये हैं। कुछ कविता की कविताओं में इनका प्रयोग अधिक हुआ है

कही गम के फसाने है
कही पर जाम चरत है

× × ×

गुलशन में खिजाभा की, कही किसती है मोजा में^१

यह प्रारम्भिक कविताओं में इनका उपयोग कुछ कम हुआ है। हास्य कविताओं में भी इनका प्रयोग यत्र तत्र देखा जा सकता है —

‘तो खुश हमीनो की दुनिया में इनका भी नम्बर लावे।’^२

इस प्रकार ये यहाँ की कविताओं में जहाँ जहाँ हकीम आदि शब्दों का यत्र तत्र देखा जा सकता है।

भारतवर्ष पर अंग्रेजों ने करीब सौ वर्ष तक राज्य किया। अतः उनकी भाषा सीखना भी यहाँ के लोगों के लिए अधिक दृष्टि में आवश्यक हो गया था। इतने अधिक समय के कारण अंग्रेजी शब्द हमारी भाषा में बहुत अधिक घुल मिल गये हैं और बहुत अधिक ही प्रचलित हैं। प्रयोगवाद के साथ ही ही कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन हो गया है। बीकानेर की कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। यह प्रयोग प्रारम्भ की अपेक्षा बादकी कविता में अधिक हो रहा है —

१— ओम केवलिया

शबनम

पृ० ६१

२— भवानी शंकर व्यास

—मुझे हसी आती है

पृष्ठ १२

वह ड्यूक विलिंगटन बन चंठी
मुख की मशिनगत का फायर ”¹

× × ×

वह उठे सभी मुझको लय कर 'आ गया गधा जो एक नया
मैं फस्ट डयर का फूल बना यह सब भी मैं बहुत सदा ।'²

आज की कविता में इनका प्रयोग कुछ और अधिक हा रहा है —

'सबन्न मिनेमा 'नो स्मोकिंग इन आडिटोरियम' बहे भल
इफ आब्जेक्टेड वाई नो पैसैंजस नो स्मार्किंग इन ट्रेन चले ।'³

पर तु ऐसा प्रयोग प्रत्येक कविता में नहीं हुआ है और न ही कवियों ने ऐसा प्रयोग किया है ।

इस प्रकार स बीकानेर के राज्य में राजस्थानी संस्कृत उद्ग और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग यत्र तत्र रखने का मिनता है । पर तु इन गणना स किंसा भी प्रकार स कविता में अनपेक्षता नहीं आयी है, अपितु उसका सी व्य वढा हा है ।

(ख) मुहावरों का प्रयोग

डा० ओमप्रकाश गुप्त के अनुसार 'प्रायः गारोरिक चेष्टायां अस्पष्ट ध्वनिया कहानो जीर कहावतो अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगा क अनुकरण या आधार पर निमित्त जीर अभिधेयाथ से भि न कोई विशेष अथ दने वाले किमी भाषा के गठे हुए रूढ शक्य, याक्यान् अथवा शब्द इत्यादि को मुहा वरा कहते हैं ।'⁴ मुहावरा क प्रयोग में काव्य में एक अनूठा मौदय आ जाता है । भाषो की अभिव्यक्ति का ममस्पर्शी एव हृत्प्राप्ती बनाने में मुहावरे बहुत सहायक सिद्ध होते हैं । डा० मनोहर लाल गौड के अनुसार मुनाउदेदार वाक्यां भ वाक्य वाक्यां की अपेक्षा समत्कार और अथसातन की विसृत भूमि ता अधिक होती है पर लक्षणाया की सी दुरुहता इनमें नहीं होती । इसलिए इसका

१— भवानो शकर व्यास

मुझे हसी आती है

प० ७

२— आचार्य चंद्रदेव

पंडित जी गजब हो रहा है

प० १४

३— योगेन्द्र किसलय की कविता स ।

४— डा० ओमप्रकाश गुप्त

मुहावरा मांगान

४

सब साधारण में प्रयोग किया जा सकता है।¹

बीकानेर की कविता में भी यत्र तत्र मुहावरों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों का प्रयोग अन्य कविताओं की अपेक्षा हास्यरस की कविताओं में अधिक हुआ है, यद्यप्रकार की कविताओं में इनका प्रयोग हुआ अल्प है पर इतना नहीं —

सावन के अर्धे मीन स्तब्ध कुछ समझ न पात क्या हागा²

राष्ट्रीय कविताओं में भी मुहावरों का प्रयोग हुआ है —

'मुग-मुग सब तो छपा रहा है आम्हीन में
दात उलाडे ही जामेंगे उस विपघर के
सो सुनार व फिर सुनार की आखिरी'³

हास्यरस की कविताओं में तो मुहावरों ने हसी को और अधिक बढ़ा दिया है —

'मा वाप बात करत हो ता चुपक स वान लगाती हे
हो जाय मगाई पक्की तो गाला पर लायी छा जाती हे।'⁴

× × ×

जो भी हे चढान में न मिल जा आठ झिलाने में न मित
वह मजा प्राप्त हो मिल मिल कर बस दास दिखाने में'⁵

इस प्रकार से इन मुहावरों का प्रयोग आज हास्य की कविताओं और राष्ट्रीय कविताओं में तो हा ही रहता है परंतु अन्य प्रकार की कविताओं में इनका प्रयोग कुछ कम हो रहा है।

(ग) शब्द शक्तियाँ व काव्य गुण

काव्य में तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ मिलती हैं और तीन प्रकार के गुण भी —

शक्तियाँ

१) अमिषा

१— डा० मनोहर लाल गौड़	स्वच्छ द काव्य धारा और घनानंद प०	१३१
२— मेघराज मुकुल	उमंग	१८
३—	अनुगू ज	२१
४— भवानी शंकर व्यास	हास्यमेव जयते	६८
५—		६

२) लक्षणा

३) व्यजना

गुण —

१) अोज

२) माधुय

३) प्रसाद

आज की कविता ने भाषा के प्रयोग में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। उसमें अभिव्यक्ति के ऐसे ऐसे अनेक मार्ग खोज निकाले हैं जिनसे पूर्व कवि परिचित नहीं थे। उन मार्गों के अनुसंधान में लक्षणा शब्द शक्ति में भी काफी योगदान दिया है।

द्विचित्र विधान को भी अधिक बल मिला है। ऐसे कुछ लाभणिक प्रयोगों के उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं —

तेरा नफरत से मुसकाना
मुझ में अगारे भरता है ^१

+ + ×

जो तनवार से कटे नहीं
मैं तो वह बहना पानी हूँ। ^२

हास्य का कविताशास्त्र में भी लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है —

'जयपुर अजमेर रोह बसती कितनी के बाधा बीच यश' ^३

व्यजना की क्रिया तो यत्र तत्र बिखरी पड़ी है —

“एक स्वस्थ व सु दर धोडे पर
भासन जमाय
जब एक कुरूप गधे ने

१	आचार्य चंद्रदेव शर्मा	—पण्डित जी गजब हो रहा है	पृष्ठ	५५
२		— , ”	”	१६
३	भवानी गुरु व्यास	—मुझे हसी धाती है	पृष्ठ	६

घोड़े पर चावुक चलायो
तो घोड़ा तिलमिला उठा ।^{११}

अभिधा शब्द शक्ति का तो कही भी अभाव नहीं है। निष्कप रूप में यही कहा जा सकता है कि बीकानेर के काव्य में तीनों ही शब्द शक्तियों का प्रयोग हुआ है।

बीकानेर के काव्य की भाषा में ओज माधुर्य और प्रसाद तीनों गुण हैं। राष्ट्रीय कविताएँ यहाँ बहुत लिखी गई हैं और इन कविताओं में ओज गुण ही है और इसके अतिरिक्त अन्य कविताओं में भी इस गुण को देखा जा सकता है —

‘ मैं वह अगारे फेंकूंगा
मैं वह ज्वाला धधकाऊंगा
जो धधक उठेगी घाय घाय
जिसमें मैं जलन मिटाऊंगा ।^{१२}

“विजय हमारी है” सग्रह की भाषा ओज गुण प्रधान है। वीर रस प्रधान इस सग्रह की कविताओं में भाषा में महाप्राण व्यञ्जनो में मुक्त शब्दावली जिसमें अनुरणारमकता होती है, अधिक मिलती है। ओज के साथ माधुर्य गुण की भी यहाँ कमी नहीं है —

आचल सिकत त्रिवेणी उर पर
अबिकल अश्रुमति है कौन
आप निमज्जित अपने में है
भीगी पलका वाली कौन ।^{१३}

ओज और माधुर्य के साथ प्रसाद गुण सबत्र मिलता है, जो इस काल की सभी कविताओं में फेला हुआ है —

‘ कब स तेरे द्वार खड़ा हू
मैं दर के पट बाद पड़े हैं
बड़ी मोड़ है भक्त पड़े हैं

१— रामदेव आचार्य	अक्षरा का विद्रोह	पृ० ३
२— आचार्य चंद्रदेव शर्मा	—पंडित जो मजबूत हो रहा है	पृष्ठ २०
३ चंद्रमौलि	—विजय-ती	पृष्ठ २६

भर्चा ही स्वीकार दीन की, चरण शरण मे शान पडा ह ।¹

× < +

उपनिषदो की इस भूमि मे धम कम सब पून
संस्कृति भूली यही टाल कर ऊचे ऊचे भूले ।²

इस प्रकार बीकानेर की कविताओं मे कवि ने भाषा के गुण द्वारा भी उस प्रभाव को उत्पन्न करने की चेष्टा की है जो उसके अंतरंग द्वारा उत्पन्न करना कवि का अभीष्ट होता है और उसे उसमे पर्याप्त सफलता भी मिली है ।
बीकानेर काव्य मे छन्द योजना

छन्द और काव्य का प्रादि काल मे ही सम्बन्ध है । प्रादि मानव के कठ मे जब कविता फूटी होगी तो उसका रूप भी छन्दोबद्ध ही होगा । इससे यह तो स्पष्ट है कि छन्द का जन्म बहुत पहले हुआ गया था परन्तु जब हम इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता छन्द शास्त्र के प्रादि प्रवक्तव महर्षि षिगल माने जाते हैं । इसलिये छन्दशास्त्र को षिगल भी कहते हैं । मात्रा, वण विराम, गति लय तथा तुक आदि के अवस्थित सामञ्जस्य को ही छन्द की सना दी जाती है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से छन्दों को दो भेद हैं — ब्रह्मिक और लौकिक । लौकिक छन्द को भी दो भागों में बाटा जाता है — मात्रिक और वणिक । मात्रा के आधार पर रचे गये छन्द मात्रिक और वण के आधार पर रचे हुए छन्द वणिक कहलाता है ।³

अब यह देखना है कि बीकानेर के काव्य मे किम प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है । बीकानेर के काव्य मे मात्रिक छन्द ही मिले गये हैं और वे भी आलोच्यकाल की सभी कविताओं में नहीं मिलते अपितु गम्भूज्याल आचार्य चन्द्रमौलि मेघराज मुकुल भागवत्चन्द रामपुत्रिया आदि कवियों की कविताओं में विदोष रूप से देखे जा सकते हैं । इन कवियों में भी छन्द योजना प्रारम्भिक कविताओं में ही बाद की कविताओं में अभाव है ।

१— आचार्य चन्द्रमौलि	विधिका	पृ० १२
२— गम्भूज्याल सक्मना	नीहारिका	, ८५
३— कलाग वाजपयो	प्राधुनिक हिन्दी कविता में निम्न	, २३

मात्रिक छंदों में ही सबसे अधिक १६ मात्राओं वाले छंदों की रचना हुई है। यह सभी कवियों की कविताओं में है।

पद्मरि छंद

“परिवर्तित गति बहता समीर
विहगावर्ण के स्वर में विलास ।
वेदना-सदन, अस्तित्व हीन,
कण कण में छाया मधुर हास ।”^१

इन्दुकला

“वह मदन भरम से बनी हुई,
वह छवि-मुपमा की छईं मुईं
पड आसमान की चादर के
नीचे सोती ले निश्चलता ।”^२

आचार्य चन्द्रमौलि, की 'वीथिका' और माणिक्यचंद्र, रामपुरिया के 'आभास' में इसी छंद का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी प्रकार 'मधुज्वाल' और 'स्वरासोक' में भी १६ मात्राओं के छंद का प्रयोग हुआ है। १६ मात्राओं के अतिरिक्त अन्य मात्राओं के छंद भी हैं —

राधिका

“यह अयहीन कल्पना स्वप्न-दृष्टा की
मानस में रह व्यभिचार किया करती है ।
बृहत् महल हवा में बनते और बिगड़ते,
विद्वृत जीवन की लाश यहा जलती है ।”^३

सार छंद —

जान कौन भाव स मैंने लीची थी वह रखा
मेरी मधुर कल्पना का किस दिव्य दृष्टि न देखा ।^४

१	आचार्य चन्द्रमौलि	वैजयंती	पृ० १
२	शम्भूदयाल सक्सेना	रैनबसरा	" ५०
३	मेघराज मुकुल	उमंग	" ३६
४	शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	प० ३१

ताटक छ द —

भाई रण को चले, बहिन । तुम रक्षा-व घन लाओ ता ।
हस हस तिलक करा जब जायें गीत विजय व गाओ तो ।
घोर चले जाने पर वन वर देश-सेविका घाओ तो ।
पग-पग पर आहत हो कि तु न तुम घनराओ ता ।^१

उपयुक्त छ दो के अतिरिक्त और छंद भी काव्य मे दखे जा सकते है । पर तु वह केवल प्रारम्भ की कवितामा मे ही है आज की कवितामा म नही ।

इस प्रकार से जहा बीकानेर जिले मे म्वातन्त्र्योत्तर काव्य चेतना आयी उससे काव्य का बहिरंग पक्ष भी अछूता नही रहा है । यहा के कवि ने जहा स्थानीय विषयो का वर्णन किया है वहा पर स्थानीय शब्दो का भी यत्र तत्र प्रयोग किया जिससे विषय की स्थानीयता अधिक प्रभावशाली बन कर पाठक के सम्मुख उपस्थित हुई । इसके साथ ही जहा बीकानेर के काव्य ने कुछ समय तक हिंदी काव्य का अनुकरण किया और आज वह उसके कदम से कदम मिलाकर चल रहा है यही बात यहाँ के कला-पक्ष के बारे मे कही जा सकती है । यहा का कवि केवल भाव-पक्ष की दृष्टि से ही भाँसे बढने म सफल नही हुआ है अपितु उसने कला-पक्ष को भी साथ रखा और उसमे भी नवीनता का प्रयोग कर रहा है ।

== ==

हिंदी साहित्य में बीकानेर काव्य का वैशिष्ट्य और योगदान

हिंदी काव्य के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डालें तो उससे यह स्पष्ट हो जायगा कि हिंदी काव्य में आज तक बहुत सी प्रवृत्तियाँ जन्म ले चुकी हैं। किसी प्रवृत्ति का समय कुछ अधिक रहा है और किसी का कम। आधुनिक युग में ही कविता नई बरबटें बदली है। रीतिकाल की समाप्ति पर जहाँ से आधुनिक काल (म० १९००) प्रारम्भ होता है वहाँ कविता का एक अलग स्वरूप है जिस भारत-दुःकाल की कविता कहा जाता है। उसके बाद कुछ समय तक द्विदो युग की कविता का बोलबाला रहा है और फिर छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का समय रहा है। इस प्रकार आधुनिक काल में स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी काव्य में कई प्रवृत्तियों का जन्म लिया है।

सन् १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ और रियासतों का एकीकरण हुआ तथा इससे घापस में सम्पन्न बढन चगा। देशी राज्यों में वाणी पर लगा हुआ प्रतिबंध भी इसी परत प्रता के साथ चला गया। जो भावनाएँ स्वतंत्रता से पूर्व दबी पड़ी थीं उनको अब अभिव्यक्ति मिलन लगी। बीकानेर में यद्यपि स्वतंत्रता से पूर्व भी कविताएँ लिखी जा रही थी परन्तु स्वतंत्र होते ही यहाँ के लोगों का ध्यान हिंदी के अनुकरण पर साहित्य-सजना की ओर गया और सभी ने अपनी अपनी रचि के विषय में अनुसार कविताएँ लिखनी प्रारम्भ कर दी। यही कारण है कि यहाँ आलाचक्रकाल में सभी प्रवृत्तियों की कविताएँ एक साथ लिखी जान लगी। किसी ने छायावादी ढंग की रचनाएँ प्रारम्भ की, तो किसी ने प्रगतिवादी ढंग की। और इस प्रकार एक साथ ही बहुत सी दबी हुई वाणी को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

साहित्य का वातावरण तो यहाँ पर प्रारम्भ से रहा है चाहे वह संस्कृत साहित्य परक हो और चाहे वह विंगल साहित्य परक हो। स्वतंत्रता से पूर्व

यद्यपि अगर महाविद्यालय उच्च शिक्षा का केन्द्र बना हुआ था, परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् यहाँ पर अनेक साहित्य संस्थाओं की स्थापना हुई और साथ ही पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलनी प्रारम्भ हुईं, जिनमें इस समय में काव्य सजना करने वाले कवियों को प्रोत्साहन मिला और वे पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर जनता के सामने आये। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति से सकेर मात्र तब निम्नतर यहाँ पर काव्य सजना हो रही है और इस आलोच्य काल के प्रारम्भिक दशक में यहाँ के कवियों ने एक साथ हिन्दी के अनुकरण पर जो अनेक वादा की कविताएँ लिखना प्रारम्भ किया तो उसमें बीकानेर के काव्य में एक क्रांति की पूर्ति तो हुई है पर साथ ही उमरे द्वारा हिन्दी के आधुनिक युग की प्रवर्तिका की एक नक्षिण उदरणी भी हुई है। और उससे बाद वह हिन्दी जगत के साथ कदम में कदम मिलाकर चलने लगा है।

भाव वैशिष्ट्य और योगदान

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही काव्य में प्रयोगवाद चल रहा था और बीकानेर में हिन्दी कविता की यह शैली प्रवृत्त थी। इसी समय में यहाँ पर एक साथ कई प्रवर्तिका का प्रचलन हुआ। हिन्दी काव्य के अनुकरण पर ही यहाँ जो छायावादी कविताएँ लिखी गईं वे कविताएँ उम स्वर तक नहीं पहुँच पायीं जिन प्रकार की हिन्दी काव्य में छायावादी कविताएँ अपने समय में लिखी जा चुकी थीं। इसका कारण यह है कि बीकानेर में तो यह हिन्दी कविताओं का प्रारम्भिक काल था और हिन्दी साहित्य में छायावादी कविता उमके विकास की स्थिति की द्योतक है। परन्तु इससे यह अवश्य हुआ कि बीकानेर में हिन्दी कविता का एक ऐसा वातावरण सा बन गया था जिससे अनेक प्रवृत्तियों और कवियों का भी प्रोत्साहन और माग दग्न हुआ। इस समय में अधिकतर कविताएँ प्रकृति चित्रण और राष्ट्रीय भावना का लेकर ही लिखी गई थीं। राष्ट्रीय कविता के रूप में कवियों के जो उद्गार प्रस्फुटित हुए उसमें उनकी राष्ट्रीय भावना भलवती है और प्रकृति चित्रण में स्थानीय रंग का पुट दिखाई दे रहा है। परन्तु इस प्रवृत्ति का प्रचलन अधिक समय नहीं रहा और प्रगतिवादी स्वर अधिक मुखरित होने लगा। इसका यह अर्थ नहीं कि छायावादी स्वर पूर्णतया ही लुप्त हो गया।

समाज में चली आ रही मायताओं परम्पराओं और रूढ़ियों आदि सभी का विरोध करना वास्तव में कठिन काम है। सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि समाज में व्याप्त इन परम्पराओं का विरोध

करने वाले में बहुतों को अपने प्राणा तक से हाथ धोने पड़े हैं। बीकानेर में भी इस प्रकार की पुरानी परम्पराओं धार्मिक अधविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों आदि ने समाज को बुरी तरह से जकड़ रखा था। बीकानेर के कुछ कवियों ने धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक रूढ़ियों आदि के विरुद्ध आवाज उठायी और उन्हें समाप्त करने की घोषणा की। इसका यह अर्थ नहीं कि प्रगतिवादी काव्य में इन सबके विरुद्ध में आवाज लगाई जाती। अपितु यहाँ के कवि की वास्तव में अपने प्राप्त प्राप्त समाज और धर्म में ये सब बातें नजर आ रही थीं और वह विद्रोहात्मक स्वर में इन सभी का नष्ट-भ्रष्ट करन लगा और साथ ही क्रांति का आवाहन भी उसने किया क्योंकि बिना क्रांति के इन सबका नष्ट होना सम्भव नहीं है। इन कवियों ने मूर्ति पूजा का खंडन किया और परधर के भगवान का अस्तित्व ही समाप्त करन की घोषणा की और यह बताया कि मंदिर में बसने वाला ईश्वर साधारण परधर के सिवाय कुछ नहीं है। इन धार्मिक पाखण्डों के विरोध के साथ ही होने शोषका का भी विरोध किया और इनका समाज का सबसे बड़ा शत्रु घोषित किया। इस प्रकार में इन कवियों ने धार्मिक पाखण्डों सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं का धार विरोध किया है और इन सबको नष्ट करने के लिए सामाजिक क्रांति का नारा लगाया। इस प्रकार की कविताएँ लिखने वाले कवियों में अधिकतर वे थे जो स्वतंत्रता से पूर्व ही दबी जवान स कुछ बोलते थे परंतु स्वतंत्रता के उपरान्त ये पूर्ण खुलकर बोले। जब इस प्रकार की कविताएँ बीकानेर में लिखी जा रही थी तो वही समय में नये पीढ़ी के कवियों ने काव्य के क्षेत्र में प्रवेश किया।

जिस प्रकार की अस्पष्ट अभिव्यक्ति, रामानिधत और हल्के फुल्के भाव आदि किसी भी कवि की प्रारम्भिक कविताओं में होना स्वाभाविक है। वही ही दृष्टि बीकानेर की नया पीढ़ी के प्रारम्भिक कविताओं में है। पर नयी पीढ़ी का कवि इस समय पीछे की प्रवृत्त का अनुकरण नहीं करना चाहता था। वह जल्दी से जल्दी हिंदी काव्य के साथ जुलना चाहता था और इसी लालसा से उसने अपनी गति को कुछ तज किया जिसके परिणाम स्वरूप वह आज हिन्दी काव्य के साथ चल रहा है, पीछे नहीं है। इससे यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि आगे आने वाले काल में बीकानेर का कवि हिन्दी काव्य का बहुत कुछ दे सकेगा।

बीकानेर में हास्य की कविताएँ भी लिखी गई हैं। प्रारम्भ में आचार्य चन्द्रदेव शर्मा ने ऐसी ही कविताएँ लिखी, परंतु वहाँ हास्य की अपेक्षा व्यंग्य की

प्रधानता है। आगे चलकर भवानी शंकर व्यास ने शुद्ध हास्य की कविताएँ लिखी हैं और उनका दूसरे संग्रह भी कविताभाषा में यद्यपि कहीं कहीं व्यंग्य भी है, पर हास्य की कमी नहीं है। हास्य रस की इन कविताओं का हिंदी के हास्य रस में विशेष योगदान माना जा सकता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश पर दो बार आक्रमण हो गए और दोना अक्सरों पर ही देश भर में बहुत सी राष्ट्रीय कविताएँ लिखी गई हैं। इन कविताओं में कहीं राष्ट्रीय गौरव की बात है तो कहीं अपनी मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों की गाथा है। कहीं शत्रुओं को ललकारा है तो कहीं उनका दुष्टता का काँसा है। इन दोनों अक्सरों पर बीकानेर में भी इस प्रकार के काव्य की रचना हुई है। ऐसे समय में यहाँ के पिछड़े हुए काव्य ने हिन्दी काव्य के साथ ही कदम बढ़ाने प्रारम्भ कर दिये हैं।

शिल्प वैशिष्ट्य और योगदान

बीकानेर में स्वतंत्रता से पूर्व सम्स्कृत और डिगल में बहुत कुछ लिखा गया है। अतः उनका प्रभाव आलोच्य काल पर पड़ना स्वाभाविक ही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उसी समय में लिखने वाले कविता की भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक हुआ परन्तु कालान्तर में यह बात नहीं पायी जाती और उसके बाद निरन्तर यहाँ के काव्य में तद्भव शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा है। नयी पीढ़ी के कवियों की कविताओं में विदेशी शब्दों का प्रयोग भी बहुत बढ़ रहा है और यह प्रयोग केवल बीकानेर में ही नहीं अपितु आगे की हिन्दी कविता में भी ऐसा ही रहा है। अतः इस प्रभाव से बीकानेर के काव्य का अछूता रहना असम्भव है।

बीकानेर काव्य की भाषा सम्बन्धी एक विशेषता यह है कि बहुत नए कविता ने जब स्थानीय जीवन व प्रकृति का चित्रण किया है तो उसके लिए स्थानीय शब्दावली का प्रयोग आवश्यकतावश किया है क्योंकि कुछ शब्दों के लिए हिन्दी में शब्द ही नहीं। इस प्रकार में इन शब्दों का अधिक प्रयोग होने पर यह वास्तव में हिन्दी शब्दों के शब्द बन जायेंगे और इस दृष्टि से इनका यह योगदान हिन्दी भाषा के लिए प्रासनीय ही माना जायगा। वास्तव में देखा जाय तो भाषा के विकास में इस प्रकार के कवियों का योगदान बहुत होता रहा है। कविता में नुक मिलाते व लिए या फिर जपन छंद की आवश्यकता के कारण उन ही शब्दों का रूप परिवर्तन कर उन्हें कविता में प्रयोग किया है और इस

प्रकार वे धीरे धीरे प्रयाग में आन लगे गये हैं ।

राजस्थानी के 'मादक' 'मबरजाल', 'सदा सुरगा' मरुधरा और 'भू मे वा भूत' आदि ऐसे शब्द हैं जो यहाँ की संस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं और उनके पीछे एक परम्परा है ऐस शब्द आकर हिन्दी की श्री वृद्धि कर रहे हैं । इसी प्रकार और अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है । जिससे एक ओर तो स्थानीय वातावरण की झलक मिलती है और दूसरे नये शब्दों का प्रयोग भी हुआ है । इस प्रकार अनेक नये शब्दों का निर्माण यहाँ पर हुआ है और होता जा रहा है । धीरे धीरे इन शब्दों के प्रयोग करने पर एक दिन ये हिन्दीकोश में अवश्य ही वृद्धि करेंगे ।

बीकानेर जिले में, कविताओं के साथ साथ गीत भी लिखे गये हैं पर कविताओं की अपेक्षा गीत कम लिखे गये हैं । बीकानेर के प्रारम्भिक गीत अवश्य ही छंद में बंध कर आये हैं, परन्तु आगे चल कर इस बंधन को गीतकार तोड़ता हुआ दृष्टिगोचर होता है । आज किसी भी प्रकार से गीत छंद के बंधन में नहीं है । उसमें अपनी एक लय है । यद्यपि यहाँ पर लम्बे गीत भी लिखे जा रहे हैं पर साथ ही गीतों को छोटे छोटे टुकड़ों में तोड़ कर भी गाया जा रहा है । यहाँ क गीत राजस्थानी संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करत हैं, और उसमें सहायता इनमें प्रयुक्त शब्द देते हैं जिससे उनमें स्थानीय रंग आ जाता है ।

बीकानेर के काव्य में उद्बोधनात्मक, वरुणात्मक, प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग रहा है । प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग अब और अधिक बढ़ रहा है । व्यंग्यात्मक शैली यहाँ पर प्रारम्भ में ही रही है । आज भी उसका प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है ।

इस प्रकार से बीकानेर में काव्य का जन्म यद्यपि हिन्दी काव्य जन्म-सं बहुत बाद में हुआ है और उस दृष्टि से जन्म के उपरांत इस काव्य ने हिन्दी काव्य से बहुत कुछ सीखा है और कुछ समय तक उसी के चरणों में ही चलता रहा है परन्तु इसका चलने की गति काफी तेज रहा है और इस प्रकार से जिस रास्ते को पार करने के लिए हिन्दी काव्य जगत को बहुत से बंधनों देने पड़े उसी रास्ते को बीकानेर काव्य ने बहुत ही कम समय में पार कर लिया और उसी तेजी के कारण आज वह हिन्दी काव्य से पीछे नहीं है अपितु साथ साथ चल रहा है ।

आधार पुस्तकें

आचार्य चन्द्रदेव शर्मा	—पंडित जी गजब हो रहा है
आचार्य चन्द्रमौलि	—वीथिका
” ”	—वैजयंती
घोम केशसिया	—छंदनम
स० नन्दकिशोर आचार्य	—संवेदन इति
बल्लभेश दिवाकर	—नई वाली
” ’	—मैं एकाकी नहीं चलूँगा
” ’	—मैं गीत सुनाता जाऊँगा
भरत व्यास	—मस्करा
भवानी शंकर व्यास 'विनोद'	—मुझे हसी आती है
” ” ” ’	—हास्यमेव जयते
मंगल सक्सेना	—मैं तुम्हारा स्वर
माणिक्य द रामपुरिया	—आभास
” ’	—कल्पोल
”	—मधुज्वाल
” ’	—सदीप्ति
” ”	—सवेग
” ’	—स्वराशोक
मालदान देपायत 'मनुज'	—विप्लवगान
मेषराज 'मुकुल'	—उषण
” ”	—अनुगूँ व
रामदेव आचार्य	—अक्षरो का विद्रोह
सहिता द्वारा सम्पादित	—विजय हमारी है !
शम्भूदयाल सक्सेना	—अमरलता
” ”	—उत्सव
” ”	—नीहारिका
” ’	—भिसारिन

धम्मभूमदाल सक्सेना

” ”

” ”

हरीश भादानी

” ”

” ”

” ”

” ”

सम्पा० ज्ञान भारिल्ल प्रेम सक्सेना

—भवन्तर

—रत्न रेणू

—रैन बसेरा

—अधूरे गीत

—एक उजली नजर की सुई

—सपन की गली

—सुनगते पिंड

—हसिनी याद की

—प्रस्तुति

सहायक पुस्तकें

डा० श्रीम प्रकाश

कल्ल टाड

डॉ० करणो सिंह

Caption P W Powlett

डॉ० कुमार विमल

कैलाश बाजपेयी

डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त

गुलाब राय

गौरीशंकर आचाय

गौरीशंकर हीराच द आभा

” ” ,

दिवाकर शर्मा

पण्डित विष्णुदत्त शर्मा

—मुहावरा भीमास

—राजस्थान का इतिहास

—बीकानेर राजधराने का कैट्रिय
सत्ता से सम्बन्ध

Gazetteer of the Bikaner State

—सौ दय शास्त्र के तत्व

—आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प

—साहित्यिक निबन्ध

—काव्य के रूप

—बीकानेर परिचय

—बीकानेर राज्य का इतिहास—
पहला भाग

—बीकानेर राज्य का इतिहास—
दूसरा भाग

संस्कृत साहित्य की बीकानेर क्षेत्र
की देन (अप्रकाशित)

—श्री कपिलायतनतीर्थमहात्म्यम्

१६०
डॉ० मनोहर लाल गौड

महादेवी धर्मा

रामचंद्र शुक्ल

स० श्री सत्यदेव विद्यालंकार

सरोजिनी मिश्रा

डॉ० शकुंतला दुबे

श्यामसुंदर दास

—स्वच्छंद काव्य धारा और
धनानंद

—विवेचनात्मक गद्य

—चिंतामणि -प्रथम भाग

—बोकारनेर का राजनैतिक विकास
और पण्डित मधाराम वैद्य

—साहित्य शास्त्र के सिद्धांत

—काव्य रूपों का मूल स्रोत और
उनका विकास

—साहित्यालोचन साहित्य दपण,
धर्मिण पुराण, काव्यानुशासन

पत्र-पत्रिकाएँ

मतवाला

लोकमत

वातायन

सेनानी

सप्ताहाद्य

—मन् १९५१ से ५५ तक

—सन १९५५ से ६८ तक

—सन् १९६१ से ६६ तक

—सन १९५० से ६८ तक

—सन् १९६८



बनवारी लाल सहू



★ जन्म

श्रावण बदी दूज, स
महाराली (पाकिस्त

★ शिक्षा

डूगर महाविद्यालय
एम० ए० (हिंदी)

★ प्रकाशन

कॉलेज एव अग्य लघु
मे कहानिया एव नि
प्रकाशित

★ सम्प्रति

'राजस्थान का हिन्दू
साहित्य' विषय पर
में सलग्न

★ स्वयंके

द्वारा बोरवल सोनी
ग्राम० पो० पीलीवग
धी गगानगर